समाज शास्त्र

(कक्षा X1)

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबजादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

प्रथम संस्करण: 2015..................... 10,000 प्रतियां

All rights, including those of translation, reproduction
and annotation etc., are reserved by the
Punjab Government.

संयोजक व सम्पादक : **सीमा चावला**
विषय विशेषज्ञा, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

मुख्य समीक्षक : **डॉ. शैरी सब्बरवाल**,
प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़।

हिंदी अनुवादक : **डॉ. ज्योति सिड़ाना, सहायक प्रोफेसर**
जे.डी.बी राजकीय कन्या महा विद्यालय
कोटा (राजस्थान)

सुश्री ज्योति रानी, सहायक प्रोफेसर, राजकीय कन्या महाविद्यालय, सेक्टर 42, चंडीगढ़।

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य पुस्तकों पर जिल्दबन्दी नहीं कर सकता। (एजेंसी होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों के जाली और नकली प्रकाशन (पाठ्य-पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अन्तगर्त गैरकानूनी जुर्म है।

(पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

मूल्य :

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन फेज़-8 साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर 160062
द्वारा प्रकाशित तथा रविन्द्रा पेपर मार्ट, जालंधर द्वारा मुद्रित

प्राक्कथन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, अपनी स्थापना के समय से ही हमेशा स्कूल स्तर पर सभी कक्षाओं के लिए पाठ्यपुस्तक तैयार करने के प्रयास में लगा हुआ है। प्रस्तुत पुस्तक उसी श्रृंखला में से एक है और यह 11 वीं कक्षा के समाजशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए तैयार की गयी है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ) 2005 पर आधारित, पंजाब पाठ्यचर्या की रूपरेखा (पीसीएफ) 2013, की सिफारिश के अनुसार, बच्चों के विद्यालयी जीवन को विद्यालय के बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। प्रस्तुत पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक को इसी सिद्धांत को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है जो विद्यार्थी–केंद्रित प्रणाली को स्थापित करने के लिए 'पुस्तक–आधारित शिक्षण' की परम्परा से 'गतिविधि–आधारित शिक्षण' की ओर बढ़ने का एक कदम है।

सीनियर सेकेंडरी कक्षाओं में समाजशास्त्र को मानविकी संकाय के अंतर्गत एक वैकल्पिक विषय के रूप में लागू किया गया है। यह विषय समाज, संस्कृति, सामाजिक समूहों, समुदाय, परिवार, विवाह, नातेदारी, राजनीति, धर्म, अर्थव्यवस्था और शिक्षा के अध्ययन पर बल देता है ताकि विद्यार्थी अपने सामाजिक यथार्थ को समझने और सामाजिक एवं आर्थिक विकास में योगदान करने में समर्थ हो सके। विषय सामग्री को अधिक प्रासंगिक एवं रोचक बनाने के लिए विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुरूप इसमें चित्रों और अभ्यास कार्य को प्रयुक्त किया गया है। अनुभव आधारित गतिविधियों और बॉक्स में प्रस्तुत क्रियाकलापों को बच्चों को स्वयं के ज्ञान का मूल्यांकन करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए जोड़ा गया है। यह पुस्तक एन.सी.ई.आर.टी., एस.सी.ई.आर.टी., कॉलेज और विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर बाल मनोविज्ञान के महत्वपूर्ण विचारों के साथ ज्ञान को नई दिशा देने का एक प्रयास है।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड इस पुस्तक को तैयार करने में पाठ्यपुस्तक विकास समिति के द्वारा किये गये ईमानदार प्रयासों की सराहना करता है। हम इस पाठ्यपुस्तक में भावी सुधार व संशोधन के लिए टिप्पणियों और सुझावों का स्वागत करते है।

चेयरपरसन
पंजाव स्कूल शिक्षा बोर्ड

पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति

मुख्य समीक्षक : डॉ. शैरी सब्बरवाल, प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़।

सदस्य

डॉ. मंजु भट्ट, प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

डॉ. एम. एस. गिल, प्रोफेसर, समाजशाास्त्र विभाग, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब)।

डॉ. जगदीश मेहता, सह. प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, डीएवी कॉलेज, सेक्टर 10, चंडीगढ़।

डॉ. मनोज कुमार, सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय कन्या महाविद्यालय, सेक्टर 11, चंडीगढ़।

डॉ. बली बहादुर, सहायक प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, गुरू नानक कन्या महाविद्यालय, श्रीमुक्तसर साहिब (पंजाब)।

डॉ. संगीता शर्मा, सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, देश भगत विशवविद्यालय, मंडी गोविंदगढ़ (पंजाब)।

सुश्री सीमा बैनर्जी, पी. जी. टी., लक्ष्मण पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली।

सुश्री ज्योति रानी, सहायक प्रोफेसर, राजकीय कन्या महाविद्यालय, सेक्टर 42, चंडीगढ़।

डिजाइन/चित्र/ग्राफिक्स

श्री वीरेन्द्र कुमार, पी.आर.टी. राजकीय प्राथमिक विद्यालय, मचाकीमल सिंह, फरीदकोट।

श्री कुवंर अरोडा, विजुल मीडिया, सैक्टर 34ए चंड़ीगढ़।

श्री राजेन्द्र पनेसर, बाबा फरीद डिजिटल स्टूडियो, फरीदकोट।

समन्वयक सदस्य

सीमा चावला, विषय विशेषज्ञ, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, साहिबजादा अजीत सिंह नगर।

आमुख

उच्च माध्यमिक स्तर पर समाजशास्त्र को एक वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है। इसका प्रमुख उद्देश्य शिक्षार्थियों में समाजशास्त्र की आधारभूत, मूल अवधारणाओं और प्रकृति की समझ उत्पन्न करना है। हमारा यह मानना है कि समाजशास्त्र के अध्ययन से समाज को और दिन–प्रतिदिन के जीवन को बेहतर ढंग से समझने में शिक्षार्थियों को मदद मिलेगी। वर्तमान पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को मानव व्यवहार की गतिशीलताओं को उसकी सभी जटिलताओं के साथ समझने में समर्थ बनाना है और साथ ही यह विषय उन सवालों के भी जवाब प्रदान करता है जो उस समय उनके मन में उठते हैं जब वे सामाजिक जीवन को समझने का प्रयास कर रहे होते हैं।

उद्देश्य

- समाजशास्त्र की मूलभूत अवधारणाओं से परिचित कराना जो विद्यार्थियों को सामाजिक जीवन का निरीक्षण करने और उसकी व्याख्या करने में सहायता करेंगे।
- कक्षा अध्यापन को समाज के साथ संबंधित करना।
- सामाजिक संरचना और सामाजिक प्रक्रियाओं की जटिलताओं के विषय में जागरूकता पैदा करना।
- समकालीन भारतीय समाज में परिवर्तनों को समझने एवं उनका विश्लेषण करने के लिए छात्रों में क्षमता का निर्माण करना।
- भारतीय समाज में स्थित विविधता को समझना और यहाँ की विविधता पर विश्व स्तरीय परिवर्तनों के प्रभाव को समझना।
- समाज के वंचित वर्गों की समस्याओं को समझना।

इसके अतिरिक्त, सामाजिक संरचना के लिए एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को विकसित करने की आवश्यकता है जो सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में सार्थक सहभागिता को आधार प्रदान करेगा। इस पुस्तक के अध्यायों को शिक्षार्थी–केन्द्रित उपागम को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है जो शिक्षार्थियों को इस योग्य बनाता है कि वे सामाजिक संरचना और सामाजिक प्रक्रियाओं के अवधारणात्मक पक्षों के आधार पर अपने जीवन की वास्तविकता से जुड़ सके हैं। जेंडर, पर्यावरण और सामाजिक समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता को बनाए रखने के लिए भी प्रयास किये गये हैं।

सीमा चावला
विषय विशेषज्ञा

आभार

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड डॉ. शैरी सब्बरवाल, प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, के अमूल्य योगदान को कृतज्ञता से स्वीकार करता है, जिन्होंने पांडुलिपि की समीक्षक/मूल्यांकनकर्त्ता के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की है।

बोर्ड एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक, जिन्होंने पुस्तक के निर्माण में अपने विशेषज्ञों की सेवाएं उपलब्ध करवा कर हमें सहयोग किया, का भी अभारी है।

हम श्रीमान वीरेन्द्र कुमार, प्राथमिक शिक्षक, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, मचाकीमल सिंह, श्री कुवंर अरोडा व श्री राजेन्द्र पनेसर को पुस्तक की ग्राफिक व डिजाइन तैयार करने के लिए धन्यवाद देते हैं।

हम समिति के सदस्यों डॉ. मंजु भट्ट, प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, श्रीमति सीमा बनर्जी, पी. जी. टी., लक्ष्मण पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली, डॉ. मधुरिमा वर्मा, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र पत्राचार विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, डॉ. संगीता शर्मा, सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, देश भगत विश्वविद्यालय, गोविंदगढ, श्रीमती सुनीत कौर, प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, मोहाली, डॉ. रमनदीप कौर, सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र, एम.सी.एम.डी.ए.वी. महाविद्यालय, चंडीगढ़, सुश्री ज्योति रानी, सहायक प्रोफेसर, राजकीय कन्या महाविद्यालय, चंडीगढ़, श्रीमति मनीपाल कौर, सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, एस.जी.जी.एस. महाविद्यालय, चंडीगढ़ तथा श्री मोहन लाल, पूर्व–प्राचार्य, राजकीय विद्यालय, चंडीगढ़, श्रीमति बलजीत कौर, विषय विशेषज्ञ, एवंम श्रीमति मनजीत कौर विषय विशेषज्ञ एस. सी.ई. आर. टी. जिन्होंने पांडुलिपि की समीक्षा करने में सहभागिता की, का दिल से आभार व्यक्त करते हैं।

बोर्ड डॉ. एम. राजीव लोचन, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ और डॉ. ज्योति सेठ, विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय कन्या महाविद्यालय के बहुमूल्य सुझावों के लिए उनका अत्यधिक आभारी है।

पाठ्यक्रम

इकाई1– समाजशास्त्र की उत्पत्ति एवं विकास

1 समाजशास्त्र का उद्भवः ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, अर्थ, समाजशास्त्र की प्रकृति एवं विषय क्षेत्र।

2 समाजशास्त्र एवं अन्य समाज विज्ञानों के मध्य सम्बन्धः राजनीतिक विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान और मानव विज्ञान।

इकाई 2– समाजशास्त्र की मूलभूत अवधारणाएं

3 समाज, समुदाय एवं समितिः समाज– अर्थ एवं विशेषताएं, व्यक्ति एवं समाज के मध्य सम्बन्ध; समुदाय– अर्थ एवं विशेषताएं; समिति– अर्थ एवं विशेषताएं; समाज, समुदाय एवं समिति में भिन्नताएं

4 सामाजिक समूहः अर्थ एवं विशेषताएं; प्रकार–प्राथमिक एवं द्वितीयक समूह; अन्तः समूह एवं बाह्य समूह।

इकाई 3– संस्कृति एवं समाजीकरण

5 संस्कृतिः अर्थ एवं विशेषताएं, भौतिक एवं अभौतिक संस्कृति।

6 समाजीकरणः अर्थ, समाजीकरण सीखने की एक प्रक्रिया के रूप में, समाजीकरण के अभिकरण : औपचारिक एवं अनौपचारिक अभिकरण।

इकाई 4– सामाजिक संस्थाएं

7 विवाह, परिवार एवं नातेदारी।

8 राजनीति, धर्म, अर्थ प्रणाली एवं शिक्षा।

इकाई 5– सामाजिक संरचना, सामाजिक स्तरीकरण एवं सामाजिक परिवर्तन

9 सामाजिक संरचनाः अर्थ, विशेषताएं एवं अवयव– प्रस्थिति एवं भूमिका।

10 सामाजिक स्तरीकरणः अवधारणा, स्वरूप, जाति एवं वर्गः विशेषताएं एवं भिन्नताएं।

11 सामाजिक परिवर्तनः अर्थ, विशेषताएं एवं कारक– जनांकिकीय, शैक्षणिक एवं प्रौद्योगिकीय।

इकाई 6 – समाजशास्त्र के संस्थापक जनक

12 पश्चिमी समाजशास्त्रीय विचारकः अगस्त कोंत– प्रत्यक्षवाद, तीन चरणों का नियम; कार्ल मार्क्स– वर्ग एवं वर्ग संघर्ष; एमिल दुर्खाइम– सामाजिक तथ्य, श्रम–विभाजन; मैक्स वेबर–सामाजिक क्रिया, सत्ता के प्रकार, धर्म का समाजशास्त्र।

विषय सूची

अध्याय संख्या	पाठ का शीर्षक	पृष्ठ संख्या
	इकाई–1	
1	समाजशास्त्र का उद्भव	1
2	समाजशास्त्र एवं अन्य समाज विज्ञानों के मध्य सम्बन्ध	21
	इकाई–2	
3	समाज, समुदाय एवं समिति	39
4	सामाजिक समूह	60
	इकाई–3	
5	संस्कृति	79
6	समाजीकरण	92
	इकाई–4	
7	विवाह, परिवार एवं नातेदारी	113
8	राजनीति, धर्म, अर्थ प्रणाली एवं शिक्षा	138
	इकाई–5	
9	सामाजिक संरचना	169
10	सामाजिक स्तरीकरण	187
11	सामाजिक परिवर्तन	207
	इकाई–6	
12	पश्चिमी समाजशास्त्रीय विचारक	229

इकाई : 1

समाजशास्त्र की उत्पत्ति एवं विकास

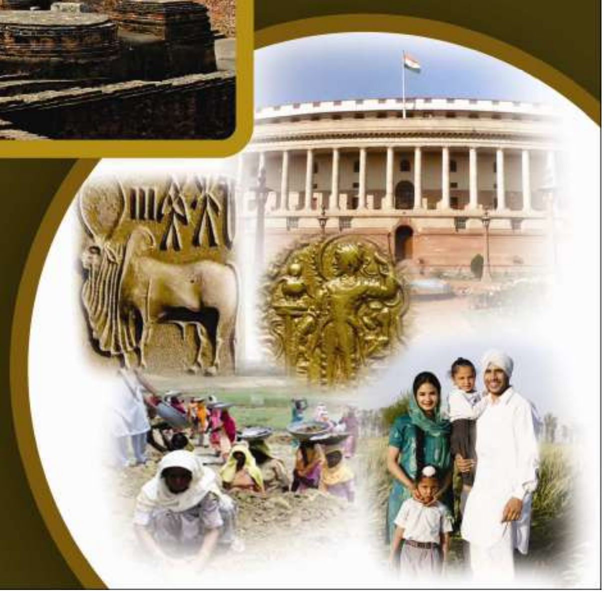

अध्याय 1

समाजशास्त्र का उद्भव

प्रमुख बिंदुः

1.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- 1.1.1 फ्रांस की क्रांति एवं नवजागरण आंदोलन
- 1.1.2 प्राकृतिक विज्ञानों का विकास
- 1.1.3 औद्योगिक क्रांति और नगरीकरण

1.2 समाजशास्त्र की समझ

1.3 समाजशास्त्र की प्रकृति

1.4 समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र
- 1.4.1 विशिष्ट/स्वरूपात्मक सम्प्रदाय
- 1.4.2 समन्वयात्मक सम्प्रदाय

परिचय

एक विषय के रूप में समाजशास्त्र का विकास समाज विज्ञानों के इतिहास मे एक नवीन प्रघटना हैं यद्यपि समाजशास्त्र की उत्पत्ति के विषय में कोई भी सटीक समय नहीं बता सकता। समाज के अध्ययन को महान दार्शनिकों जैसे हेरोडोटस, जिन्हे इतिहास के जनक के रूप में जाना जाता हैं, प्लेटो एवं अरस्तु, जिन्हे राजनीति विज्ञान के संस्थापक जनक के रूप में जाना जाता हैं और उत्तर अफ्रीका के अब्दुल रहमान इब्न–खलदून, जिसने ऐसा साहित्य विकसित किया जो समकालीन समाजशास्त्र के विचारों से मेल खाता हैं, के योगदानों के आधार पर समझा जा सकता हैं। भारतीय संदर्भ में 2000 वर्ष से भी अधिक पहले महान कानून प्रदाता मनु, साथ ही, कौटिल्य तथा अन्य अनेक विद्वानों ने सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों के विषय में लिखा था। यूरोप में बौद्धिक आंदोलनों का उदय जैसे 17 वीं एवं 18 वीं शताब्दी के दौरान उत्पन्न पुर्नजागरण एवं नवजागरण ने सामाजिक प्रघटनाओं के वैज्ञानिक अध्ययन के उद्भव को व्यापक रूप से प्रभावित किया।

समाजशास्त्र की उत्पत्ति देर से हुई और एक विषय के रूप में इसके उद्भव को उन्नीसवीं सदी के मध्य में हुये व्यापक परिवर्तनों के लिए जिम्मेदार माना जा सकता हैं। फ्रांसीसी क्रांति और साथ ही औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप बडी संख्या में लोग अपने घरों को छोड गए तथा नगरों में औद्योगिक स्थानों पर बस गए। इन और इन जैसी अन्य विकास घटनाओं ने एक अनुशासन के रूप में समाजशास्त्र के उद्भव व विकास में सहायता की, जो समाज के समाजशास्त्रीय अध्ययन में संलग्न हैं। इसके अतिरिक्त 18 वीं और 19 वीं सदी के बौद्धिक संकट ने सीखने की एक नई शाखा के रूप में समाजशास्त्र के उद्भव में योगदान किया। अगस्त कोंत, हरबर्ट स्पेंसर, एमिल दुर्खाइम, और मैक्स वेबर जैसे विद्वानों ने सर्वप्रथम सामाजिक व्यवस्था, संघर्ष, स्थिरता और परिवर्तन के पक्षों पर ध्यान केन्द्रित किया और परिणामास्वरूप समाजशास्त्र विषय उभर कर आया।

इस दौरान ऐसे अनेक कारक थे जिन्होने समाज के समग्र परिवर्तन/रूपातंरण में योगदान किया। नीचे तीन प्रमुख प्रक्रियाओं की चर्चा की गयी हैं जिन्होने एक पृथक समाज विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र को तेजी से स्थापित किया।

- फ्रांसीसी क्रांति एवं नवजागरण आंदोलन।
- प्राकृतिक विज्ञानों का विकास
- औद्योगिक क्रांति एवं नगरीयकरण।

फ्रांसीसी क्रांति और नवजागरण आंदोलन

फ्रांसीसी क्रांति

नवजागरण आंदोलन

फ्रांसीसी क्रांति, अपनी तरह का पहला विद्रोह था जो 1789 में हुआ था। इसका समाज पर व्यापक प्रभाव पडा क्योंकि समाज की संरचना परम्परागत से आधुनिक, साथ ही, सामंती से पूंजीवादी संरचना में परिवर्तित हो गयी। यह नवजागरण के साथ जुड गया था जो कि एक बौद्धिक आंदोलन था जिसमें अनेक दार्शनिकों ने योगदान किया। नवजागरण के विचारकों का उद्देश्य चर्च अर्थात धार्मिक संस्थाओं के प्रभुत्व को चुनौती देना था।

उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि चर्च की शिक्षाओं और निर्णयों को आंख बंद करके मानने की बजाऐ अपने दम पर सोचना शुरू करें। अब लोग अपनी समस्याओं को एक तार्किक ढंग से हल करने के लिए तैयार हो चुके थे।

इस प्रकार, नवजागरण युग में समाजशास्त्र के उद्‌भव में चितंन एक महत्वपूर्ण कारक बनकर उभरा। यह महत्वपूर्ण विचारों का स्त्रोत माना जाता हैं और समाज के प्राथमिक मूल्यों के रूप में स्वतंत्रता एवं लोकतंत्र की सुनिश्चितता पर प्रकाश डालता हैं। यह सांमती समाज में सामाजिक भेद को तेजी से कमजोर करने में और शक्ति को चर्च से पृथक करने में सफल रहे।

संक्षेप में, इग्लैंड की औद्योगिक क्रांति और संयुक्त राज्य अमेरिका व फ्रांस की लोकतांत्रिक क्रांतियों ने 18 वीं सदी के उत्तरार्द्ध तथा 19 वीं सदी के प्रारम्भ में समाज की मौजूदा संगठनात्मक संरचना को चुनौती दी।

प्राकृतिक विज्ञानों का विकास

19 वीं सदी में प्राकृतिक विज्ञानों ने बहुत प्रगति की। प्राकृतिक विज्ञानों के क्षेत्र में काम कर रहे लोगो द्वारा प्राप्त सफलता ने बडी संख्या में समाज विचारकों को उनका अनुकरण करने के लिए प्रेरित किया। उनका मानना था कि यदि प्राकृतिक विज्ञान की पद्धतियों से भौतिक विश्व में भौतिक या प्राकृतिक प्रघटनाओं को सफलतापूर्वक समझा जा सकता हैं तो उन्ही पद्धतियों को सामाजिक विश्व की सामाजिक प्रघटनाओं को समझने में भी सफलतापूर्वक प्रयुक्त किया जा सकता हैं। अगस्त कोंत, हरबर्ट स्पेसंर, एमिल दुर्खाइम, मैक्स वेबर जैसे विद्वानों तथा अन्य समाजशास्त्रियों ने समाज का अध्ययन विज्ञान की पद्धतियों से करने का समर्थन किया क्योंकि वे प्राकृतिक वैज्ञानिकों की खोजों से प्रेरित थे और समान तरीके से ही समाज का अध्ययन करना चाहते थे।

औद्योगिक क्रांति और नगरीयकरणः—

18 वीं सदी के दौरान यूरोप में होने वाली औद्योगिक क्रांति ने भी समाजशास्त्र के उद्‌भव को प्रभावित किया जिसने समग्र यूरोप में परिवर्तनों का विस्तार किया। बडे पैमाने पर उत्पादन के साथ कारखाना प्रणाली के आगमन से समाज की परंपरागत व्यवस्था समग्र रूप से परिवर्तित हो गयी। सरल ग्रामीण जीवन और कुटीर उद्योगों का स्थान कारखानों में वस्तुओं के व्यापक उत्पादन ने ले लिया। इसने मध्ययुगीन रीति रिवाजों, मान्यताओं और आदर्शो के मौलिक स्वरूप को परिवर्तित कर दिया तथा समाज को परम्परागत से आधुनिक समाज में बदल दिया।

औद्योगिक क्रांति　　　　नगरीयकरण

इसके अतिरिक्त, औद्योगिकरण ने नगरीयकरण की अगुवाई की। नगरों के विस्तार ने अंतहीन शहरी समस्याओं को उत्पन्न किया जैसे– अधिक भीड़ होना, विभिन्न प्रकार के प्रदूषण जैसे ध्वनि प्रदूषण, यातायात प्रदूषण एवं अन्य। नगरीयकरण के कारण, इन केन्द्रों की तरफ सामूहिक पलायन होने लगे। परिणामस्वरूप लोग अपने परम्परागत ग्रामीण परिवेश से विमुख हो गये तथा नगरीय क्षेत्रों में एवं उसके आस–पास मलिन बस्तियों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई। नगरीय क्षेत्रों में, साथ ही, औद्योगिक समाज में नये वर्ग उभर रहे थे, धनी और अधिक धनी तथा निर्धन और अधिक निर्धन होते जा रहे थे। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और विचारधारायी क्षेत्र में हुई व्यापक उथल–पुथल के कारण अपराधों में अचानक वृद्धि देखी गयी।

अगस्त कोंत, हरबर्ट स्पेंसर, मैक्स वेबर तथा जार्ज सिमेल जैसे विद्वानों ने यह अनुभव किया कि समाज में हो रहे परिवर्तनों से उत्पन्न नई उभरती सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिए, समाज का वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है जिसने समाजशास्त्र के उद्भव को अग्रसर किया।

गतिविधि–1

एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र के विकास में क्लासिकल (शास्त्रीय) विचारकों के योगदान पर एक चार्ट बनायें।

समाजशास्त्र की समझ

समाजशास्त्र शब्द (Sociology) लैटिन शब्द 'Socius'(सोशियस) जिसका अर्थ हैं समाज, तथा ग्रीक शब्द Logos' (लोगोस), जिसका अर्थ हैं अध्ययन, से मिलकर बना हैं। अतः समाजशास्त्र का अर्थ समाज का अध्ययन करना हैं।

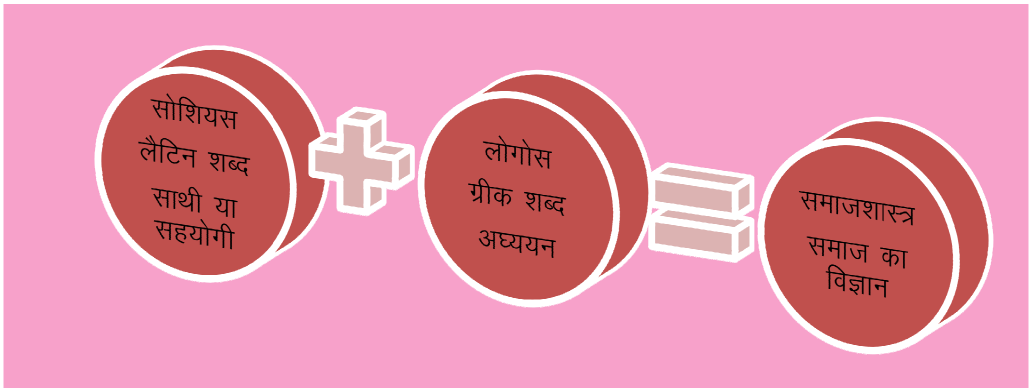

समाजशास्त्र एक आधुनिक सामाजिक विज्ञान हैं। 1839 में जब अगस्त कोंत ने समाजशास्त्र शब्द को प्रयोग किया केवल तभी समाज का एक वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन प्रारम्भ हुआ, उन्होंने इसे मानव समाज तथा सामाजिक व्यवहार के व्यवस्थित अध्ययन के लिए विकसित किया। समाजशास्त्र की विषय वस्तु बहुत व्यापक हैं परन्तु यह मुख्यतः समूह द्वारा निर्मित मानव व्यवहार का अध्ययन करता है जिससे एक व्यक्ति सम्बन्धित होता हैं तथा इन समूहो में सामाजिक अन्तःक्रिया करता हैं। समाजशास्त्र का मुख्य केन्द्र एक व्यक्ति के बजाय समूह होता हैं। समाजशास्त्र लोगो के अन्तःक्रिया स्वरूपों में मुख्य रूप से रूचि रखता हैं, अर्थात् लोग कैसे एक दूसरे के प्रति क्रिया और प्रतिक्रिया करते है और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। अन्य विज्ञान व्यक्तियों के रूप में या व्यक्तियों के सग्रंह के रूप में मानव का अध्ययन करते हैं परन्तु समाजशास्त्र उनकी अन्तःनिर्भरता या उनकी अर्थपूर्ण अन्तःक्रियाओं का अध्ययन करता है।

बॉक्स –1

समाजशास्त्र की परिभाषाएं

'समाजशास्त्र मनुष्य और उसके मानवीय परिवेश के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन हैं।' **–हेनरी फेयरचाइल्ड**

'समाजशास्त्र सामाजिक जीवन का वैज्ञानिक अध्ययन हैं।' **–विलियम एफ आगर्बन एवं मेयर एफ. निमकॉफ**

'समाजशास्त्र सामूहिक व्यवहार का एक विज्ञान हैं।' **–रार्बट ई.पार्क एवं अरनेस्ट डब्ल्यू. बर्गेस**

'समाजशास्त्र समाज या सामाजिक प्रघटना का विज्ञान हैं। **–एल.एफ. वार्ड**

इस प्रकार, समाजशास्त्र को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता हैः–

1. समाजशास्त्र समग्र रूप में समाज का एक विज्ञान है।
2. समाजशास्त्र अन्य समाज विज्ञानों की तरह एक स्वतंत्र विज्ञान है।
3. समाजशास्त्र समूहों एवं सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन है।
4. समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन है।
5. समाजशास्त्र मानव अन्तःक्रियाओं, अन्तःसम्बन्धों तथा अन्तः निर्भरता का अध्ययन है।

एक अनुशासन के रूप में समाजशास्त्र

अन्य समाज विज्ञानों की तुलना में समाजशास्त्र एक नवीन अनुशासन है। यह विषय यूरोप में 18 वीं एवं 19 वीं सदी के दौरान हुये परिवर्तनों के एक परिणाम के रूप में उभरा। वास्तव में, समाजशास्त्र फ्रांसीसी एवं औद्योगिक क्रांतियों के कारण उत्पन्न तीव्र परिवर्तनों से उत्पन्न हुए संकट के परिणामस्वरूप एक विशिष्ट अनुशासन के रूप में उभर कर आया। ज्ञान की एक शाखा के रूप में समाजशास्त्र के विकास के साथ, समाजशास्त्र विषय ने उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में भी स्थान प्राप्त किया है। इसे 1876 में अमेरिका के येल विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में और उसके बाद फ्रांस, पोलैण्ड, मिस्त्र, स्वीडन इत्यादि देशों के विश्वविद्यालयों में सम्मिलित किया गया।

भारत में समाजशास्त्र का विकास

यूरोप और अमेरिका में, 19 वीं सदी के बाद समाजशास्त्र एक विषय के रूप में विकसित हुआ। हांलाकि, भारत में, यह न केवल थोडी देर से उभरा अपितु अध्ययन के एक विषय के रूप में इसे कम महत्व दिया गया। तथापि, स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारत में समाजशास्त्र के महत्व में वृद्धि हुई और देश के लगभग सभी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्थान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त, विभिन्न प्रतियोगी परिक्षाओं के लिए एक विषय के रूप में भी पहचान बनायी। राधा कमल मुखर्जी, जी. एस. धुर्ये, डी. पी. मुखर्जी, डी. एन. मजूमदार, के. एम. कपाडिया, एम. एन. श्रीनिवास, पी. एन. प्रभु, ए. आर. देसाई इत्यादि कुछ महत्वपूर्ण विद्वान हैं जिन्होंने भारतीय समाजशास्त्र के विकास में योगदान किया।

इस प्रकार, भारत में समाजशास्त्र एक उभरता हुआ सामाजिक विज्ञान है, और यह ज्ञान की एक स्वतंत्र शाखा के रूप में दिन–प्रतिदिन आगे बढ़ रहा है।

बॉक्स–2

अगस्त कोंत, एक फ्रांसीसी दार्शनिक, पारम्परिक रूप से 'समाजशास्त्र के जनक' के रूप में जाने जाते हैं। कोंत, जिन्होंने 'समाजशास्त्र' शब्द का प्रयोग किया, ने समाजशास्त्र की विषय–वस्तु को अन्य सभी समाज विज्ञानों से पृथक किया। उन्होंने 'समाजशास्त्र' शब्द को सबसे पहले 1839 में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'पॉजीटिव फिलासॅफी' में प्रस्तुत किया।

समाजशास्त्र की प्रकृति

समाजशास्त्र की प्रकृति के विषय में स्थिति काफी विवादपूर्ण है। यह प्रश्न अक्सर उठाया जाता हैं कि समाजशास्त्र एक विज्ञान हैं या नहीं। कुछ समाजशास्त्री समाजशास्त्र को एक विज्ञान मानने से इन्कार करते हैं, जबकि कुछ अन्य समाजशास्त्र को एक विज्ञान मानते हैं।

समाजशास्त्र को एक विज्ञान मानने के पक्ष में तर्क

जो विद्वान समाजशास्त्र को एक विज्ञान मानते हैं उनका मत हैं कि समाजशास्त्र अपनी विषयवस्तु का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धतियों के माध्यम से करता हैं इसलिए इसे एक विज्ञान कहा जा सकता हैं। इस संदर्भ में प्रमुख तर्क निम्नलिखित हैं:

1. **समाजशास्त्र वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग करता हैं:** समाजशास्त्र वैज्ञानिक पद्धतियों जैसे समाजमिति, साक्षात्कार अनुसूची तथा प्रश्नावली का प्रयोग करता हैं जिनसे सामाजिक प्रघटना का मात्रात्मक मापन किया जाता हैं। इसके अतिरिक्त, समाजशास्त्रीय अध्ययन प्राकृतिक विज्ञानों की भांति वैज्ञानिक अंवेषण के समान चरणों का पालन करते हैं जैसे– अध्ययन की समस्या का निर्माण, तथ्य संकलन, वर्गीकरण तथा तथ्यों का सारणीकरण, उपकल्पना की जांच एवं सामान्यीकरण।

2. **समाजशास्त्र अवलोकन तथा तुलना की विधियों का प्रयोग करता हैं:–** समाजशास्त्र में हमेशा दो मूलभूत विधियों अवलोकन व तुलना का प्रयोग होता हैं। समाजशास्त्र सामाजिक समूहों, उन्हें वर्गीकृत करने तथा सामाजिक संरचना की प्रकृति का विश्लेषण करने से सम्बद्ध हैं। यह सभी समूहों और सभी समाजों में सामान्य रूप से पायी जाने वाली विशिष्ट विशेषताओं से सम्बन्धित हैं। विभिन्न प्रश्नों का उत्तर खोजने के उद्देश्य से समाजशास्त्री अवलोकन एवं तुलनात्मक उपगमों/दृष्टिकोणों को अपनाते हैं।

3. **समाजशास्त्र तथ्यात्मक हैंः** समाजशास्त्री मत पर आधारित ज्ञान के बजाय तथ्य आधारित ज्ञान निर्मित करने का प्रयास करते हैं। वास्तव में, प्रसिद्ध फ्रांसीसी समाजशास्त्री एमिल दुर्खाइम के अनुसार, समाजशास्त्र सामाजिक तथ्यों का अध्ययन हैं।

4. **अनेक भौतिक विज्ञान भी प्रयोग करने में सक्षम नही हैंः** एक विषय तब भी विज्ञान हो सकता हैं जब वह प्रयोगशाला आधारित प्रयोगों की विधि को प्रयुक्त नहीं करता हैं। ऐसे विभिन्न भौतिक विज्ञान हैं जो प्रयोगशाला क्रेन्द्रित प्रयोग नहीं करते हैं। उदाहरण के लिए, खगोल विज्ञान अपनी विषय–वस्तु के साथ प्रयोग नहीं कर सकता, अर्थात् खॅगोलीय पिण्डों को प्रयोगशाला में उपस्थित नहीं किया जा सकता। तथापि, एक विज्ञान के रूप में इसकी उपस्थिति पर कोई विवाद नहीं कर सकता। यही तर्क समाजशास्त्र की विषयवस्तु के पक्ष में अर्थात् मानव के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता हैं। मुख्य बात यह है कि प्रयोग एक वैज्ञानिक विषय का प्राथमिक अवयव नहीं हैं।

5. **समाजशास्त्र सार्वभौमिक नियम तैयार करने में सक्षम हैंः** यद्यपि समाजशास्त्र के निष्कर्ष/परिणाम अक्सर समय व स्थान विशेष तक सीमित रहते हैं क्योंकि सांस्कृतिक कारक एक स्थान से दूसरे स्थान पर अलग–अलग होते हैं परन्तु भौतिक विज्ञानों की भांति, समाजशास्त्र सामान्य नियमों को खोजने का प्रयास करता है जो समय व संस्कृति की विभिन्नता की परवाह किये बिना सभी जगह और सभी समयों पर लागू होते हैं।

क्यों समाजशास्त्र को एक विज्ञान माना जाना चाहिए?
समाजशास्त्र वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करता हैंः पैमाने, समाजमिति, प्रश्नावली, साक्षात्कार अनुसूची, व्यक्ति अध्ययन विधि इत्यादि।
अंवेषण की मूलभूत विधियांः अवलोकन, विश्लेषण, तुलना।
कुछ प्रयोग जो न्यूटन और आर्किमिडीज ने प्राकृतिक एवं भौतिक विज्ञान में किये, खगोल विज्ञान तथा ज्योतिष विज्ञान में प्रयोगशालाओं की आवश्यकता नहीं होती।
समाजशास्त्र नियमों की खोज करता है जो कि समग्र रूप से समाज पर लागू किये जा सकते हैं।
यह कारण–परिणाम सम्बन्धों का अध्ययन करता है, उदाहरण के लिए, नगरीयकरण एवं परिवार का विघटन।
समाजशास्त्र विषय वस्तु का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करता हैं।

6. **समाजशास्त्र में भविष्यवाणी करने की क्षमता हैंः** समाजशास्त्र नियम बनाकर भविष्यवाणी करने का प्रयास करता हैं यद्यपि इसकी भविष्यवाणी हमेशा सही नहीं होती। तथ्य यह है कि कोई भी विज्ञान स्पष्ट या निश्चित भविष्यवाणी का दावा नहीं कर सकता क्योंकि समय बीतने के साथ अन्य विज्ञानों द्वारा स्थापित अनेक सिद्धांतों को संशोधित

किया जाता है। यहां तक कि भौतिक विज्ञानों में कई बार भविष्यवाणी सही नहीं होती। उदाहरण के लिए, मौसम के बारे में की गई भविष्यवाणी सदैव सही नहीं होती और तब भी मौसम की भविष्यवाणी को एक विज्ञान माना जाता हैं।

उपर्युक्त कथन में हम देख सकते हैं कि समाजशास्त्र सामाजिक संगठनों में कारण परिणाम सम्बन्धों का पता लगाता हैं। यह सामाजिक क्रियाओं तथा सम्बन्धों के 'कैसे' और 'क्यों' प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करता हैं। समाजशास्त्र मनुष्य के सामाजिक व्यवहार के विषय में सामान्यीकरण भी प्रस्तुत करता हैं। इस प्रकार, समाजशास्त्र को एक विज्ञान के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

समाजशास्त्र को एक विज्ञान मानने के विपक्ष में तर्क :– अनेक विद्वान यह मानने को तैयार नहीं हैं कि समाजशास्त्र एक विज्ञान है। वे अपने दृष्टिकोण के पक्ष में विभिन्न तर्क प्रस्तुत करते हैं।

1. **समाजशास्त्र में प्रयोग एवं भविष्यवाणी करने की वैज्ञानिक विधियों का अभाव हैं**: समाजशास्त्र की विषय–वस्तु समूहों में मानव सम्बन्ध है जिसका प्रयोगशाला में अध्ययन नहीं किया जा सकता। भौतिक विज्ञानों की विषय वस्तु पर कोई भी प्रयोगशाला में प्रयोग कर सकता हैं। परन्तु समाजशास्त्र में हम प्रयोग करने के लिए किसी प्रयोगशाला को प्रयुक्त नहीं कर सकते। इसी तरह, वैज्ञानिक भविष्यवाणी को वैज्ञानिक पद्धति के एक अनिवार्य तत्व के रूप में नियमित रूप से प्रयुक्त करते हैं, जब वे उपकल्पना का निर्माण करते हैं और क्या होगा के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करते हैं। हांलाकि, समाज में मानव सम्बन्धों के बारे में समुचित/सटीक भविष्यवाणी करना संभव नहीं हैं।

2. **वस्तुनिष्ठता का अभाव** : मनुष्य के अपने पूर्वाग्रह तथा पक्षपात होते हैं इसलिए उनका व्यवहार गतिशील होता हैं तथा एक व्यक्ति पूर्ण रूप से वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकता। अन्य शब्दों में, सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन पूर्ण रूप से पूर्वाग्रहों के बिना नहीं किया जा सकता। अतः एक विषय के रूप में समाजशास्त्र में वस्तुनिष्ठता की विशेषता का अभाव होता हैं।

3. **शुद्धता का अभावः** समाजशास्त्र को एक विज्ञान नहीं माना जा सकता क्योंकि इसमें निश्चितता का अभाव होता हैं, क्योंकि इसके नियमों तथा परिणामों को स्पष्ट शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। विज्ञान की शुद्धता उसकी विषय वस्तु पर निर्भर करती हैं और समाजशास्त्र की विषय वस्तु अर्थात मानव सम्बन्ध समाजशास्त्र को एक शुद्ध विज्ञान बनने में कठिनाई उत्पन्न करते हैं।

4. **निश्चित और स्पष्ट शब्दावली का अभावः** चूंकि समाजशास्त्र एक नवीन समाज विज्ञान हैं, अभी तक वैज्ञानिक अभिव्यक्तियों की एक उचित प्रणाली/विधि विकसित नहीं हो पायी हैं। दूसरे शब्दों में, इसमें स्पष्ट रूप से परिभाषित तकनीकी शब्दों का अभाव हैं।

क्यों समाजशास्त्र को एक विज्ञान माना जा सकता है?
समाजशास्त्र में समुचित तथा स्पष्ट शब्दावाली का अभाव होता हैं।
मानव सम्बन्धों का अध्ययन परखनली या प्रयोगशाला में नही किया जा सकता।
समाजशास्त्र में वस्तुपरकता का अभाव होता है।
समाजशास्त्र एक शुद्ध विज्ञान नहीं है।
मानव व्यवहार के विषय में भविष्यवाणी करना बहुत कठिन हैं।

5. **सामाजिक सम्बन्धों की जटिलता सामान्यीकरण में बाधक होती हैंः** समाजशास्त्र प्राकृतिक विज्ञानों की भांति समान्यीकरण नहीं कर सकता जिन्हें सार्वभौमिक रूप से लागू किया जा सके। इस विचार के समर्थकों का मत है कि सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन भौतिक अर्थ में नहीं किया जा सकता। सामाजिक सम्बन्धों में हम जो कुछ देखते हैं वह केवल हमारे आंतरिक जीवन की बाह्य अभिव्यक्ति हैं। परन्तु एक भौतिक वैज्ञानिक इस प्रकार की जटिल प्रघटनाओं का सामना नहीं करता। समाजशास्त्रियों को बाह्य क्रियाओं को उचित ढंग से समझने के लिए अपने विषयों के आन्तरिक पक्ष को समझना होगा। इसलिए समाजशास्त्र सामान्यीकृत परिणामों, नियमों तथा सिद्धान्तों को उत्पन्न करने में सक्षम नहीं हैं।

6. **सही तथ्य प्राप्त करने में कठिनाईः** भौतिक विज्ञानों में तथ्यों पर आधारित निश्चित सिद्धांत होते हैं। भौतिक विज्ञानों के तथ्य सापेक्षिक रूप से सरल होते हैं तथा प्रयोगशाला में उन पर अन्वेषण तथा कार्यवाही की जा सकती हैं। परन्तु समाजशास्त्र में तथ्य, अक्सर, क्षेत्र–कार्य, दस्तावेजों/प्रलेखों के संग्रह या सांख्यिकी और अन्य माध्यम से प्राप्त किये जाते हैं। समाजशास्त्र में विभिन्न जटिल मुद्दों जैसे लिंग, परिवार, अपराध तथा निर्धनता इत्यादि की व्याख्या करने के लिए उचित तथ्यों का अभाव होता हैं। इसलिये, यदि हमारे पास इन विषयों पर सही तथ्य नहीं होते हैं तो हम गलत निष्कर्ष निकाल सकते हैं।

समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र

विषय–क्षेत्र से अभिप्राय विषय–वस्तु या अध्ययन के क्षेत्र से है। प्रत्येक विज्ञान का अंवेषण का अपना क्षेत्र होता है। एक विज्ञान का व्यवस्थित तरीके से अध्ययन करना कठिन होता है जब तक इसकी सीमा या क्षेत्र स्पष्ट रूप से निर्धारित न हो। एक समाज विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र का अपना क्षेत्र या सीमाएं हैं। हमारा समाज कैसे कार्य करता है, व्यक्तिगत जीवन पर सामाजिक संस्थाओं का प्रभाव तथा व्यक्ति और समाज के मध्य सामाजिक अतःक्रिया की चुनौतियों को समझने के लिए यह विषय साधन उपलब्ध कराता हैं। समाजशास्त्र की विषय–वस्तु व्यक्तियों के बीच अंतःक्रियाओं से निर्धारित होती है, जैसे एक दुकानदार व ग्राहक के बीच, शिक्षकों व विद्यार्थियों के बीच, दो मित्रों व परिवार के सदस्यों के बीच इत्यादि। परन्तु यह देखा जा सकता हैं कि समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र के बारे में समाजशास्त्रियों के मध्य एकमत्यतता/ सहमति नहीं हैं। समाजशास्त्र के पूर्वजों जैसे कोंत, स्पेंसर, दुर्खाइम एवं गिडिंग्स के समय समाजशास्त्रियों ने समाजशास्त्रीय अंवेषण की सीमा एंव क्षेत्र को परिभाषित करने का प्रयास किया है। समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र तथा विषयवस्तु के सम्बन्ध में भिन्न दृष्टिकोणों के साथ दो चिन्तन परम्पराएं हैं अर्थात् स्वरूपात्मक संप्रदाय तथा समन्वयात्मक संप्रदाय।

स्वरूपात्मक संप्रदाय तथा समन्वयात्मक संप्रदाय

प्रथम संप्रदाय यह मानता हैं कि समाजशास्त्र को विशिष्ट रूप से परिभाषित क्षेत्र से सम्बद्ध एक समाज विज्ञान के रूप में ग्रहण करना चाहिए। यह सम्प्रदाय जार्ज सिमेल, फर्डिनेंड टॉनीज, अल्फ्रेड वीरकाण्ट एव लियोपाल्ड वान–वीज के विचारों को सम्मिलित करता है। दूसरी तरफ, समन्वयात्मक संप्रदाय एमिल दुर्खाइम, एल. टी. हॉबहाउस तथा पित्रिम सोरोकिन के विचारो को सम्मिलित करता हैं जो मानते हैं कि समाजशास्त्र सभी समाज विज्ञानों का मिश्रण है तथा अपने विषय क्षेत्र के भीतर सभी समाज विज्ञानों को सम्मिलित करते हैं तथा उन्हें समन्वित करते हैं।

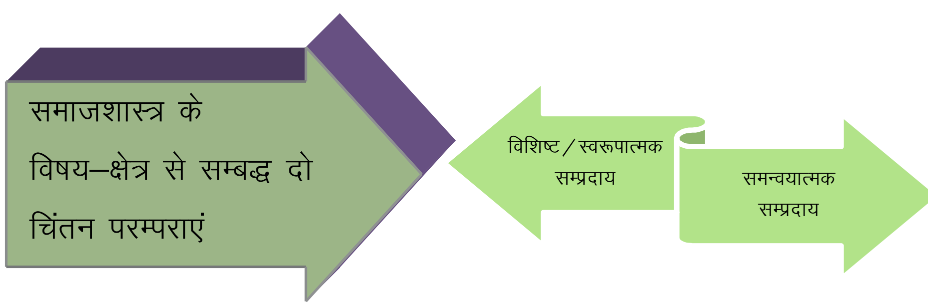

स्वरूपात्मक संप्रदाय

स्वरूपात्मक चिंतन/संप्रदाय का उद्देश्य समाजशास्त्र को एक विशिष्ट विषय बनाने के लिए एक निश्चित विषयवस्तु प्रदान करना हैं। इस चिंतन परम्परा के समर्थको के अनुसार, समाजशास्त्र समग्र रूप से सामाजिक जीवन का अध्ययन नहीं कर सकता क्योंकि इसका विषय क्षेत्र सीमित हैं। इस बौद्धिक परम्परा के समाजशास्त्री समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र को अन्य समाज विज्ञानों से पृथक रखना चाहते थे। वे समाजशास्त्र को एक शुद्ध तथा स्वतंत्र विज्ञान मानते हैं।

समाजशास्त्र का स्वरूपात्मक सम्प्रदाय 'सामाजिक संबंधों के स्वरूपों' से संम्बन्धित हैं। अन्य विज्ञानों के साथ समाजशास्त्र के सम्बन्ध को रेखागणित एवं भौतिक विज्ञान के बीच सम्बन्धों के समान देखा जाता हैं। उदाहरण के लिए, रेखागणित वस्तुओं के विशिष्ट स्वरूपों व सम्बन्धों का अध्ययन करता हैं उसकी अंतर्वस्तु का नहीं। इसी तरह, समाजशास्त्र समाज की सभी गतिविधियों का अध्ययन नहीं करता। इसलिए, समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र सामाजिक सम्बन्धों, व्यवहारों तथा गतिविधियों/क्रियाकलापों के विशिष्ट स्वरूपों का अध्ययन हैं।

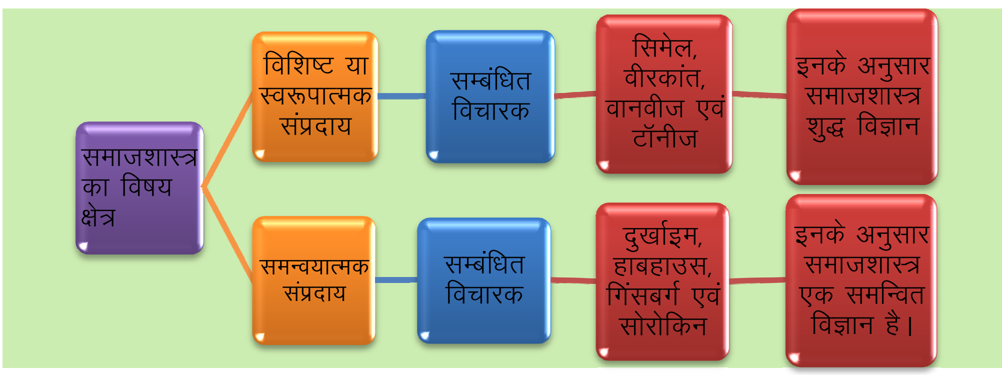

- **जार्ज सिमेल** के अनुसार समाजशास्त्र एक विशिष्ट समाज विज्ञान है जो सामाजिक सम्बंधों के स्वरूपों का विवेचन, वर्गीकरण तथा विश्लेषण करता है।

- **फर्डिनेंड टॉनीज** ने समाज को उसके सदस्यों की घनिष्ठता की मात्रा के आधार पर दो श्रेणियों में बांटा है अर्थात् गैमिनशफ्ट (समुदाय) तथा गैसेलशैफ्ट (समिति)। सम्बन्धों के स्वरूपों के आधार पर उन्होंने समुदाय तथा समाज के मध्य अन्तर करने का प्रयास किया।

- **मैक्स वेबर** भी प्रघटना के विशिष्ट स्वरूप को स्पष्ट करते हैं जिसका समाजशास्त्र को अध्ययन करना चाहिए। उनके अनुसार, समाजशास्त्र एक विज्ञान है जो सामाजिक क्रिया की विवेचना करने या समझने का प्रयास करता है।

सामाजिक क्रिया में मानव सम्बन्धों के समग्र क्षेत्र को सम्मिलित नहीं किया जाता। वास्तव में, सभी मानव अन्तःक्रियाएं सामाजिक नहीं होती।

गतिविधि – 2	**जार्ज सिमेल,** मैक्स वेबर, सोरोकिन, एमिल दुर्खाइम जैसे विचारकों के बारे में खोजिए कि वे किस चिंतन परम्परा से संम्बन्धित हैं तथा उनके योगदान क्या हैं ?

समन्वयात्मक सम्प्रदाय

समन्वयात्मक सम्प्रदाय में, समाजशास्त्र को समाज विज्ञानों के एक समन्वय या एक सामान्य विज्ञान के रूप में देखा जाता है तथा अन्य सभी समाज विज्ञानों को इसके विषय क्षेत्र में सम्मिलित किया जाता है। यह सम्प्रदाय दावा करता हैं कि सामाजिक जीवन के सभी पक्ष अन्तःसम्बन्धित होते हैं। इसलिए सामाजिक जीवन के एक पक्ष का अध्ययन सम्पूर्ण यथार्थ को समझने के लिए पर्याप्त नहीं होता। इस उद्देश्य के लिए समाजशास्त्र सम्पूर्ण सामाजिक जीवन का व्यवस्थित ढंग से अध्ययन करता हैं। सभी समाज विज्ञानों की विषय वस्तु समान हैं परन्तु उनके दृष्टिकोणों में भिन्नता होती हैं। सभी समाज विज्ञानों की विषयवस्तु समाज है परन्तु वे अपने–अपने परिप्रेक्ष्यों/दृष्टिकोणों से इसका अध्ययन करते हैं। हांलाकि, समाजशास्त्र सामाजिक जीवन के सभी पक्षों को सम्मिलित करते हुए, समग्र रूप से सामाजिक जीवन का अध्ययन करता है।

एल. टी. हाबॅहाउस समाजशास्त्र को एक विज्ञान के रूप में स्वीकार करते हैं जिसमें मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन को इसके अध्ययन क्षेत्र के रूप में सम्मिलित किया जाता है। अन्य समाज विज्ञानों के साथ इसके सम्बन्ध को पारस्परिक विनिमय तथा पारस्परिक प्रेरक का एक स्वरूप माना जाता हैं। उदाहरण के लिए, यदि हम परिवार के विघटन के कारणों का अध्ययन व विश्लेषण करना चाहते हैं, तो हमे अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान एवं अन्य समाज विज्ञानों की सहायता भी लेनी होगी। इस तरह से समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र अन्य सभी समाज विज्ञानों की विषय–वस्तु को भी सम्मिलित करता है। अतः एक चिंतन सम्प्रदाय (स्वरूपात्मक) समाजशास्त्र को अन्य समाज विज्ञानों से पृथक मानता है जबकि दूसरा सम्प्रदाय (समन्वयात्मक) इसे सभी समाज विज्ञानों का समन्वय मानता हैं।

समाजशास्त्र का महत्व

समाजशास्त्र के अध्ययन का व्यापक महत्व है। इसके कुछ उपयोग निम्न प्रकार से हैं:

- समाजशास्त्र का अध्ययन समाज के वैज्ञानिक अध्ययन को संभव बनाता है।

- समाजशास्त्र समाज में संस्थाओं की भूमिका का अध्ययन करता है, उदाहरण के लिए, परिवार, विद्यालय एवं शिक्षा, चर्च एवं धर्म, राज्य एवं सरकार, उद्योग एवं कार्य, समुदाय एवं समिति। यह एक व्यक्ति के विकास में संस्थाओं की भूमिका का अध्ययन करता है।
- समाजशास्त्र का अध्ययन समाज के नियोजन के लिए उपयोगी है क्योंकि इसके माध्यम से समाज की संरचना का पर्याप्त व उचित ज्ञान प्राप्त करके समाज में सुधार करना संभव हैं।
- समाजशास्त्र सामाजिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है क्योंकि यह सामाजिक बुराईयों के कारणों का अध्ययन करता है।
- समाजशास्त्र हमारी अभिवृत्ति को परिवर्तित करने में सहायता करता है। उदाहरण के लिए, समाजशास्त्र ने अपराध तथा अपराधियों जैसे विषयों पर हमारे दृष्टिकोण को परिवर्तित किया है।
- समाजशास्त्र विभिन्न संस्कृतियों को समझने में व्यक्तियों की सहायता करता है।
- यह समाजकल्याण के कार्यक्रमों की योजना बनाने में निर्देश प्रदान करता हैं।

निष्कर्ष

अतः समाजशास्त्र एक समाज विज्ञान हैं जो मानवीय समाजों, उनकी अन्तःक्रियाओं और प्रक्रियाओं जो उन्हें निरन्तरता देती है एवं रूपांतरित करती हैं, का अध्ययन करता है। यह विषय 18 वीं एवं 19 वीं सदी के नवजागरण के दर्शन के साथ उभरा तथा फ्रांसीसी क्रांति, प्राकृतिक विज्ञानों का विकास औद्योगिक क्रांति एवं नगरीयकरण जैसे कारकों ने इसके विकास में योगदान दिया। आज यह युवा विज्ञान न केवल मानव समाज का बल्कि इसकी सभी जटिलताओं के साथ व्यवस्थित व वैज्ञानिक अध्ययन करने का प्रयास करता है, अपितु सामाजिक नियोजन, पुनः निर्माण तथा सुधार का एक स्त्रोत भी है।

बॉक्स – 3

समाजशास्त्र आजीविका के रूप में

- गैर सरकारी संगठनों, अंतराष्ट्रीय गैर–सरकारी संगठनों तथा संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न कार्यक्रमों/ विभागों में जीविका के अवसरों की उच्च संभावनाए।
- माध्यमिक, स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तरों पर शिक्षण कार्य का अवसर।
- पंजाब में गैर सरकारी संगठनों की बढती संस्कृति के साथ, इन संगठनों के माध्यम से अनुसंधान गतिविधियों में व्यापक अवसर उभर रहे हैं।
- पंजाब सरकार के समाज कल्याण तथा बाल कल्याण कार्यालयों में रोजगार के अवसर।
- सरकारी तथा निजी अस्पतालों में रोगियों को सामाजिक–मनोवैज्ञानिक परामर्श प्रदान करने के लिए परामर्शदाता के रूप में रोजगार के अवसर।
- उद्यमी बनने का श्रेष्ठ मार्ग।
- विभिन्न सरकारी विभागों में रोजगार के अवसर।

शब्दावली

पूंजीवादः बाजार विनिमय पर आधारित आर्थिक उद्यम की एक प्रणाली हैं। 'पूंजी' से अभिप्राय किसी वस्तु जैसे धन, सम्पत्ति और मशीनों से हैं, जिसका प्रयोग, लाभ की उम्मीद से वस्तुओं की बिक्री हेतु उत्पादन या बाजार में निवेश हेतु किया जाता है। यह प्रणाली परिसंपत्तियों तथा उत्पादन के साधनों के निजी स्वामित्व पर टिकी हैं।

नवजागरणः नवजागरण का युग 17 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यूरोप में प्रारम्भ हुए बुद्धिजीवियों का एक सांस्कृतिक आंदोलन था जिसने परम्परा के स्थान पर तर्क एवं व्यक्तिवाद पर बल दिया। इसका उद्देश्य तर्क का प्रयोग करके समाज में सुधार करना, परम्परा एवं विश्वास पर आधारित विचारों को चुनौती देना तथा वैज्ञानिक पद्धति के माध्यम से ज्ञान का विस्तार करना था। इससे वैज्ञानिक चिंतन तथा बौद्धिक आदान प्रदान को बढावा मिला।

औद्योगीकरणः सामाजिक आर्थिक परिवर्तन का युग जो एक मानव समूह को एक कृषक समाज से एक औद्योगिक समाज में बदल देता है।

व्यक्तिवादः नैतिक उद्देश्य, राजनीतिक दर्शन, विचाराधारा या सामाजिक दृष्टिकोण जो व्यक्ति के नैतिक मूल्य पर बल देते हैं। व्यक्तिवादी अपने लक्ष्यों, इच्छाओं, स्वतंत्रता और आत्म–निर्भरता के मूल्य को बढावा देते हैं।

नगरीयकरणः का अभिप्राय ऐसे लोगो की संख्या में वृद्धि से है जो नगरीय क्षेत्रों में रहते हैं। यह मुख्य रूप से नगरीय क्षेत्रों की भौतिक वृद्धि का परिणाम हैं।

मूल्यः व्यक्तियों या मानव समूहो द्वारा ग्रहण किये गये विचार कि क्या वाछंनीय हैं, क्या उचित है, क्या अच्छा या बुरा हैं।

प्रश्न–अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 1–15 शब्दों में दीजिएः

1. 'समाजशास्त्र का जनक' किसे माना जाता है ?
2 एक पृथक समाज विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र की स्थापना हेतु उत्तरदायी दो महत्वपूर्ण कारको के नाम बताइये।
3 किन दो शब्दों से 'समाजशास्त्र' की अवधारणा बनी तथा किस वर्ष समाजशास्त्र विषय का उद्‌भव हुआ ?
4 समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र के सम्बन्ध में दो सम्प्रदायो के नाम बताइये ?
5 औद्योगीकरण किसे कहते हैं ?
6 ऐसे दो विद्वानों के नाम बताइये जिन्होंने भारत में समाजशास्त्र के विकास में योगदान दिया।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 30–35 शब्दों में दीजिएः–

1. समाजशास्त्र का क्या अर्थ है ?
2 औद्योगिक क्रांति द्वारा उत्पन्न दो महत्वपूर्ण परिवर्तन बताइये।
3 प्रत्यक्षवाद किसे कहते हैं ?
4 वैज्ञानिक पद्धति किसे कहते हैं ?
5 वस्तुनिष्ठता को परिभाषित कीजिए ?
6 समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र एवं विषयवस्तु की चर्चा कीजिए।
7 समाजशास्त्री अपनी विषय वस्तु का अध्ययन करने के लिए किस प्रकार की वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग करते हैं ?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 75–85 शब्दों में दीजिए:

1. स्वरूपात्मक चिन्तन सम्प्रदाय किस प्रकार समन्वयात्मक चिन्तन सम्प्रदाय से भिन्न है ?
2. समाजशास्त्र के महत्व पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए।
3. किस प्रकार फ्रांसीसी क्रांति का समाज पर एक व्यापक प्रभाव पडा ?
4. किस प्रकार औद्योगिक क्रांति का समाज पर एक व्यापक प्रभाव पडा ?
5. समाजशास्त्र अपनी विषयवस्तु में वैज्ञानिक पद्वति का प्रयोग करता है। विवेचना कीजिए ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 250–300 शब्दों में दीजिए:–

1. समाजशास्त्र से आपका क्या अभिप्राय हैं ? समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र पर प्रकाश डालिए।
2. समाजशास्त्र से आप क्या समझते हैं ? समाजशास्त्र की प्रकृति की चर्चा करे ?
3. समाजशास्त्र के उद्‌भव के लिए कौन से कारक उत्तरदायी थे ?
4. समाजशास्त्र की उत्पत्ति तथा विकास का अध्ययन क्यों महत्वपूर्ण हैं ?
5. समाजशास्त्र में नवजागरण युग पर एक टिप्पणी लिखिये।

अध्याय 2

समाजशास्त्र का अन्य समाज विज्ञानों से संबंध

प्रमुख बिंदुः—

2.1 राजनीति विज्ञान

2.2 इतिहास

2.3 अर्थशास्त्र

2.4 मनोविज्ञान

2.5 मानव विज्ञान

परिचय

एक व्यक्ति के जीवन में अनेक पक्ष होते हैं। जैसे आर्थिक पक्ष, कानूनी पक्ष, धार्मिक पक्ष, राजनीतिक पक्ष और अन्य। परिणामस्वरूप, सामाजिक जीवन को सम्पूर्ण रूप से जानने के लिए समाजशास्त्र को अन्य समाज विज्ञानों की सहायता की आवश्यकता होती हैं, जो समाज के विशिष्ट पक्षों पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास करते हैं। अन्य समाज विज्ञान जो मानव समाज के विशिष्ट पक्षों पर बल देते हैं, की सहायता से समाजशास्त्र सामाजिक जीवन को बेहतर ढंग से समझ सकता है। इसलिए समाजशास्त्र ही अन्य समाज विज्ञानों पर निर्भर नहीं करता अपितु अन्य समाज विज्ञान भी समाजशास्त्र पर निर्भर करते हैं।

समाजशास्त्र और अनेक समाज विज्ञानों में बहुत समानता हैं इसलिये समाज को समझने के लिए अन्तःवैषयिक दृष्टिकोण अपनाने की बात की जाती है जिससे प्रत्येक समाज विज्ञान को लाभ होगा। निम्न चित्रों की सहायता से समाजशास्त्र तथा कुछ समाज विज्ञानों के मध्य की अन्तःनिर्भरता तथा अन्तर की व्याख्या को समझा जा सकता है।

समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान

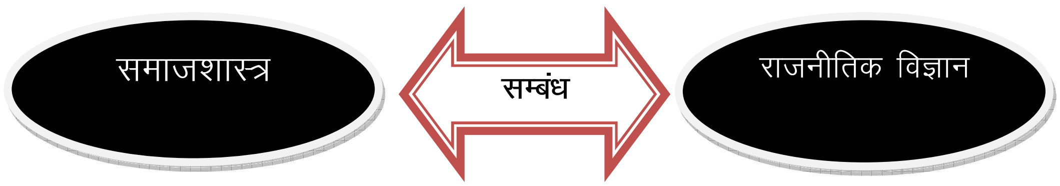

समाजशास्त्र व राजनीति विज्ञान के मध्य घनिष्ठ सम्बंध हैं। समाजशास्त्र समाज का एक विज्ञान हैं। यह मानव अन्तःक्रिया और अन्तःसम्बन्धों, उनकी स्थितियों/दशाओं, कारणों तथा परिणामों का अध्ययन करता हैं। राजनीति विज्ञान, दूसरी तरफ राज्य और सरकार का एक विज्ञान हैं। यह राज्य की संप्रभु सत्ता के अन्तर्गत/अधीन संगठित सामाजिक समूहों से संबंधित हैं। विशेष रूप से, यह शक्ति, राजनीतिक प्रक्रियाओं, राजनीतिक प्रणालियों, सरकार के प्रकारों तथा अंतराष्ट्रीय संबंधों पर बल देता हैं।

मॉरिस गिंसबर्ग के अनुसार, ऐतिहासिक रूप से समाजशास्त्र की जड़ें राजनीति तथा इतिहास के दर्शन में हैं। इस कारण से समाजशास्त्र राजनीति विज्ञान पर निर्भर करता है। प्रत्येक सामाजिक समस्या का एक राजनीतिक कारण हैं। राजनीतिक व्यवस्था या शक्ति संरचना की प्रकृति में किसी भी प्रकार का परिवर्तन समाज में भी परिवर्तन लाता हैं। विभिन्न राजनीतिक घटनाओं को समझने के लिए समाजशास्त्र राजनीति विज्ञान से मदद लेता है। इसी तरह, राजनीति विज्ञान भी समाजशास्त्र पर निर्भर करता है। राज्य अपने नियमों, अधिनियमों और कानूनों का निर्माण सामाजिक प्रथाओं, परम्पराओं तथा मूल्यों के आधार पर करता है। अतः बिना समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि के राजनीति विज्ञान का अध्ययन अधूरा होगा। लगभग सभी राजनीतिक समस्याओं की उत्पत्ति सामाजिक है तथा इन राजनीतिक समस्याओं के समाधान के लिए राजनीति विज्ञान समाजशास्त्र की सहायता लेता है।

इसके अतिरिक्त, कुछ सामान्य विषय हैं जिनका अध्ययन दोनों विषयों में किया जाता है, जैसे– युद्ध, प्रचार, सत्ता, साम्प्रदायिक दंगे, कानून इत्यादि। दोनो विषय एक साथ मिलकर एक नवीन अध्ययन विषय 'राजनीतिक समाजशास्त्र' को उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार, राजनीतिक विज्ञान तथा समाजशास्त्र दोनो एक दूसरे पर निर्भर करते हैं।

हालांकि, अपने अन्तःसम्बन्धों और अन्तःनिर्भरता के बावजूद, दोनों विज्ञान निम्न आधारों पर एक दूसरे से भिन्न हैं:–

अन्तर

समाजशास्त्र	राजनीति विज्ञान
➢ समाजशास्त्र समाज एवं सामाजिक संबंधों का एक विज्ञान है।	➢ राजनीति विज्ञान राज्य एवं सरकार का एक विज्ञान है।
➢ समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र बहुत व्यापक है।	➢ राजनीति विज्ञान का विषय क्षेत्र सीमित है।
➢ समाजशास्त्र एक सामान्य विज्ञान है।	➢ राजनीति विज्ञान एक विशिष्ट विज्ञान है।
➢ समाजशास्त्र संगठित, असंगठित और अव्यवस्थित समाज का अध्ययन करता है।	➢ राजनीति विज्ञान केवल राजनीतिक रूप से संगठित समाज का अध्ययन करता है।
➢ समाजशास्त्र मनुष्यों की सामाजिक	➢ राजनीति विज्ञान मनुष्यों की

गतिविधियों का अध्ययन करता है।	राजनीतिक गतिविधियों का अध्ययन करता है।
➢ समाजशास्त्र एक नवीन विज्ञान है।	➢ राजनीति विज्ञान एक प्राचीन विज्ञान है।
➢ समाजशास्त्र सामाजिक प्राणी के रूप में मनुष्य का अध्ययन करता है।	➢ राजनीति विज्ञान राजनीति प्राणी के रूप में मनुष्यों का अध्ययन करता है।
➢ समाजशास्त्र औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनो प्रकार के संबंधों का अध्ययन करता है।	➢ राजनीति विज्ञान केवल औपचारिक सम्बंधों का अध्ययन करता है।
➢ समाजशास्त्र व्यक्तियों की चेतन एवं अचेतन दोनो गतिविधियों का विश्लेषण करता है।	➢ राजनीति विज्ञान व्यक्तियों की केवल चेतन गतिविधियों का विश्लेषण करता है।
➢ समाजशास्त्र सभी प्रकार की समितियों से सम्बद्ध है।	➢ राजनीति विज्ञान केवल एक समिति अर्थात राज्य से सम्बन्धित है।

समाजशास्त्र एवं इतिहास

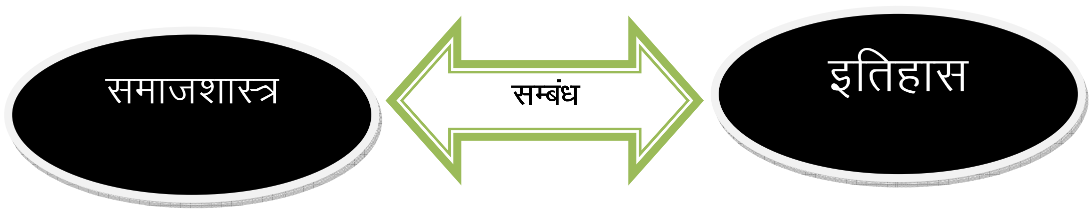

इतिहास ज्ञान की वह शाखा है जो अतीत की घटनाओं के साथ सम्बंधित है। यह तिथियों, स्थानों, घटनाओं और संघर्षों का अध्ययन है। यह मुख्य रूप से अतीत की घटनाओं से सम्बद्ध है तथा यह जानने का प्रयास करता है कि वे किस प्रकार से समग्र समाज को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, 1947 में भारत के विभाजन के दौरान, लोग कैसे अन्तःक्रिया करते थे, कैसे संस्कृति प्रभावित हुयी इत्यादि। यही कारण है कि यह कहा जाता है कि इतिहास अतीत का सूक्ष्मदर्शी, वर्तमान की जन्मपत्री तथा भविष्य की दूरबीन है।

दूसरी तरफ, समाजशास्त्र सामाजिक क्रिया की प्रणालियों और उनके अन्तःसम्बन्धों का अध्ययन है। यह सामाजिक समूहों और सामाजिक संस्थाओं का एक विज्ञान है। यह केवल अतीत का ही नहीं अपितु वर्तमान और भविष्य के सम्बन्धों का भी अध्ययन करता है।

दोनो विषयों में घनिष्ठ सम्बन्ध हैं तथा एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। दोनो एक ही मानव समाज का अध्ययन करते हैं। इतिहास समाजशास्त्र की सहायता करता है व उसका विस्तार करता है। इतिहास ज्ञान का भण्डार है जिससे समाजशास्त्र ने बहुत कुछ प्राप्त किया है। यह समाजशास्त्रियों को प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री प्रदान करता है। इतिहास अतीत की सामाजिक घटनाओं, सामाजिक प्रथाओं तथा जीवन के विभिन्न चरणों के विषय से सम्बन्धित सूचनाओं का एक रिकार्ड/लिखित प्रमाण है। समाजशास्त्र इस जानकारी का उपयोग करता है। इसी तरह, समाजशास्त्र इतिहास की सहायता करता है और इसे समृद्ध बनाता हैं। इतिहासकार समाजशास्त्रियों द्वारा किये गये शोध कार्यों से अत्यधिक लाभान्वित हुए हैं। समाजशास्त्र इतिहास के अध्ययन हेतु आधार प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, अब इतिहासकार समाजशास्त्रीय तथ्यों का प्रयोग करते हुए जाति, वर्ग और परिवार का अध्ययन करते हैं।

अतः अब इतिहास का समाजशास्त्रीय नजरिये से अध्ययन किया जा रहा है। प्रत्येक ऐतिहासिक घटना का एक सामाजिक कारण या सामाजिक आधार रहा है। किसी ऐतिहासिक घटना को समझने के लिए इतिहास को समाजशास्त्र की सहायता की आवश्यकता होती है। इतिहासकार समाजशास्त्र द्वारा उपलब्ध करवाये गये तथ्यों पर विश्वास करते हैं। इसलिए, इतिहास और समाजशास्त्र परस्पर निर्भर हैं। समाजशास्त्र व इतिहास के मध्य के सम्बन्ध को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता हैः

- समाजशास्त्र वर्तमान समय में अध्ययनों का संचालन करने के लिए इतिहास की सहायता लेता है।
- संस्कृति, परम्परा, सामाजिक आंदोलन, सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक संस्थाओं जैसे– परिवार, विवाह, धर्म इत्यादि के पूर्व के स्वरूप का अध्ययन उनकी वर्तमान स्थितियों को समझने में हमारी मदद करता है।

- समाजशास्त्रीय शोध/ अनुसंधान में, ऐतिहासिक पद्धति काफी प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है।
- इतिहास केवल ऐतिहासिक घटनाओं तक ही सीमित नही है अपितु वर्तमान घटनाओं को भी प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। इसी तरह, समाजशास्त्र ऐतिहासिक घटनाओं का अध्ययन करता है।

समाजशास्त्र तथा इतिहास के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध होने के बावजूद, दोनो समाज विज्ञानो में कुछ अन्तर भी हैं।

अन्तर

समाजशास्त्र	इतिहास
➢ समाजशास्त्र समाज का एक विज्ञान है और इसका वर्तमान समाज से सम्बन्ध हैं। ➢ समाजशास्त्र एक आधुनिक या नवीन विषय हैं। ➢ समाजशास्त्र अमूर्त हैं। ➢ समाजशास्त्र का विषय–क्षेत्र व्यापक हैं। ➢ समाजशास्त्र एक विश्लेषणवादी विज्ञान हैं। ➢ समाजशास्त्र सामाजिक घटना के रूप में एक विशिष्ट प्रघटना का अध्ययन करता हैं। ➢ समाजशास्त्र एक सामान्य विज्ञान हैं।	➢ इतिहास अतीत की घटनाओं से सम्बन्धित है और अतीत के समाज का अध्ययन करता हैं। ➢ इतिहास एक प्राचीन समाज विज्ञान हैं। ➢ इतिहास की प्रकृति मूर्त हैं। ➢ इतिहास का विषय–क्षेत्र सीमित हैं। ➢ इतिहास एक विवेचनात्मक विज्ञान हैं। ➢ इतिहास एक विशिष्ट घटना का उसकी सम्पूर्णता के साथ अध्ययन करता हैं। ➢ इतिहास एक विशिष्ट विज्ञान हैं।

समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र

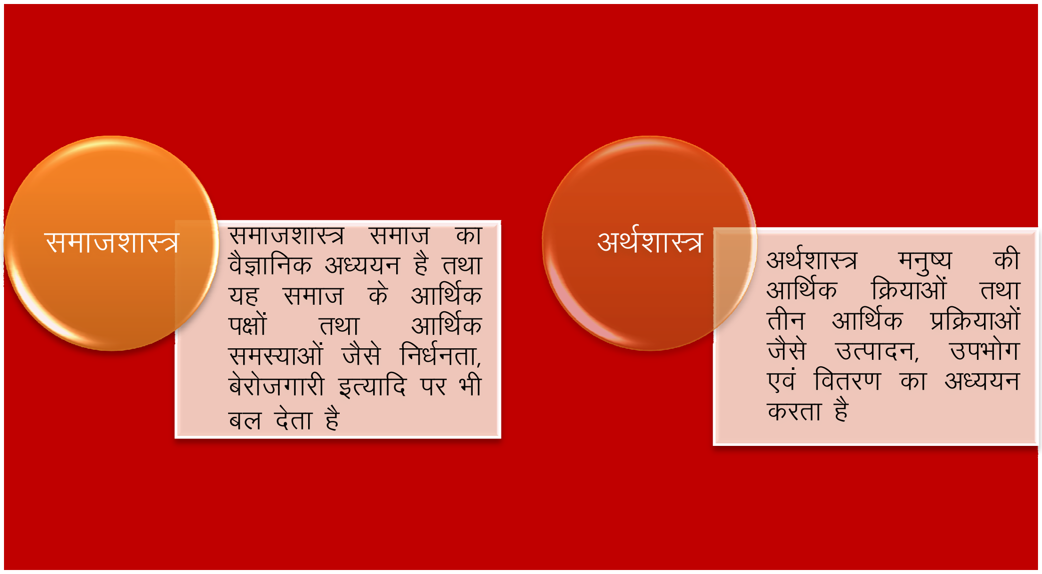

समाजशास्त्र का अर्थशास्त्र से भी घनिष्ठ सम्बन्ध हैं, क्योंकि आर्थिक सम्बन्धों में सामाजिक गतिविधियां और सामाजिक सम्बन्ध सम्मिलित होते हैं तथा इस प्रकार आर्थिक क्रियाएं, बहुत हद तक, सामाजिक क्रियाएं हैं। इसी तरह, सामाजिक सम्बन्ध भी आर्थिक सम्बन्धों से प्रभावित होते हैं। इसलिए, दोनो विषय परस्पर सम्बन्धित हैं।

समाजशास्त्र समाज का विज्ञान होने के कारण मनुष्यों की समितियों पर बल देता हैं। अर्थशास्त्र मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं से सम्बन्धित होता हैं। यह धन तथा तार्किक चयन का एक विज्ञान होने के कारण दुर्लभ संसाधनों के वितरण तथा प्रबंधन से सम्बन्धित होता हैं। लियोनेल रॉबिन्स के अनुसार, अर्थशास्त्र एक ऐसा समाज विज्ञान हैं जो मानव व्यवहार का उनके लक्ष्यों तथा दुर्लभ साधनों के मध्य सम्बन्धों के आधार पर अध्ययन करता हैं। यह विषय उत्पादन, उपभोग, वितरण तथा विनिमय जैसी गतिविधियों से सम्बन्धित हैं। यह विभिन्न आर्थिक संगठनों जैसे बैंको, बाजारों इत्यादि की संरचना तथा प्रकार्यो का भी अध्ययन करता हैं।

यह मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं के साथ–साथ उनके भौतिक कल्याण से भी सम्बन्धित हैं। दोनों विषय, अध्ययन के क्षेत्रों में भिन्नता होने के बावजूद बहुत हद तक एक दूसरे से अन्तःसम्बन्धित हैं। दोनो विषय अन्तःसम्बन्धित एवं अन्तःनिर्भर हैं। दरअसल, कुछ विचारकों के लिए अर्थशास्त्र वास्तव में समाजशास्त्र की एक शाखा हैं। उनके अन्तःसम्बन्धों को निम्न प्रकार से वर्णित किया जा सकता हैं

- अर्थशास्त्र स्वयं को समझने के लिए समाजशास्त्र से मदद लेता है और उस पर निर्भर करता हैं।
- अर्थशास्त्र समाजशास्त्र का एक भाग है तथा समाजशास्त्र से सहायता लिए बिना यह स्वयं को पूरी तरह से नहीं समझ सकता।
- अर्थशास्त्र मनुष्य के भौतिक कल्याण से सम्बन्धित है, जो सामाजिक कल्याण का एक भाग हैं।
- मुद्रास्फीति, निर्धनता, बेरोजगारी इत्यादि आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए अर्थशास्त्री एक विशिष्ट समय की सामाजिक घटनाओं को जानने के लिए समाजशास्त्र की सहायता लेते हैं। साथ ही, समाज व्यक्तियों की आर्थिक क्रियाओं को नियंत्रित करता हैं।

इसी तरह, समाजशास्त्र भी अर्थशास्त्र से सहायता लेता हैं।

- अर्थशास्त्र समाजशास्त्रीय ज्ञान में वृद्धि करता है। आर्थिक कारक सामाजिक जीवन के सभी पक्षों को व्यापक रूप से प्रभावित करते हैं।
- अर्थशास्त्र समाजशास्त्र का एक भाग है तथा अर्थशास्त्र की मदद के बिना हम समाज को उचित ढंग से नहीं समझ सकते ।

इस प्रकार, समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं। आर्थिक परिवर्तन, सामाजिक परिवर्तनों का परिणाम हैं ठीक इसी प्रकार सामाजिक परिवर्तन आर्थिक परिवर्तनों का परिणाम हैं अर्थात् आर्थिक व सामाजिक परिवर्तन एक–दूसरे का कारण–परिणाम हैं। बहुत से ऐसे पक्ष हैं जिनका अध्ययन समाजशास्त्रियों तथा अर्थशास्त्रियों दोनो द्वारा किया जाता हैं, जैसे पूंजीवाद, औद्योगीकरण, श्रम–सम्बन्ध, वैश्वीकरण इत्यादि।

हालांकि, पारस्परिक निर्भरता के बावजूद, दोनो समाज विज्ञानों में कुछ अन्तर हैं जिनका वर्णन नीचे किया गया हैं:

अन्तर

समाजशास्त्र	अर्थशास्त्र
➢ समाजशास्त्र समाज एवं सामाजिक सम्बन्धों का एक विज्ञान हैं। ➢ समाजशास्त्र एक बहुत ही युवा	➢ अर्थशास्त्र धन एवं तार्किक चयन का एक विज्ञान हैं। ➢ अर्थशास्त्र तुलनात्मक रूप से एक

विज्ञान है जिसकी उत्पत्ति हाल ही मे हुई हैं।	प्राचीन विज्ञान हैं।
➢ समाजशास्त्र एक अमूर्त विज्ञान हैं।	➢ अर्थशास्त्र की प्रकृति मूर्त है।
➢ समाजशास्त्र एक सामान्य समाज विज्ञान हैं।	➢ अर्थशास्त्र एक विशिष्ट समाज विज्ञान हैं।
➢ समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र बहुत व्यापक है।	➢ अर्थशास्त्र का विषय क्षेत्र बहुत सीमित हैं।
➢ समाजशास्त्र मनुष्य की सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्धित हैं।	➢ अर्थशास्त्र मनुष्यों की आर्थिक गतिविधियों पर बल देता हैं।
➢ समाजशास्त्र में समाज/समूह को अध्ययन की एक इकाई के रूप में देखा जाता हैं।	➢ अर्थशास्त्र में व्यक्ति को अध्ययन की एक इकाई माना जाता हैं।

समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञानः

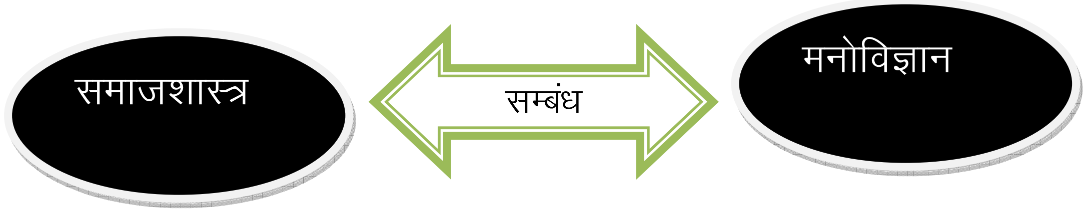

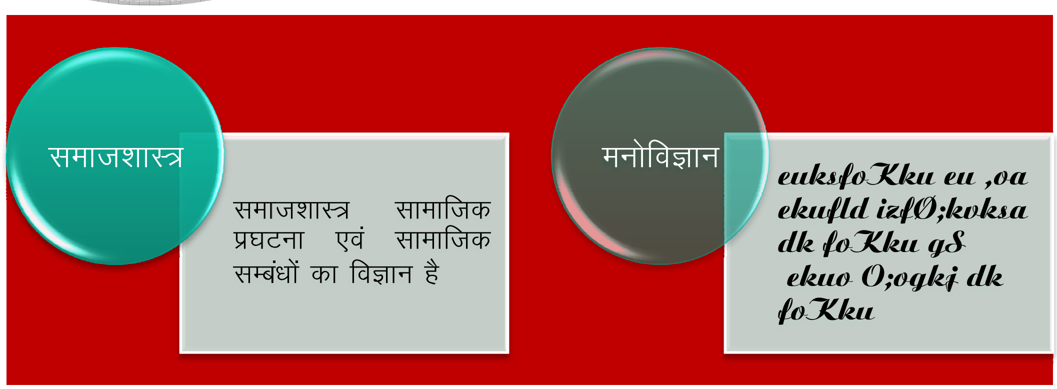

मनोविज्ञान एक अन्य विषय है जिसका समाजशास्त्र के साथ एक घनिष्ठ सम्बन्ध है। दोनो विषय अपनी–अपनी विषय वस्तु को बेहतर ढंग से समझने के लिए एक–दूसरे पर निर्भर करते हैं। दोनो के मध्य के सम्बन्ध इतने नजदीकी व घनिष्ठ हैं कि कार्ल पियरसन जैसे मनोवैज्ञानिक दोनो को पृथक विज्ञानों के रूप में स्वीकार नही करते। उनका सम्बन्ध तब स्पष्ट होगा जब हम उनके अन्तःसम्बन्धों तथा परस्पर निर्भरता का विश्लेषण करेंगे।

समाजशास्त्र सामाजिक प्रघटना तथा सामाजिक सम्बन्धों का एक विज्ञान है। यह सामाजिक समूहों तथा सामाजिक संस्थाओं के अध्ययन से सम्बद्ध है। यह सामूहिक व्यवहार का एक विज्ञान है, अर्थात् यह मानव व्यवहार का समूह में अध्ययन करता है। दूसरी तरफ, मनोविज्ञान मन या मानसिक प्रक्रियाओं का एक विज्ञान है। यह मानव व्यवहार का एक विज्ञान है, यह समाज में अभिवृत्तियों, भावनाओं, प्रत्यक्षीकरण, शिक्षण की प्रक्रिया और व्यक्तियों के मूल्यों तथा व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया का विश्लेषण करता है। समाज के अनेक पक्षों को अच्छे ढंग से समझने के लिए समाजशास्त्र मनोविज्ञान की सहायता लेता है। सिंग्मड फ्रायड, विलियम मैक्डूगल तथा अन्य मनोवैज्ञानिको ने समाजशास्त्र को अनेक संदर्भों में समृद्ध किया है। उनका मत था कि सम्पूर्ण सामाजिक जीवन को अन्ततः मनोवैज्ञानिक शक्तियों के आधार पर समझा जा सकता है। प्रत्येक सामाजिक समस्या तथा सामाजिक प्रघटना का एक मनोवैज्ञानिक आधार होता है जिसके समाधान के लिए समाजशास्त्र को मनोविज्ञान की मदद की आवश्यकता होती है।

इसी तरह, मनोविज्ञान विभिन्न प्रघटनाओं को समझने के लिए समाजशास्त्र पर निर्भर करता है। यह समाजिक सम्बन्धों, व्यवहारों तथा गतिविधियों को समझने के लिए अनेक मामलों में समाजशास्त्र से सहायता लेता है। चूंकि मन तथा व्यक्तित्व सामाजिक पर्यावरण, संस्कृति, प्रथाओं एवं परम्पराओं से प्रभावित होते हैं, इसलिए इन विषयों को समझने के लिए समाजशास्त्र से सहायता लिये बिना मनोवैज्ञानिकों के अध्ययन अधूरे रहते हैं। ज्ञान की एक नई शाखा जो समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान के संयोजन से विकसित हुई उसे 'समाज मनोविज्ञान' के रूप में जाना जाता है।

निम्नलिखित बिन्दुओं से उनकी परस्पर निर्भरता स्पष्ट होती हैः

- मानव प्रकृति तथा व्यवहार को उचित तरीके से समझने के लिए समाजशास्त्र मनोविज्ञान पर निर्भर करता है।
- इसी तरह, अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याओं के सामाजिक कारण हो सकते हैं। इन सामाजिक समस्याओं को समझने के लिए मनोविज्ञान को समाजशास्त्र की आवश्यकता होती है।
- अनेक समाजशास्त्रियों के योगदानो व सिद्धांतो ने मनोवैज्ञानिकों की बहुत सहायता की है और इसी प्रकार मनोवैज्ञानिकों ने भी अपने योगदान से समाजशास्त्रियों की मदद की।
- समाजशास्त्र में हुए शोधो ने मनोविज्ञान में व्यापक योगदान किया है और इसके विपरीत, मनोवैज्ञानिक शोधो ने भी समाजशास्त्र में व्यापक योगदान किया है।

यद्यपि, समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान में परस्पर निर्भरता पाई जाती है। इसके अतिरिक्त, यहॉ अध्ययन के कुछ अन्य सामान्य क्षेत्र भी होते है जैसे सामाजिक विघटन, सार्वजनिक विचार इत्यादि जिनका समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान दोनों के द्वारा अध्ययन किया जाता है।

फिर भी, अन्य समाज विज्ञानों की तरह, समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान के मध्य कुछ अन्तर है:

अन्तर

समाजशास्त्र	मनोविज्ञान
➢ समाजशास्त्र समाज का एक विज्ञान हैं। ➢ समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र व्यापक हैं। ➢ समाजशास्त्र में समाज अध्ययन की एक इकाई हैं। ➢ समाजशास्त्र सामाजिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता हैं। ➢ समाजशास्त्र मानव व्यवहार का एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन एवं विश्लेषण करता हैं।	➢ मनोविज्ञान मन का एक विज्ञान हैं। ➢ मनोविज्ञान का विषय क्षेत्र सीमित हैं। ➢ मनोविज्ञान में व्यक्ति अध्ययन की एक इकाई हैं। ➢ मनोविज्ञान मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता हैं। ➢ मनोविज्ञान मानव व्यवहार का एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन एवं विश्लेषण करता हैं।

समाजशास्त्र तथा मानवविज्ञान

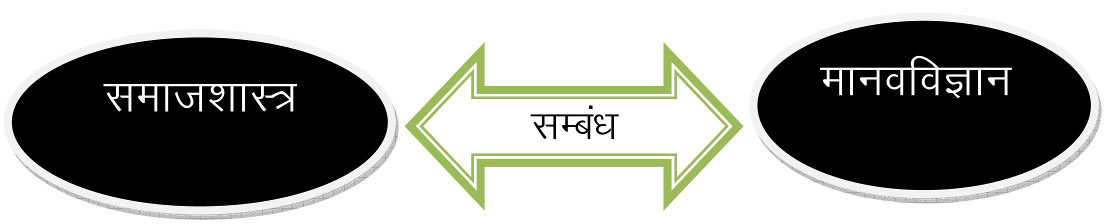

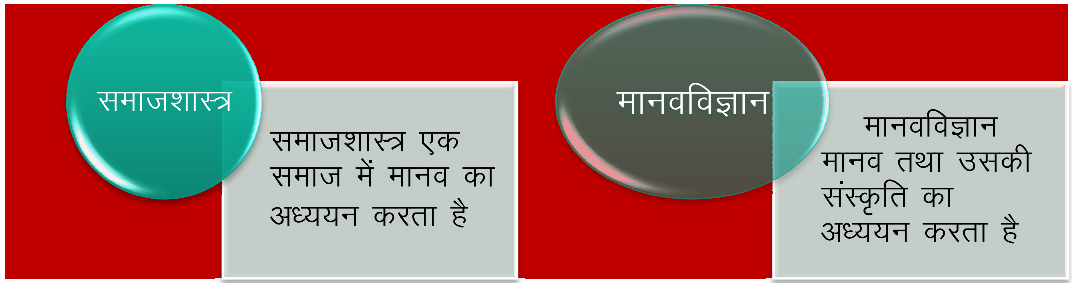

समाजशास्त्र तथा मानवविज्ञान के मध्य अत्यधिक घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण मानवविज्ञानी ए. एल. क्रोबर समाजशास्त्र तथा मानवविज्ञान को जुड़वा बहने मानते हैं। समान विषय के लिए दो अलग नामों से इन्हे जाना जाता हैं। रॉबर्ट रेडफील्ड जैसे विद्वान इन दोनो समाज विज्ञानों के बीच निकटता से परिचित थे और दोनों ही क्षेत्रों में उन्होने कार्य किया।

समाज के एक विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र समूहों में मानव व्यवहार का अध्ययन करता हैं। यह मानवों की समितियों से सम्बद्ध रहता हैं। मानवविज्ञान शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों 'एंथ्रोपोस' जिसका अर्थ मानव हैं तथा 'लोगोस' जिसका अर्थ अध्ययन या विज्ञान है, से मिलकर बना हैं। इस प्रकार, मानवविज्ञान का अर्थ मनुष्य का अध्ययन हैं।

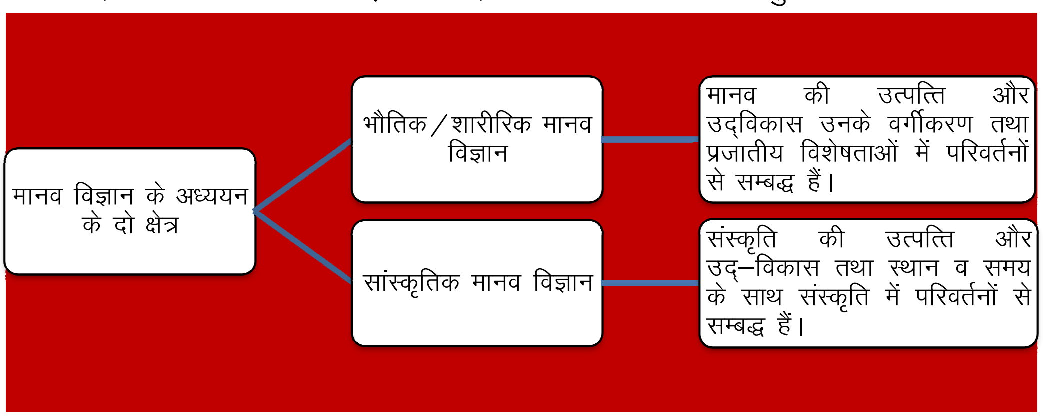

मानव के विज्ञान के रूप में यह मनुष्यों, उनके कार्यों तथा व्यवहारों का अध्ययन करता हैं। मानवविज्ञान मनुष्य के जैविकीय और सांस्कृतिक विकास का अध्ययन करता हैं। इसका अध्ययन क्षेत्र काफी व्यापक हैं जिसे व्यापक रूप से तीन प्रमुख भागों में बांटा जा सकता हैं शारीरिक मानवविज्ञान, पुरातत्व विज्ञान (सांस्कृतिक मानवविज्ञान) तथा सामाजिक मानवविज्ञान। शारीरिक मानवविज्ञान प्रारम्भिक मानव की शारीरिक विशेषताओं का अध्ययन करता हैं तथा उसके आधार पर आदिम तथा आधुनिक संस्कृतियों को समझने का प्रयास करता हैं। पुरातत्व विज्ञान पूर्व–ऐतिहासिक काल की संस्कृतियों का अध्ययन करता हैं। इस अध्ययन से समाजशास्त्रियों को वर्तमान सामाजिक संरचना का

तुलनात्मक अध्ययन करने में सुविधा होती हैं। इसका सम्बन्ध मानव अस्तित्व के प्रारम्भिक काल से हैं। यह अतीत के समाजों के अवशेषों का परीक्षण करके संस्कृति की उत्पत्ति, विस्तार तथा उद्विकास को पुर्नसंरचित करता हैं। सामाजिक मानवविज्ञान सामाजिक संस्थाओं में व्यक्तियों के व्यवहार के अध्ययन से सम्बन्धित हैं। सामाजिक मानवविज्ञान, मानवविज्ञान की एक शाखा हैं जो समाजशास्त्र के अत्यधिक निकट हैं। वास्तव में, इवांस प्रिचार्ड सामाजिक मानवविज्ञान को समाजशास्त्र की ही एक शाखा मानते हैं।

इस प्रकार, समाजशास्त्र तथा मानवविज्ञान के मध्य अत्यधिक निकट व घनिष्ठ सम्बन्ध हैं:

- समाजशास्त्र समाज का अध्ययन करता है जबकि मानवविज्ञान मनुष्य का अध्ययन करता हैं। परन्तु, चूंकि मनुष्य व समाज परस्पर अंतःसम्बन्धित हैं, इन दोनो में अन्तर करना बहुत कठिन हैं।
- विज्ञान समाजशास्त्र के विकास में योगदान करता हैं। मानवविज्ञान की सहायता के बिना, समाजशास्त्र का अध्ययन पूरा नहीं हो सकता। यह समाजशास्त्र का एक भाग हैं।
- मानवविज्ञान प्राचीन समाजों के विषय में ज्ञान प्रदान करता हैं। वर्तमान समाज की एक व्यापक समझ प्राप्त करने के लिए समाजशास्त्र मानव की मदद लेता हैं।
- सामाजिक संस्थाओं जैसे परिवार, विवाह, धर्म इत्यादि की उत्पत्ति को मानवविज्ञान के माध्यम से बेहतर ढंग से समझा जा सकता हैं।
- संस्कृति, सांस्कृतिक लक्षण तथा सांस्कृतिक पिछडन/संस्कृति अंतराल जैसी अवधारणाएं समाजशास्त्र में मानवविज्ञान से ग्रहण की गई हैं।
- मानवविज्ञान समाजशास्त्र की अनेक अवधारणाओं को स्वीकार करता हैं। अनेक समाजशास्त्रियों जैसे एमिल दुर्खाइम तथा हरबर्ट स्पेंसर के योगदानों ने मानवविज्ञान की बहुत सहायता की हैं।
- मानवविज्ञानी समाजशास्त्रीय अनुसंधानों से बहुत लाभान्वित हुए हैं। समाजशास्त्रीय अंवेषण के परिणाम तथा विचार मानव विज्ञान में अनुसंधान के लिए योगदान करते हैं।

इस प्रकार, समाजशास्त्र तथा मानवविज्ञान के मध्य अत्यधिक निकटता/घनिष्ठता दिखाई देती हैं। समाजशास्त्र मानववैज्ञानिक अध्ययनों से बहुत लाभान्वित हुआ है जबकि मानवविज्ञान को भी समाजशास्त्रीय अध्ययनों से लाभ मिला हैं। दोनो ही मानव समाज का अध्ययन करते हैं तथा दोनो ही सभी प्रकार के सामाजिक समूहों जैसे परिवारो, मित्रों, जनजातियों इत्यादि से सम्बन्धित हैं। अनेक समान विचार तथा अवधारणाएं दोनो ही अनुशासनों में प्रयुक्त की जाती हैं। इसलिए, दोनो अन्तःसम्बन्धित तथा अन्तःनिर्भर हैं।

हालांकि, दोनो समाज विज्ञानों के मध्य कुछ अन्तर देखे जा सकते हैं, जैसेः

समाजशास्त्र	मानवविज्ञान
➢ समाजशास्त्र समाज का एक विज्ञान हैं।	➢ मानवविज्ञान मनुष्य का एक विज्ञान हैं।
➢ समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र बहुत व्यापक हैं।	➢ मानवविज्ञान का विषय क्षेत्र बहुत सीमित हैं क्योंकि मानवविज्ञान समाजशास्त्र का एक भाग हैं।
➢ समाजशास्त्र समग्र समाज का अध्ययन करता हैं।	➢ मानवविज्ञान समाज के एक अंग के रूप में मानव का अध्ययन करता हैं।
➢ समाजशास्त्र सभ्यताओं का अध्ययन करता है जो कि व्यापक और गतिशील हैं।	➢ मानवविज्ञान संस्कृतियों का अध्ययन करता है जो छोटी तथा स्थिर हैं।
➢ समाजशास्त्र आधुनिक, सभ्य तथा जटिल समाजों का अध्ययन करता हैं।	➢ मानवविज्ञान प्राचीन तथा अशिक्षित समाजों का अध्ययन करता हैं।
➢ समाजशास्त्र का सम्बन्ध सामाजिक नियोजन से हैं।	➢ मानवविज्ञान का सामाजिक नियोजन से कोई सम्बन्ध नहीं हैं।

निष्कर्ष

उपरोक्त चर्चा से यह स्पस्ट हो जाता हैं कि विभिन्न समाज विज्ञान अन्तःसम्बन्धित हैं तथा उनके मध्य पाये जाने वाले अन्तरों के बावजूद समाजशास्त्र तथा अन्य समाज विज्ञानों के मध्य अत्यधिक निकट व घनिष्ठ सम्बन्ध हैं।

शब्दावली

पुरातत्व विज्ञानः पुरावशेष, वास्तुशिल्प, जैवकीय अवशेषों (या पर्यावरणीयतथ्यों) तथा सांस्कृतिक परिदृश्यों के आधार पर, जो कि वे पीछे छोड गये हैं, मुख्य रूप से भौतिक संस्कृति तथा पर्यावरणीय ऑकडों की पुनः प्राप्ति तथा विश्लेषण के आधार पर अतीत की मानवीय गतिविधियों का अध्ययन करता हैं।

सांस्कृतिक मानव यह मानव विज्ञान की एक शाखा है जो मनुष्यों की सांस्कृतिक विविधता के अध्ययन पर बल देता है तथा सामाजिक मानव

विज्ञानः	के विपरीत, सांस्कृतिक विविधता को एक 'आश्रित चर' की अपेक्षा एक 'स्वतंत्र (विवेचनात्मक) चर' के रूप में अधिक देखता हैं।
शारीरिक मानव विज्ञानः	इसे जैवकीय मानव विज्ञान भी कहते हैं यह मानव के उद्विकास, उनकी परिवर्तनशीलता, तथा पर्यावरणीय दबावों के साथ अनुकूलन के अध्ययन से सम्बन्धित हैं।
राजनीतिक समाजशास्त्रः	एक ऐसा विषय जिसमें यह अध्ययन किया जाता हैं कि कैसे सामाजिक प्रवृत्तियॉ, गतिशीलताएं तथा प्रभुत्व की संरचनाएं औपचारिक राजनीतिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करती हैं, साथ ही, यह ज्ञात करना कि कैसे विभिन्न सामाजिक शक्तियॉ राजनीतिक नीतियों को परिवर्तित करने हेतु एक साथ कार्य करती हैं।
सामाजिक मनोविज्ञानः	लोगों के विचार, भावनाएं तथा व्यवहार कैसे दूसरों की वास्तविक, काल्पनिक या अस्पष्ट उपस्थिति से प्रभावित होते हैं, का वैज्ञानिक अध्ययन हैं।

प्रश्न—अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 1—15 शब्दों में दीजिएः

1. किस विचारक ने समाजशास्त्र तथा मानवविज्ञान को जुडवां बहनें माना हैं ?
2. समाजशास्त्रियों तथा अर्थशास्त्रियों द्वारा अध्ययन किये जाने वाले कुछ विषयों के नाम बताइये।
3. मानवविज्ञान के अध्ययन के कोई दो क्षेत्र बताइये।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 30—35 शब्दों में दीजिएः

1. समाजशास्त्र किसे कहते हैं ?
2. राजनीति विज्ञान से क्या अभिप्राय हैं ?
3. शारीरिक मानवविज्ञान से क्या अभिप्राय हैं ?
4. सांस्कृतिक मानवविज्ञान से क्या अभिप्राय हैं ?

5. अर्थशास्त्र किसे कहते हैं ?

6. इतिहास किसे कहते हैं ?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 75–85 शब्दों में दीजिए:

1. समाजशास्त्र तथा राजनीति विज्ञान के मध्य कोई दो अन्तर बताईये।
2. समाजशास्त्र तथा इतिहास के बीच क्या सम्बन्ध हैं ? दो बिंदु बताइये।
3. समाजशास्त्र तथा मानवविज्ञान के मध्य सम्बन्धों की संक्षेप में चर्चा कीजिए।
4. समाजशास्त्र किस प्रकार अर्थशास्त्र से सम्बन्धित हैं ? संक्षेप में बताइये।
5. समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान के मध्य सम्बन्ध की चर्चा कीजिए।
6. समाजशास्त्र तथा राजनीति विज्ञान किस प्रकार अन्तःसम्बन्धित हैं ? संक्षेप में समझाइये।
7. समाजशास्त्र तथा मानवविज्ञान के मध्य अन्तरों की संक्षेप में चर्चा कीजिए।
8. समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र के मध्य अन्तरों की संक्षेप में चर्चा कीजिए।
9. समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान के मध्य अन्तर कीजिए।
10. समाजशास्त्र तथा इतिहास के मध्य अन्तरों की संक्षेप में चर्चा कीजिए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 250–300 शब्दों में दीजिए:

1. समाजशास्त्र कैसे अन्य समाज विज्ञानों से भिन्न हैं ? किसी भी दो पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
2. समाजशास्त्र और इतिहास के बीच सम्बन्धों पर एक विस्तृत टिप्पणी लिखिए।
3. राजनीतिक वैज्ञानिकों के लिए समाजशास्त्रीय समझ क्यों आवश्यक हैं ?
4. मनोविज्ञान समाजशास्त्र को कैसे प्रभावित करता हैं ?

इकाई : 2

समाजशास्त्र की मूलभूत अवधारणाएं

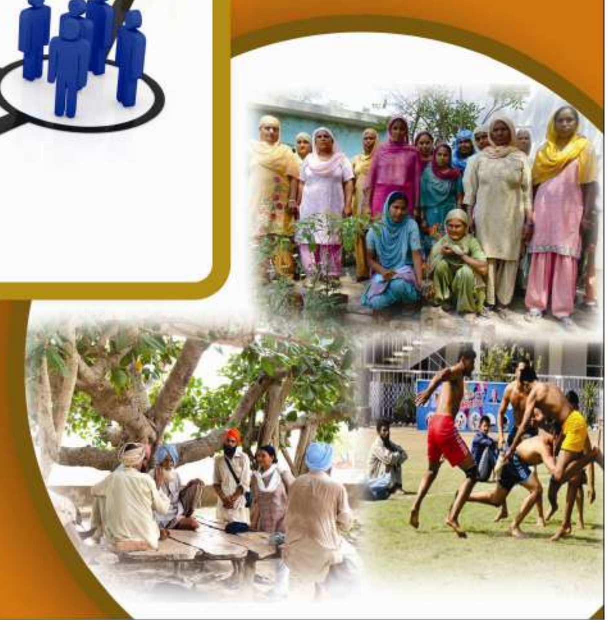

अध्याय 3

समाज, समुदाय तथा समिति

मुख्य बिन्दुः

3.1 अर्थ
3.2 विशेषताएं
3.3 व्यक्ति तथा समाज
3.4 समाज, समुदाय एवं समिति में भिन्नताएं

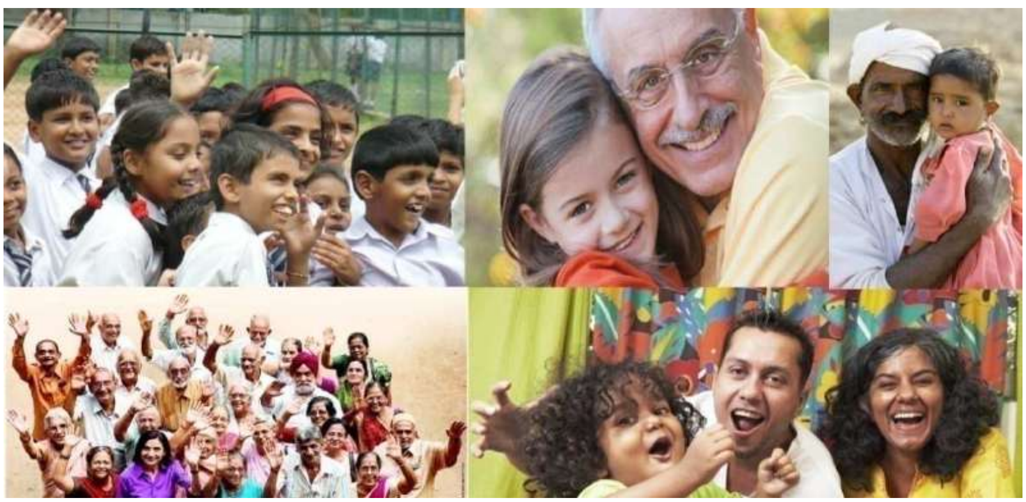

परिचय

समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों तथा अन्तःक्रियाओं का अध्ययन हैं। हांलाकि, सम्बन्ध और अन्तःक्रिया शून्य में नहीं होते अपितु एक समाज की कुछ इकाईयों के माध्यम से अस्तित्व में आते हैं। इस अध्याय में, हम ऐसी तीन इकाईयों अर्थात् समाज, समुदाय और समिति की चर्चा करेगें।

समाज

ग्रीक दार्शनिक अरस्तु के शब्दों में, मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। एक व्यक्ति बिना समाज के जीवन की कल्पना नहीं कर सकता क्योंकि हम एक समाज में जन्म लेते हैं, समाज में अपना जीवन बिताते हैं तथा समाज में ही मर जाते हैं। समाज या सोसायटी

शब्द लैटिन शब्द 'सोशियस (Socius) से लिया गया हैं जिसका अर्थ सहचारिता या मित्रता हैं। सहचारिता का अभिप्राय सामाजिक होना या मिलनसार होना से हैं जो यह बताता हैं कि मनुष्य सदैव अन्य लोगों के साथ रहता हैं।

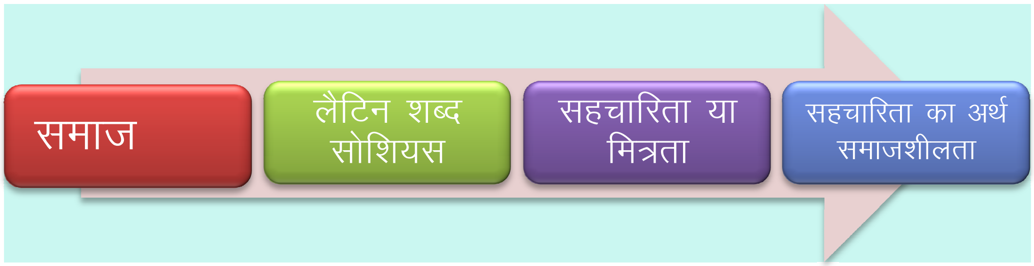

समाज को सरल ढंग से परिभाषित करते हुए कह सकते हैं कि एक सामान्य निश्चित क्षेत्र, एक सामाजिक संरचना, अन्तःक्रिया और संस्कृति से सम्बद्ध व्यक्तियों का एक समूह, समाज कहलाता हैं। जैसा कि उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट हैं कि, समाज एक व्यापक अवधारणा हैं। यह व्यक्तियों और समूहों के मध्य परस्पर अन्तःक्रियाओं तथा अन्तःसम्बन्धों से निर्मित होती हैं। यह अनेक संस्थाओं से निर्मित एक संगठित व्यवस्था/प्रणाली हैं जो एक दूसरे के साथ सहयोग से काम करती हैं। एक संगठन के रूप में देखने पर समाज में लक्ष्यों का सांझा समुच्चय तथा निश्चित उद्देश्य होते हैं। इसके समुचित ढंग से कार्य करने के लिए आवश्यक है कि समाज के कुछ निश्चित परिभाषित नियम, मानक, प्रतिमान और मूल्य होने चाहिए जो सदस्यों में व्यक्तिगत व्यवहार प्रतिमानों को निर्धारित करने में उपयोगी होते हैं। इस प्रकार, कुछ लोगो के लिए, समाज व्यक्तियों का एक समुच्चय हैं जबकि दूसरे इसे सामाजिक सम्बन्धों के एक जाल के रूप में परिभाषित करते हैं जो कि व्यक्तियों या समूहों या संग्रहों के मध्य विद्यमान होते हैं। दूसरे शब्दों में, एक समाज केवल लोगो का एक समूह तथा उनकी संस्कृति ही नहीं हैं अपितु उस समूह के भीतर लोगो और संस्थाओं के बीच सम्बन्धों को भी व्यक्त करता हैं।

विभिन्न समाज विज्ञानों में समाज का भिन्न अर्थ लगाया जाता हैं, परन्तु समाजशास्त्र मे इसका प्रयोग विभिन्न प्रकार की सामाजिक इकाईयों के संदर्भ में होता हैं। समाजशास्त्र का मुख्य ध्यान मानव समाज पर तथा इसमें पाये जाने वाले सम्बन्धों के नेटवर्क/जाल पर होता हैं। एक समाज में समाजशास्त्री सामाजिक प्राणियों के अन्तःसम्बन्धों का अध्ययन करते हैं तथा यह ज्ञात करते हैं कि एक विशिष्ट स्थिति में एक व्यक्ति कैसे व्यवहार करता हैं, उसे दूसरों से क्या उम्मीद करनी चाहिए तथा दूसरे उससे क्या उम्मीदे/अपेक्षाऐं करते हैं।

समाज के सम्बंध में कुछ महत्वपूर्ण विचार निम्नलिखित हैं :

- **अगस्त कोंतः** समाज सरंचना तथा प्रकार्य के मध्य सामंजस्य रखने वाला एक सामाजिक सावयव हैं।
- **आर. एम. मैकाइवर तथा चार्ल्स पेजः** समाज सामाजिक सम्बन्धों का एक जाल हैं।
- **एफ. एच. गिडिंग्सः** समाज स्वयं में एक संघ, संगठन, तथा औपचारिक सम्बन्धों का समुच्चय हैं जिसमें सम्बन्धित व्यक्ति एक दूसरे से जुडे होते हैं।
- **मॉरिस गिन्सबर्गः** समाज व्यक्तियों का एक ऐसा संग्रह है जो कुछ सम्बंधों या व्यवहार की विधियों द्वारा परस्पर सम्बंधित हो, जो व्यक्ति इन सम्बंधों द्वारा सम्बद्ध नहीं होते या जिनके व्यवहार उनसे भिन्न हैं, वे समाज से भिन्न होते हैं।
- **जी. एच. मीडः** समाज पूर्व–उपस्थित एकल व्यक्तियों का एक संग्रह नहीं हैं अपितु एक प्रक्रियात्मक समग्र है जिसमें व्यक्ति स्वयं को सामाजिक क्रियाओं में सहभागिता के माध्यम से परिभाषित करते हैं।

इस प्रकार, समग्र रूप से यह कह सकते हैं कि समाज में सभी सम्बन्धों, संस्थाओं तथा संगठनों को सम्मिलित किया जाता है, जो व्यक्तियों के बीच 'हम की भावना' उत्पन्न करते हैं तथा व्यक्ति एक–दूसरे पर निर्भर होते हैं।

समाज के प्रकार

विभिन्न लेखकों ने समाज को अनेक श्रेणियों में वर्गीकृत किया हैं। इन सभी विचारकों ने समाज को मोटे तौर पर पूर्व–औद्योगिक तथा उत्तर–औद्योगिक समाजों में बांटा हैं। समाजशास्त्री कोंत ने बौद्धिक विकास के आधार पर समाज का वर्गीकरण प्रस्तुत किया। इस वर्गीकरण के बाद, समाजशास्त्री अक्सर समाजों को आदिम या आधुनिक तथा निरक्षर या साक्षर समाज के रूप में देखते हैं। एक नवीन प्रकार का वर्गीकरण जिसके आधार पर समाज को खुले एवं बंद समाजों में बॉटा जाता हैं, का भी प्रयोग होने लगा हैं। एक बंद समाज परम्परागत, सरल तथा अधिनायकवादी/सर्वसत्तावादी होता हैं तथा परिवर्तन का विरोध करता हैं जबकि एक खुला समाज परिवर्तन को स्वीकार करता हैं।

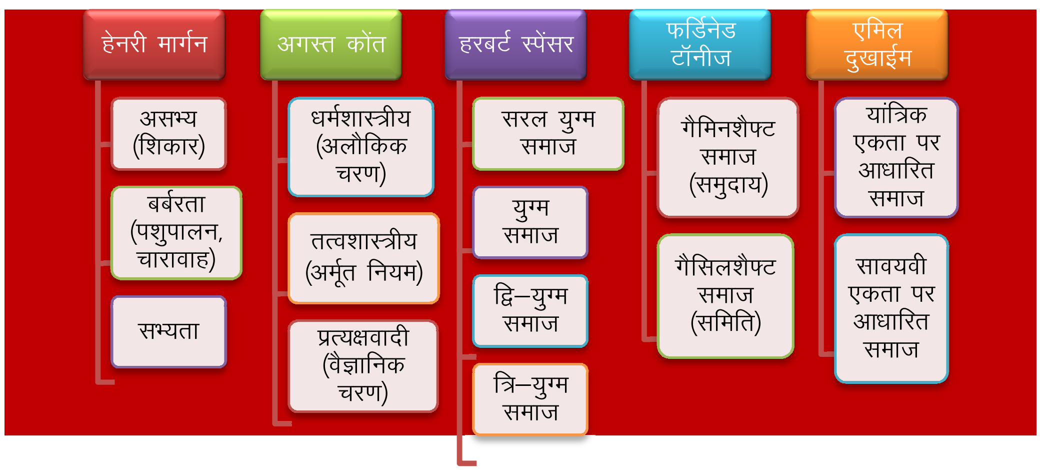

उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट हो जाता हैं कि समाजों का वर्गीकरण सामाजिक विकास (मार्गन), बौद्धिक विकास (कोंत), सरंचनात्मक जटिलता की मात्रा (स्पेंसर), सामाजिक सम्बन्धों के प्रकार (टॉनीज) तथा एकता के प्रकारों (दुखाईम) के आधार पर किया जा सकता हैं।

समाज की विशेषताएं

1. समाज अर्मूत हैं।

हम सभी जानते हैं कि समाज हमारे बाहर स्थित है तथा हमारे व्यवहार, चिन्तन और क्रियाओं को प्रभावित करता हैं। परन्तु क्या आपने कभी समाज को देखा हैं ? संभवतः इसका जवाब 'नहीं' ही होगा। जैसा कि पहले बताया गया हैं, समाज सम्बन्धों का एक जाल हैं। सामाजिक सम्बन्ध अदृश्य होते हैं और हम सभी एक तरह से या किसी अन्य तरह से सामाजिक सम्बन्धों से बंधे हुए हैं। हम इन संबंधों को देख या छू नहीं सकते परन्तु हम इनकी उपस्थिति को अनुभव कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, समाज प्रथाओं,

परम्पराओं, जनरीतियों, रूढियों तथा संस्कृति से निर्मित होता है जो कि अर्मूत होते हैं। इसलिए, समाज एक अर्मूत प्रघटना हैं।

2. समाज में समानता पायी जाती हैं।

समाज सदस्यों से बनता हैं जिनमें अन्य स्तरों पर मतभेदों के बावजूद मानसिक समानता कुछ मात्रा में पायी जाता हैं। वे बहुत हद तक एक जैसा अनुभव, एक जैसी क्रिया करते हैं तथा एक जैसा सोचते हैं। समानता की भावना के बिना, 'सम्बद्धता की भावना' (एक दूसरे से जुडाव)' को पारस्परिक सहमति प्राप्त नहीं हो सकती और इसलिए, समाज भी नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए, हम सभी भारत के लिए समान भावनाएं रखते हैं तथा सांस्कृतिक और धार्मिक भिन्नताओं के बावजूद, स्वाधीनता दिवस पर अपने राष्ट्रीय ध्वज को एक समान ढंग से फहराते व प्रणाम करते हैं। 'हम', 'हमें', और 'हमारे' वे अवधारणाएं है जो विचारों की समानता की व्याख्या करती हैं। एक समाज में समरूपता या समानता भिन्नता से अधिक महत्वपूर्ण होती हैं यद्यपि दोनो समाज का अभिन्न हिस्सा हैं।

3. समाज में भिन्नता होती हैं।

क्या आप अपने माता–पिता या भाई–बहन को समान रूप से पसंद करते हैं? क्या एक समाज के सभी सदस्यों के बीच समान प्रकार की रूचि तथा पसंद पायी जाती हैं? स्पष्ट है, ऐसा नहीं होता। समाज के सदस्य अपनी पसंद, रूचि, भावनाओं, संस्कृति तथा अन्य अनेक आधारों पर एक दूसरे से भिन्न होते हैं। इसका अर्थ है कि समाज में भिन्नताएं पायी जाती हैं और जो समाज के सदस्यों में स्वाभाविक रूप से पायी जाती हैं तथा पीढ़ी–दर पीढ़ी जारी रहती हैं। यहॉ तक कि जुड़वा बच्चे भी अभिवृत्ति, रूचि तथा योग्यता में स्वाभाविक रूप से एक दूसरे से भिन्न होते हैं। सामाजिक सम्बन्धों के जाल के रूप में समाज उन भिन्नताओं को सम्मिलित करता हैं जो समाज में अन्तःक्रिया कर रहे सदस्यों के बीच पायी जाती हैं। हालाकि, भिन्नताएं समाज के लिए आवश्यक हैं परन्तु स्वयं भिन्नताओं के आधार पर समाज निर्मित नहीं होता। इसलिए भिन्नता समानता की अधीनस्थ होती हैं या उससे कम महत्वपूण होती हैं।

4. सहयोग और संघर्ष समाज के अभिन्न अंग हैं।

सहयोग और संघर्ष मानव समाज के सार्वभौमिक तत्व हैं। समाज के सदस्यों के मध्य मतभेदों / भिन्नताओं पर ध्यान दिये बिना, वे समाज की संस्थाओं को संचालित के लिए सहयोग करते हैं। एक व्यक्ति अकेला किसी व्यक्ति की आवयकता को पूरा नहीं कर सकता। एक आरामदायक/सहज तथा शांतिपूर्ण जीवन जीने के लिए व्यक्ति को अन्य लोगों के साथ सहयोग करना पडता हैं। उदाहरण के लिए, एक समाज में कृषि उत्पादन

प्रक्रिया में लोग आपस में अन्तःक्रिया करते हैं तथा सामाजिक सम्बन्धों की एक संरचना निर्मित होती हैं। अनाज के उत्पादन के लिए किसान, खेत मजदूर तथा साख व बाजार संस्थाओं के मध्य सहयोग आवयश्क हैं। इसी तरह, एक गॉव में रहने वाले परिवार, एक–दूसरे को सहयोग करते हैं तथा अपनी समस्याओं को हल करने के लिए साथ–साथ काम करते हैं। साथ ही, एक समाज के सदस्यों के मध्य पाये जाने वाले संघर्ष को भी कम करके नहीं आंका जा सकता या वह कम महत्वपूर्ण नहीं होता। संघर्ष एक प्रक्रिया हैं जिसका अर्थ असहमति होता हैं तथा सभी समाजों में पायी जाती हैं। इसका सहयोग के साथ सम्बन्ध स्वाभाविक/आंतरिक है, ऐसा लगता हैं कि संघर्ष का एहसास लोगों को समाज के विकास तथा स्थिरता को बनाये रखने के लिए अधिक से अधिक सहयोग करने के लिए प्रेरित करता हैं। संघर्ष समाज के सुचारू तथा सामंजस्यपूर्ण संचालन के लिए विकल्प खोजने की प्रक्रिया को प्रारम्भ करता हैं। अन्यथा, समाज निष्क्रिय हो सकता है या रूक सकता हैं। इसलिए, सहयोग व संघर्ष एक साथ रहते हैं तथा समाज की आवश्यक विशेषताएं हैं।

5. समाज में स्तरीकरण की प्रणाली पायी जाती हैं।

प्रत्येक समाज में एक ऐसी प्रणाली होती है जो लोगो को उच्चता–निम्नता के क्रम में बॉटती है। सभी समाजों में विभिन्न श्रेणियॉ पायी जाती हैं जो लोगो को धन, प्रस्थिति तथा शक्ति के आधार पर असमान क्रम प्रदान करती हैं। सामाजिक स्तरीकरण से अभिप्राय समाज में समूहो के मध्य भौतिक वस्तुओं तथा प्रतीकात्मक पुरूस्कारों व शक्ति की संरचित असमानताओं से है।

6. समाज गतिशील हैं।

समाज की प्रकृति गतिशील और परिवर्तनशील होती हैं। समाज स्थिर नहीं हैं, यह गतिशील हैं। परिवर्तन हमेशा से ही समाज में देखा जाता हैं। कोई भी समाज किसी समय के लिए हमेशा स्थिर नहीं रह सकता। पुरानी प्रथाएं, परम्पराए, जनरीतियां, रूढियां, मूल्य तथा संस्थाएं बदलती रहती हैं तथा उनका स्थान नयी प्रथाएं व मूल्य ले लेते हैं। समाज परंपरागत से आधुनिक स्वरूप में बदलता हैं। परविर्तन धीरे–धीरे या अचानक हो सकता हैं। यह आंशिक या सम्पूर्ण परिवर्तन/रूपांतरण के रूप में हो सकता हैं। मानव समाज की एक आन्तरिक विशेषता के रूप में परिवर्तनशीलता, अधिक महत्वपूर्ण या कम महत्वपूर्ण हो सकती हैं।

7. समाज संगठित हैं।

समाज एक संगठित प्रणाली हैं। इसमें कुछ निश्चित नियमों व व्यवहारों का समुच्चय होता हैं जिसका प्रत्येक सदस्य पालन करता हैं। नियम और निश्चित प्रतिमान समाज के विभिन्न भागों के समुचित संचालन में सहायता करते हैं। इस प्रकार का सहयोग व संगठित संचालन आवश्यक हैं ताकि किसी भी स्तर पर काम नहीं रूके।

गतिविधि– 3.1

- सहयोग का उदाहरण बताइये जो आप अपनी परिवार व्यवस्था में देखते हैं।
- क्या आप सोचते हैं कि संघर्ष पीढ़ी अंतराल को उत्पन्न करता हैं ?

गतिविधि– 3.2

- हमारे समाज में वर्षो से हो रहे परिवर्तनों के बारे में अपने बुजुर्गो या दादा–दादी से पता लगाइये।
- विभिन्न समाजों के मध्य पायी जाने वाली समानताओं तथा भिन्नताओं पर कक्षा में शिक्षक के साथ चर्चा कीजिए। इसके कारणों का पता लगाईये तथा उनकी सूची बनाइये।

गतिविधि– 3.3

- पंजाबी समाज के समक्ष उत्पन्न कुछ चुनौतियों की एक सूची बनाइये।

व्यक्ति और समाज

व्यक्ति मात्र एक जैविकीय इकाई हीं नही होता अपितु एक सामाजिक प्राणी भी होता है। व्यक्तियों के रूप में, हम सदैव समूहों के सदस्य होते हैं क्योंकि कोई भी व्यक्ति अकेले नही रह सकता। कोई व्यक्ति लम्बे समय तक एकांत में नहीं रह सकता और उसे दूसरों की जरूरत मात्र जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ही नही होती, अपितु इसलिए भी होती है क्योंकि वह एक सामाजिक प्राणाी है तथा स्वभाव से मिलनसार है। प्रत्येक व्यक्ति में दूसरों के साथ अन्तःक्रिया करते हुए जीवन जीने की तीव्र

इच्छा होती है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन व अस्तित्व को बनाये रखने के लिए समाज तथा दूसरों की आवश्यकता होती है।

समाज, समाज के एक उत्पाद के रूप में स्वयं के विकास के लिए एक अनुकूल अवसर या आधार प्रदान करता है। एक समृद्ध और विविधतापूर्ण सामाजिक जीवन व्यक्ति को न केवल अपने व्यक्तित्व को विकसित करने का अवसर प्रदान करता है अपितु समाज के साथ एकीकृत होने का भी अवसर देता है। समाज के एक अविभाज्य अंग के रूप में, किसी व्यक्ति की मान्यताएं, अभिवृत्तियॉ और विचार उसे समाज तथा समाज के दूसरे सदस्यों के साथ सम्बद्ध करते हैं। पीटर बर्जर के अनुसार, समाज केवल व्यक्ति की गतिविधियों को ही नियंत्रित नही करता अपितु एक व्यक्ति की पहचान, विचारों तथा भावनाओं को भी आकार देता है। जिस भाषा का हम प्रयोग करते हैं, जैसे कपडे हम पहनते हैं, जैसा भोजन हम खाते हैं तथा जिन मनोरजनपूर्ण गतिविधियों का हम आनंद लेते हैं, सभी समाज से ही उत्पन्न हुए हैं। इसलिए, भावनात्मक विकास, बौद्धिक परिपक्वता तथा आत्म–पूर्णता/ निपुणता केवल समाज में ही संभव है।

व्यक्तियों और समाज के मध्य सम्बन्धों के विषय में अनेक मत है। एमिल दुखाईम मानते हैं कि समाज हमारे बाहर होता है, यह हमारे समग्र जीवन का एक हिस्सा है। समाज की संस्थाएं हमारी क्रियाओं को आकार देती हैं तथा हमारी उम्मीदों को भी आकार देती है। समाज की संरचना हमारी चेतना की संरचना बन जाती है।

समाज के लिए व्यक्ति का महत्व

समाज के निर्माण के लिए सदस्यों का होना एक आधारभूत आवश्यकता है। सदस्यों के बिना समाज नही बन सकता। इस शर्त के कारण, समाज के निर्माण व अस्तित्व के लिए व्यक्तियों को प्राथमिक महत्व दिया जाता है।

व्यक्ति के लिए समाज का महत्व

जिस तरह व्यक्ति समाज के लिए बहुत महत्व रखता है, उसी तरह समाज भी व्यक्ति के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है।

अस्तित्व : प्रत्येक व्यक्ति को अपने अस्तित्व तथा अपनी आवश्यकताअें की संतुष्टि के लिए समाज की आवश्यकता होती है।

सीखना : प्रत्येक व्यक्ति समाज में रहकर प्रतिमानों, मूल्यों तथा व्यवहार के तरीके सीखता है। सीखने की यह प्रक्रिया जन्म से प्रारम्भ होती है तथा जीवन के विभिन्न चरणों तक जारी रहती है।

सामाजिक उत्पाद : जन्म के समय मनुष्य जैवकीय इकाई होते हैं। परन्तु समाज का हिस्सा बनकर वे सामाजिक प्राणी बन गये तथा समाज की सभी परम्पराओं व रीति–रिवाजों को सिखाने में व्यक्ति के जीवन में समाज एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आत्म विकास : समाज में रहते हुए आत्म का विकास होता है, क्योंकि एक व्यक्ति अपनी व दूसरों की प्रस्थितियों तथा भूमिकाओं के विषय में जागरूक हो जाता है। कोई व्यक्ति अकेले रहते हुए व्यक्तित्व व आत्म/स्व का विकास नहीं कर सकता। कैस्पर हॉसर तथा अन्ना, जो कि समाज से दूर रहे, के उदाहरणों से स्पष्ट है कि समाज के बिना मन तथा आत्म का विकास असंभव है। व्यक्ति वृहद समाज का एक भाग है तथा समाज से पृथक नहीं किया जा सकता। समाज का हिस्सा बनने पर ही किसी व्यक्ति में व्यक्तिवादिता और सामूहिकता का एक साथ विकास होता है।

बॉक्स–1

व्यक्ति के विकास में समाज के महत्व को दर्शाने वाले उदाहरण

- कैस्पर हॉसर एक जर्मन युवा था जो एक अंधेरे कमरे में पूर्ण पृथक्करण की स्थिति में पला बढा था तथा 1828 में नूरमबर्ग की गलियों में घूमता हुआ पाया गया था। उसकी आयु लगभग 18 वर्ष थी। वह मुश्किल से ही चल या बोल पाता था तथा उसका मानसिक विकास भी अपर्याप्त था। इसका कारण यह था कि वह मानव समाज का हिस्सा नहीं था और इसलिए वह अन्य साधारण व्यक्ति की तरह विकसित नहीं हो पाया।
- एक दूसरा उदाहरण एक अवैद्य बच्ची अन्ना का हैं जो कि एक छोटे, अंधेरे कमरे तक ही सीमित थी तथा अपने जीवन के पहले 5 सालों में वह केवल दूध पर जीवित थी तथा उसे सभी मानवीय संपर्कों से पूरी तरह अलग रखा गया। 5 वर्ष की आयु में जब उसे मुक्त कराया गया तब उसमें एक सामान्य 5 वर्षीय बच्चे की केवल कुछ विशेषताएं ही थी। वह न चल सकती थी और न बोल सकती थी और अपने आस–पास उपस्थित लोगो के प्रति उदासीन व अनजान थी।

उपर्युक्त उदाहरण, समाज के महत्व पर प्रकाश डालता हैं। एक समाज के भीतर ही एक व्यक्ति अपने आत्म और व्यक्तित्व का विकास करता हैं। समाज एक व्यक्ति को उसकी सामाजिक आनुवंशिकता प्रदान करता है जो उसके व्यक्तित्व को निर्धारित करता हैं तथा आकार देता हैं।

इस प्रकार, प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय/विशिष्ट हैं। व्यक्तिवादिता प्रकृति से विरासत में मिली हैं। हांलाकि, सामूहिकता समाज का उपहार हैं। व्यक्ति तथा समाज के बीच सम्बन्ध केवल भौतिक या प्रकार्यात्मक नहीं हैं अपितु समग्रता में हैं। समाज हमे विकल्प तथा अवसर के साथ साथ सीखने का क्षेत्र भी प्रदान करता हैं जो विकसित सामाजिक प्राणी के रूप में उभरने में हमारी मदद करता हैं।

समुदाय

समुदाय या कम्युनिटी शब्द लैटिन भाषा (communitas) 'कम्यूनिटास' से लिया गया हैं, जो साहचार्य या संगठित समाज के लिए प्रयुक्त व्यापक अवधारणा हैं, यह 'कम्यूनिस' (Communis) की अवधारणा पर आधारित हैं जिसका अर्थ सामान्य अथवा सांझा वस्तुओं से लिया जाता हैं।

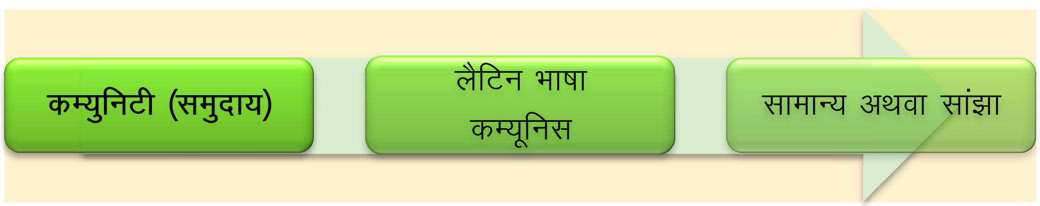

समुदाय किसी भी आकार का एक सामाजिक समूह हैं जिसके सदस्य एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में निवास करते हैं, अक्सर एक सरकार तथा एक सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक विरासत को सांझा करते हैं। समुदाय से अभिप्राय लोगों के एक समुच्चय से भी लिया जाता हैं जो समान प्रकार के कार्य या गतिविधियों में संलग्न रहते हैं जैसे प्रजातीय समुदाय, धार्मिक समुदाय, एक राष्ट्रीय समुदाय, एक जाति समुदाय या एक भाषायी समुदाय इत्यादि। इस अर्थ में यह समान विशेषताओं या पक्षों वाले एक सामाजिक, धार्मिक या व्यवसायिक समूह का प्रतिनिधित्व करता हैं तथा वृहद् समाज जिसमें यह रहता है, से स्वयं को कुछ अर्थो में भिन्न प्रदर्शित करता हैं। अतः समुदाय का अभिप्राय एक विशाल क्षेत्र में फैले लोगो से हैं जो एक या अन्य किसी प्रकार से समानताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। उदाहरण के लिए, 'अंतर्राष्ट्रीय समुदाय' या 'एन. आर.आई समुदाय' जैसे शब्द समान विशेषताओं से निर्मित कुछ सुसंगत समूहों के रूप में साहित्य में प्रयुक्त किये जाते हैं।

समाजशास्त्रीय साहित्य में, समुदाय का अभिप्राय जनसंख्या बस्तियों से हैं जैसे ग्रामीण समुदाय या नगरीय समुदाय। ऐसी बस्तियों में रहने वाली जनसंख्या के मध्य सामाजिक सम्बन्धों का नेटवर्क/जाल भिन्न प्रकार का होता हैं, जो एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र या स्थिति में उनके जीवन के विशिष्ट तरीको को निर्धारित करते हैं। इसलिए, समुदाय की

अवधारणा से अभिप्राय एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले लोगों के समूह से हैं तथा जो जीवन के समान तरीको अथवा समान जीवन शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं। हांलाकि, इंटरनेट युग के आगमन के बाद, समुदाय की अवधारणा में भौगोलिक क्षेत्र का महत्व कम हो गया हैं, अब लोग आभासी समुदायों का निर्माण करने लगे हैं, जहॉ भौतिक स्थान के बजाय ऑनलाईन मिलते हैं तथा समान हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। आधुनिक विश्व में जनजातियों को छोडकर केवल कुछ जगहों पर भौगोलिक पृथक्करण का बहुत कम महत्व रह गया हैं जोकि अपनी विशिष्ट संस्कृति तथा पहचान को बनाये रखे हुए हैं, जैसे अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह।

समुदाय की अवधारणा को कई बार पारिस्थितिकीय या जैवकीय इकाई के रूप में भी सम्बोधित किया जाता हैं। यह अक्सर उनके रहने की निकटता, निजी व्यक्तिगत सम्पर्क तथा रूचियों, परम्पराओं एवं प्रथाओं की समानता के कारण होता हैं, जो अपनत्व/अपनेपन का आधार बन जाता हैं। इस कारण से, समाजशास्त्रीय दृष्टि से समुदाय का सम्बन्ध 'हम/हमारे' से है 'मै/मेरे' से नहीं। उदाहरण के लिए, सामान्यतः हम कहते हैं 'हमारा' गॉव, 'हमारा' धर्म, 'हमारा' देश ना कि मेरा गॉव, मेरा धर्म या मेरा देश इत्यादि। इस अर्थ में, समुदाय मात्र एक भौगोलिक विचार नहीं हैं, यह एक क्षेत्र के भीतर रहने वाले लोगो के मध्य के सम्बन्धों को व्यक्त करता है, जिनमें अपनी घनिष्ठ अंतःक्रिया तथा संचार के कारण कुछ मात्रा में पारस्परिकता, संगठन तथा सहमति पायी जाती हैं। परिणामस्वरूप, एक समुदाय के सदस्यों मे कुछ मात्रा में समान चेतना तथा पहचान पायी जाती है। मैकाइवर सामान्य जीवन के एक क्षेत्र के रूप में समुदाय को परिभाषित करते हैं, जो एक गांव या कस्बा या देश या एक व्यापक क्षेत्र हो सकता हैं। यह एक आत्म–निर्भर समूह हैं जिसमें लोग न केवल बहुत से विशिष्ट हितों को साझा करते हैं अपितु जीवन की आधारभूत स्थितियों को भी। इसलिए, एक समुदाय ऐसे लोगो का एक समूह हैं जो एक भौगोलिक क्षेत्र पर रहते हैं तथा एक सामान्य जीवन जी रहे हैं।

उपरोक्त चर्चा के आधार पर समुदाय को अनेक तरीको से समझा जा सकता हैः

- एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले लोग जिनमें उद्देश्य की समानता तथा सामाजिक सम्बन्धों व जीवन जीने की एक विशिष्ट शैली हो, समुदाय कहलाता हैं। ग्रामीण व जनजातीय समुदाय इसका उदाहरण हैं। यहॉ समुदाय के पर्यावरणीय या क्षेत्रीय चरित्र पर बल दिया गया हैं।
- अंतःक्रिया और संचार के कारण लोगो में कुछ मात्रा में उत्पन्न पारस्परिकता, संगठन तथा सहमति से समुदाय बनता है। इसमें सामान्य चेतना तथा पहचान

पायी जाती हैं। जैन समुदाय, सिक्ख समुदाय इत्यादि ऐसे समुदायों के उदाहरण हैं। समुदाय को समझने का यह तरीका सम्बन्धों पर बल देता हैं।

- आधुनिक विश्व में, समुदाय की भौगोलिक पृथक्करण की विशेषता को कम महत्व दिया जाता हैं। समुदाय को एक 'सामाजिक प्रणाली' के रूप में समझा जाना चाहिए जो समान हितों वाले व्यक्तियों का एक आत्म–निर्भर समूह नहीं हैं अपितु ऐसा समूह है जिसमें विविधता, स्वःहित तथा परिवर्तन विद्यमान होता हैं। एक वृहद् समाज के एक भाग के रूप में लोग लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एकता व अनुरूपता प्रदर्शित करते हैं। भले ही, लक्ष्य एवं साधन अलग–अलग हैं, उनके हित अलग–अलग हैं परन्तु दूसरों के सक्रिय सहयोग से ही इन्हें प्राप्त किया जा सकते हैं। व्यापार समुदाय, चिकित्सा समुदाय और ऐसे ही अन्य समुदायों में ऐसा देखा गया हैं।

अतः समुदाय की परिभाषा को क्षेत्रीय चरित्र और हम की भावना तक सीमित रखने के बजाय, जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को निर्धारित करने वाले सामाजिक सम्बन्धों का एक जाल कह सकते हैं जो उनकी सभी विविधताओं के साथ सामान्य चेतना तथा साझा पहचान के उद्भव को बढावा देता हैं।

समुदाय के तत्व

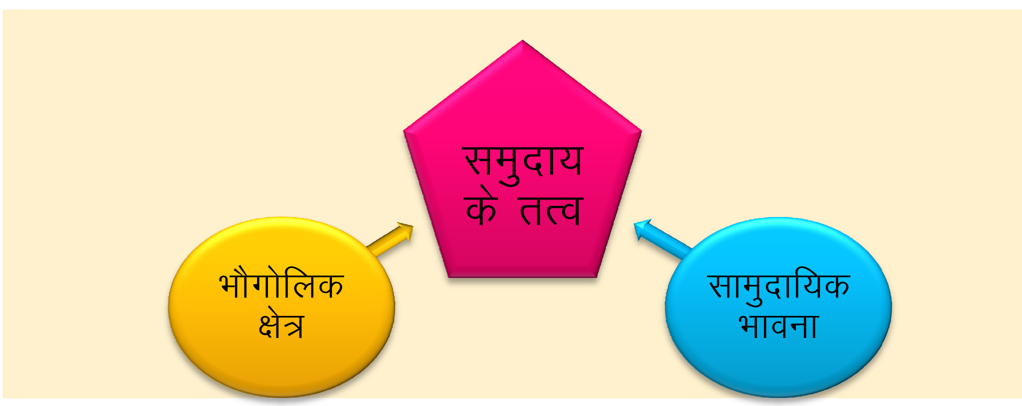

1. एक विशिष्ट सामाजिक संरचना से सम्बन्धित होने की भावना या सामुदायिक भावना रखने वाले लोगो का समुच्चय समुदाय कहा जा सकता हैं।
2. एक समुदाय की प्रतिदिन की गतिविधियॉ, कार्य तथा गैर–कार्य एक आत्म–निर्भर भौगोलिक क्षेत्र के भीतर होती हैं।

समुदाय की विशेषताएं

मैकाइवर एवं पेज (1949) ने यद्यपि समुदाय के दो महत्वपूर्ण आधार बताये हैं अर्थात् स्थानीयता (भौगोलिक क्षेत्र) तथा सामुदायिक भावना, इनकी विशेषताओं को निम्न प्रकार से समझा जा सकता हैं।

1. **लोगो का समूहः** समुदाय लोगो का एक समूह हैं जो अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सामान्य हितों को सांझा करने के कारण एक विशिष्ट कार्य में स्वयं को संलग्न रखते हैं या समान प्रकार का कार्य करते हैं।
2. **एक भौगोलिक क्षेत्र या स्थानीयता :** सामाजिक एकता का बंधन जो समुदाय के सदस्यों के बीच विद्यमान होता हैं वह उन्हें अपने स्थानीय या भौगोलिक क्षेत्र से प्राप्त होता हैं। एक समुदाय के सदस्य एक ही भौतिक स्थान पर रहते हैं जिससे समान हितों के बजाय शारीरिक निकटता के कारण वे एक दूसरे के संपर्क में आते हैं। हालांकि, एक वास्तविक, समुदाय बनने के लिए निवासियों में एकजुटता की भावना का एहसास करना तथा कम से कम कुछ मूल्यों व प्रतीको में समानता का होना अनिवार्य हैं। उदाहरण के लिए, एक छोटे गॉव में रहने वाले परिवारों के जीवन धीमी गति से चलते हुए एक—दूसरे से बंधे रहते हैं। वे कहॉनियॉ, चुटकुले, दुःख, कहावते/पौराणिक कथाएं तथा अनुभवों को बॉटते हैं। वे अपने स्वयं के समूहो के साथ चलते हैं तथा अपने क्षेत्र के आधार पर ही गतिविधियों का आयोजन करते हैं।
3. **सामुदायिक चेतनाः** सामुदायिक भावना के बिना एक समुदाय का निर्माण नहीं हो सकता। सामुदायिक भावना से अभिप्राय 'हम की भावना' से या सदस्यों के बीच एक साथ सम्बद्ध होने की भावना से हैं। इसका अभिप्राय सामान्य जीवन की अनुभूति होने से हैं, जो एक क्षेत्र के सदस्यों के बीच विद्यमान होती हैं। बहुत लंबे समय से एक क्षेत्र के भीतर सामान्य जीवन जीने के कारण उस क्षेत्र के सदस्यों के मध्य सामान्य जीवन की भावना विकसित हो जाती हैं जिससे सदस्य स्वयं को एक दूसरे से भावनात्मक रूप से जुडा हुआ अनुभव करते हैं। सदस्यों का यह भावनात्मक लगाव उन्हे अन्य समुदाय के सदस्यों से अलग करता हैं। इस प्रकार, प्रत्येक समुदाय जीवन जीने के एक सामान्य तरीके का प्रतिनिधित्व करता हैं। वे सामान्य पहचान, पारस्परिकता, चेतना तथा संगठन की एक मात्रा को व्यापक हद तक साझा करते हैं। इसलिए, यह समानता, जो सामूहिक चेतना का आधार है, व्यापक रूप से, घनिष्ठ अन्तःक्रिया व संपर्को के कारण एक स्थानीय या भौगोलिक क्षेत्र के भीतर उनमें उभरती हैं।

4. **एक सामान्य संस्कृतिः** एक समुदाय का सार सम्बद्धता की भावना, सामान्य हित, साझा नैतिक मूल्य तथा भावनाएं हैं। एक समुदाय के सदस्य समान परम्पराओं, प्रथाओं, मूल्यों तथा प्रतिमानों एवं इसके अतिरिक्त जीवन शैली को सांझा करते हैं। वे सामान्य अनुभवों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो विश्व को समझने के उनके तरीको को निर्धारित करते हैं जैसे–जैसे समुदाय का आकार बढता है, सामाजिक नेटवर्क या सम्बन्धों के क्षेत्र का भी विस्तार होता है तथा इसी प्रकार, परम्पराओं, प्रथाओं व अन्य पक्षों का भी विस्तार होता हैं।
5. **स्वाभाविकताः** समुदायों का स्वाभाविक विकास होता हैं। न तो यह मानव इच्छा का और न ही सरकार के किसी प्रयास का परिणाम होता है। वे स्वाभाविक रूप से विकसित होते हैं। एक समुदाय स्वयं को एक नियोजित तरीके या किसी अन्य तरीके से नहीं अपितु एवं स्वाभाविक तरीके से स्थापित करता हैं। इसकी उत्पत्ति स्वाभाविक है तथा अपने सदस्यों के समग्र जीवन को सम्मिलित करता हैं। यह सापेक्षिक रूप से स्थिर तथा स्थायी हैं। जीवन को नियंत्रित करने वाले नियम भी व्यवहारों, जनरीतियों, प्रतिमानों, प्रथाओं इत्यादि की प्रक्रिया के माध्यम से समय के साथ स्थापित हो जाते हैं।

गतिविधि– 3.4

- समुदाय में 'बैसाखी' तथा 'लोहडी' मनाने के महत्व पर चर्चा कीजिए।
- कृषि तथा संस्कृति के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। उचित उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

समाज एवं समुदाय में भिन्नताएं

समाज	समुदाय
1. समाज सामाजिक सम्बन्धों का एक जाल हैं।	1. समुदाय 'हम की भावना' के साथ एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले लोगो का समूह हैं।
2. समाज अर्मूत हैं।	2. समुदाय मूर्त हैं।
3. समाज के लिए एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र होना आवश्यक नहीं हैं।	3. समुदाय एक क्षेत्रीय इकाई हैं।

4. समाज में सामुदायिक भावनाएं हो भी सकती हैं और नहीं भी।	4. सामुदायिक भावना के बिना समुदाय का निर्माण नहीं हो सकता।
5. समाज एक विस्तृत इकाई है। एक समाज मे एक से अधिक समुदाय हो सकते हैं।	5. समुदाय समाज की तुलना में छोटा होता हैं। यह समाज का एक भाग हैं।
6. समाज में समानता एवं भिन्नता दोनो होती हैं।	6. समुदाय में भिन्नता की तुलना में समानता अधिक महत्वपूर्ण हैं।

समिति

एक विशिष्ट लक्ष्य या लक्ष्यों को पूरा करने के लिए जब दो या अधिक व्यक्ति एक दूसरे के साथ सहयोग करते हैं तो उस समूह को समिति की संज्ञा दी जाती हैं। यह एक प्रकार की सहकारी इकाई होती हैं जिसका अपना संगठन तथा नियम एवं विनियम होते हैं। लोगो की विभिन्न आवश्यकताएं, इच्छाएं तथा हित होते हैं जिन्हे पूरा करना होता हैं। इन आवश्यकताओं को पूरा करने के तीन तरीके हैं। पहला, व्यक्ति दूसरों की परवाह किये बिना अपने ढंग से स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकते हैं। यह एक असामाजिक विधि है तथा इसमें कई कमियॉ/सीमाएं हैं। दूसरा, लोग एक–दूसरे के साथ संघर्ष करके अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। यह भी रचनात्मक दृष्टिकोण नहीं हैं। अंत में, लोग अपने लक्ष्यों को सहयोग तथा पारस्परिक सहायता के माध्यम से प्राप्त करने का प्रयास कर सकते हैं। यह सहयोग समिति के संदर्भ में हैं। राजनीतिक समीतियां, धार्मिक समितियां छात्र समितियां, श्रमिक समितियां, आर्थिक समितियां तथा अन्तराष्ट्रीय समितियां इत्यादि समिति के कुछ उदाहरण हैं।

इस प्रकार, एक समिति एक विशिष्ट उद्देश्य या अनेक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संगठित लोगों का एक समूह हैं। एक समिति का निर्माण करने के लिए (अ) लोगो का एक समूह होना चाहिए, (ब) ये लोग संगठित होने चाहिए, अर्थात, समूहो में उनके आचरण के लिए कुछ नियम होने चाहिए तथा (स) उसे आगे बढाने के लिए एक सामान्य तथा एक विशिष्ट उद्ददेश्य होना चाहिए। परिवार, चर्च, श्रमिक संघ, संगीत क्लब सभी समिति के उदाहरण हैं।

एक व्यक्ति एक क्रिकेट समिति का सदस्य, एक महिलाओं की समिति का सदस्य तथा एक फेसबुक प्रयोग करने वाली समिति का सदस्य हो सकता हैं। उपर्युक्त सभी संदर्भो में 'समिति' शब्द का प्रयोग क्यों किया गया है? ऐसे शब्दों का प्रयोग अक्सर तब किया जाता हैं जब हम व्यक्ति तथा उसकी गतिविधियों के विषय में जानने का प्रयास करते हैं।

राजनीतिक समितियां

श्रमिक समितियां

आधुनिक जटिल समाजों में, समुदाय शब्द की तुलना में समिति शब्द अधिक प्रचलन में हैं। ऐसा क्यों हैं ? क्या वह समाज व्यक्तियों की आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ हैं या कुछ और हैं? कोई भी अपने कुछ गुणों या हितों के आधार पर एक समूह का सदस्य बन जाता हैं उदाहरण के लिए, अगर एक व्यक्ति को क्रिकेट में रूचि है, या महिलाओं के मुद्दों में रूचि हैं, तो वे क्रमशः क्रिकेट तथा महिला समिति का सदस्य बन सकता हैं। अथवा कोई महत्वपूर्ण सूचनाएं एकत्र करने या पुराने दोस्तों के साथ पुनः जुडनें के लिए फेसबुक की सदस्यता ग्रहण कर सकता हैं। इसलिए, समितियां व्यक्ति के विशिष्ट हितों को बढावा देती हैं।

सभी समितियां एक समाज के सदस्यों के विशिष्ट हितों को पूरा करने के लिए अस्तित्व में आती हैं। वर्तमान आधुनिक विश्व में, हितों को स्वतंत्र रूप से पूरा नहीं किया जा सकता और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को दूसरों के सहयोग की आवश्यकता होती हैं। ऐसा करने की प्रक्रिया में, कभी–कभी दूसरों के साथ संघर्ष वांछित लक्ष्य की प्राप्ति में सहायता कर सकते हैं परन्तु यह विधि एक व्यवस्थित समाज के अस्तित्व पर सवाल उठाती हैं। इसलिए, जब व्यक्ति अपने विशिष्ट हितों को पूरा करने के लिए या अपने वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एकजुट होते हैं तब वे समिति नामक समूह के रूप में संगठित होते हैं। इसलिए, समिति एक विशिष्ट उद्देश्य या उद्देश्यों की एक सीमित संख्या के लिए एकजुट लोगो का एक समूह हैं। समिति के लक्ष्य या उद्देश्य जटिल हो सकते हैं जैसे एक श्रमिक संघ जो कि न केवल श्रमिकों के हितों को आगे बढाता है अपितु उन्हें सुरक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण इत्यादि भी प्रदान करता हैं।

समिति की विशेषताएं

प्रत्येक समिति अपने सदस्यों के हितों को पूरा करने का प्रयास करती है जो एक अकेला व्यक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। समिति की विशेषताओं को निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता हैं:

1. व्यक्तियों का संकलन: एक समिति लोगो का एक संकलन हैं। बिना व्यक्तियों के समिति नहीं हो सकती। हालांकि, सभी समूह समिति नहीं होते क्योंकि एक समिति मूल रूप से एक संगठित समूह हैं।

2. स्वैच्छिक सदस्यता: समितियां अक्सर स्वैच्छिक होती हैं इसकी सदस्यता व्यक्ति के हित या उद्देश्य पर निर्भर करती है जिसके लिए वह एक समिति का सदस्य बनता हैं। एक व्यक्ति सदस्य बनता हैं क्योंकि वह ऐसा चाहता हैं और वह इसे पसन्द करता हैं तथा यदि कोई समिति के प्रति नापसंद की भावना विकसित कर लेता हैं तो वह उसे त्यागने या छोड देने के लिए पूरी तरह से स्वतन्त्र हैं।

3. सामान्य हित: समितियां निश्चित लक्ष्यों या उद्देश्यों के साथ सदस्यों के चेतन तथा सजग प्रयासों के द्वारा अस्तित्व में आती हैं। तदानुसार राजनीतिक हित वाले लोग राजनीतिक समिति में सम्मिलित हो सकते हैं, तथा धार्मिक हित वाले लोग धार्मिक समितियों में सम्मिलित हो सकते हैं तथा ऐसे ही अन्य समितियों में। आमतौर पर, समिति के उद्देश्य की प्राप्ति के साथ ही इसका अस्तित्व समाप्त हो सकता हैं।

4. नियम तथा अधिनियम: समिति का एक संविधान होता है जो इसके कार्यों को करने की प्रक्रिया, नियमों तथा अधिनियमों की विवेचना करता हैं। सदस्य लक्ष्यों या हितों की प्राप्ति के लिए इन प्रक्रियाओं का पालन करते हैं। समितियां व्यवस्थित या अव्यवस्थित ढंग से संरचित होती हैं। औपचारिक नियम समिति की गतिविधि को परिभाषित करते हैं। इसमें औपचारिक नियम, कार्यालय, पालन करने की प्रक्रियाएं तथा लक्ष्य जो प्राप्त किये जाने हैं, सम्मिलित हैं। धार्मिक समितियां अव्यवस्थित या शिथिल तरीके से संरचित होती हैं जबकि व्यापार समितियों की संरचना अधिक कठोर होती है, क्योंकि धार्मिक समितियां परम्पराओं तथा प्रथाओं से निर्देशित होती हैं तथा व्यापार समितियां बहुत हद तक औपचारिक नियमों से निर्देशित होती हैं।

गतिविधि– 3.5

- अपने पडोस में स्थित विभिन्न समितियों के बारे में पता लगाइये, जैसे आवासीय कल्याण समितियां, युवा क्लब, वरिष्ठ नागरिकों के संगठन इत्यादि।
- अपने शहर/कस्बे/गॉव में स्थित समान प्रकार की समितियों के नाम एकत्र कीजिए।

- समितियों द्वारा किये जाने वाली गतिविधियों के बारे में पता लगाऐं

समुदाय तथा समिति में अन्तर

समुदाय	समिति
• व्यक्ति जन्म से ही एक समुदाय का सदस्य बन जाता हैं। • समुदाय में सामान्य हित होते हैं। • एक समुदाय स्थिर तथा स्थायी होता हैं। • एक समुदाय को वैधानिक दर्जा प्राप्त नहीं होता। • समुदाय में अनेक समितियां सम्मिलित होती हैं।	• एक समिति की सदस्यता स्वैच्छिक होती हैं। • समिति में कुछ विशिष्ट हित होते हैं। • समिति स्थिर या दीर्घकालिक हो भी सकती है और नहीं भी। • एक समिति को वैधानिक दर्जा/प्रस्थिति प्राप्त होती हैं। • एक समिति समुदाय के भीतर एक संगठन हैं।

समाज तथा समिति में अन्तर

समाज	समिति
• समाज स्वाभाविक उद्विकास का परिणाम हैं।	• समिति जानबूझकर या कृत्रिम रूप से निर्मित होती हैं।
• समाज की सदस्यता अनिवार्य हैं।	• समिति की सदस्यता स्वैच्छिक हैं।
• समाज का लक्ष्य अपने सदस्यों के सामान्य हित को पूरा करना हैं।	• समिति का निर्माण कुछ विशिष्ट हितों की पूर्ति के लिए होता हैं।
• समाज में सहयोग तथा संघर्ष दोनो होते हैं।	• समिति सहयोग पर आधारित हैं।
• समाज संगठित या असंगठित हो सकता हैं।	• समिति संगठित होनी चाहिए।
• समाज समिति से पुराना है, मनुष्यों की उत्पत्ति के समय से ही इसका अस्तित्व हैं।	• समितियां हाल ही की घटना हैं इनकी उत्पत्ति तब हुई जब कुछ विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मनुष्यों ने स्वयं को संगठित करने का प्रयास किया।

निष्कर्ष

अतः समाज, समुदाय तथा समितियां मूलभूत इकाईयां हैं जो हमें व्यक्ति तथा सामाजिक प्रक्रियाओं के मध्य सम्बन्धों को स्थापित करने का अधार प्रदान करती हैं। प्रत्येक इकाई दूसरे के साथ सम्बन्धित है, फिर भी वे एक दूसरे से अनेक प्रकार से भिन्न हैं। समाजशास्त्र को समझने के लिए इन अवधारणाओं के अध्ययन को महत्व दिया जाना चाहिए।

शब्दावली

- **संग्रहः** लोगो का संकलन जो एक ही स्थान पर एक ही समय पर होते हैं परन्तु एक दूसरे के साथ उनमें कोई संपर्क या सम्बन्ध नहीं होता।
- **समितिः** लोगो का एक संगठित निकाय/समूह जिनके हित, क्रियाएं, या उद्देश्य समान होते हैं।
- **समुदायः** यह अन्तःक्रियाओं, मानव व्यवहारों का एक समुच्चय है जो इसके सदस्यों के लिए अर्थपूर्ण तथा अपेक्षित हैं। यह केवल क्रियाओं को सम्मिलित नहीं करता अपितु व्यक्तियों के मध्य सांझा अपेक्षाओं, मूल्यों, विश्वासों और अर्थो पर आधारित क्रियाओं को भी सम्मिलित करता हैं।
- **सहयोगः** सामान्य या पारस्परिक लाभों के लिए एक साथ काम करने या क्रिया करने की प्रक्रिया।
- **गतिशीलः** एक प्रक्रिया या प्रणाली जो निरन्तर परिवर्तनशील, सक्रिय या प्रगति को प्रदर्शित करे।
- **संस्थाः** किसी समुदाय के भीतर व्यक्तियों के एक समुच्चय/समूह के व्यवहार को नियंत्रित करने वाली सामाजिक व्यवस्था का एक तंत्र या स्थायी संरचना।
- **क़ानूनः** एक प्रतिमान जो कि लिखित हैं तथा एक सरकारी एजेन्सी द्वारा लागू किया जाता है।
- **समाजिक सम्बन्धः** समाज के दो या अधिक सदस्यों के बीच सम्बन्ध।

- **समाजः** लोगो का एक समूह जो एक विशिष्ट क्षेत्र, संस्कृति या सामाजिक सम्बन्धों को सांझा करता हैं।

- **हम की भावनाः** एक मजबूत सम्बन्ध की भावना जिसके आधार पर एक समूह के सदस्य स्वयं को पहचानते हैं तथा दूसरों से स्वयं को अलग करते हैं। यह उनके मध्य एकता की मजबूत भावना को प्रदर्शित करती हैं।

प्रश्न–अभ्यास

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 1–15 शब्दों के बीच दीजिएः

1. समाज का अर्थ बताइये।
2. समाज और समुदाय किन शब्दों से लिये गये हैं ?
3. किसने कहा, 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं ?
4. सरल युग्म समाज, युग्म समाज, द्वि–युग्म समाज तथा त्रि–युग्म समाज का वर्गीकरण किसने दिया ?
5. समिति किसे कहते हैं ?
6. खुला समाज किसे कहते हैं ?

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 30–35 शब्दों में दीजिएः

1. समाज की तीन विशेषताएं बताईये।
2. समाज के प्रकारों का वर्णन कीजिए।
3. समुदाय किसे कहते हैं ?
4. समाज किस प्रकार समुदाय से भिन्न हैं ? दो अन्तर बताईये।
5. समिति को परिभाषित कीजिए तथा इसकी विशेषताओं की चर्चा कीजिए।
6. समुदाय तथा समिति के मध्य दो अन्तर बताईये।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 75–85 शब्दों में दीजियेः

1. मानव समाज पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. अगस्त कोंत द्वारा प्रस्तुत मानव समाज के तीन चरणों का नाम बताईये।
3. समुदाय के प्रमुख आधार कौन से हैं ?
4. समिति के तीन उदाहरण दीजिए।
5. टॉनीज द्वरा प्रस्तत समाज के प्रकार कौन से हैं ?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 250–300 शब्दों में दीजिएः

1. समाज शब्द से आप क्या समझते हैं ? एक विस्तृत टिप्पणी लिखिए।
2. व्यक्ति तथा समाज अन्तःसम्बन्धित हैं। तर्क दीजिए।
3. समुदाय से आप क्या समझते हैं ? समुदाय की विशेषताओं की विस्तृत चर्चा कीजिए।
4. समुदाय को परिभाषित कीजिए। समुदाय किस अर्थ में समाज से भिन्न हैं, चर्चा कीजिए।
5. समुदाय तथा समिति के मध्य अन्तर कीजिए।
6. समाज तथा समिति के मध्य अन्तर की चर्चा कीजिए।

अध्याय 4

सामाजिक समूह

मुख्य बिन्दुः

4.1 अर्थ एवं विशेषताएं

4.2 प्रकार—प्राथमिक एवं द्वितियक समूह

4.3 अन्तः समूह एवं बाह्य समूह

परिचय

सारे संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं हैं, जो किसी समूह का सदस्य न हो। बल्कि सभी मानवीय प्राणी समूहो में रहते हैं। समाजशास्त्र के विषय में समूह का केन्द्रीय स्थान हैं। बहुत समाजशास्त्रियों का मत हैं कि समाजशास्त्र वह विज्ञान हैं, जो सामाजिक समूहों का अध्ययन करता हैं। प्रत्येक समाजों में चाहें वे प्राचीन, समांतवादी या आधुनिक हो, एशिया, यूरोप या अफ्रीकी हो, हर जगह मानवीय समूह एवं सामुदायिकता पाई जाती हैं। लेकिन यह भी सत्य हैं कि यह मानवीय समूह या सामुदायिकता अपनी संस्कृति की विभिन्नता के अनुसार पाए जाते हैं।

सामाजिक समूह की अवधारणा

व्यक्ति एक सामाजिक जीव हैं वह अकेला नहीं रह सकता। ज्यादातर व्यक्तियों की क्रियाएँ उनके समूह के सदस्य होने से शुरू होती हैं जैसे परिवार में। जब व्यक्ति बाहर जाता हैं, वह कई अन्य व्यक्तियों के साथ अंतःक्रियाएँ करता हैं और अपने सामान्य विचारों तथा भावनाओं को सांझा करता हैं। अन्य शब्दों में, यह सभी आदमियों तथा औरतों में सामाजिक सदस्य के तौर पर अन्यों के साथ अंतक्रियात्मक प्रकिया द्वारा मिलकर रहने की क्षमता हैं।

सामाजिक समूह व्यक्तियों का सगंठन हैं जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य अंतःक्रियाएँ पाई जाती हैं। इसमें वे व्यक्ति आते है, जो एक दूसरे के साथ अंतःक्रिया करते हैं, और अपने को अलग सामाजिक इकाई मानते हैं। समूह में सदस्यों की संख्या को दो से सौ व्यक्तियों की श्रेणी में रखा जा सकता हैं। इसके साथ, सामाजिक समूह की प्रकृति गतिशील होती हैं, इसकी गतिविधियाँ में समय–समय पर परिवर्तन आता रहता हैं। सामाजिक समूह के अन्तर्गत व्यक्तियों में अंतक्रियाएँ व्यक्तियों को अन्यों से पहचान के लिए भी प्रेरित करती हैं। समूह, आमतौर पर स्थिर तथा सामाजिक इकाई हैं। उदाहरण के लिए, परिवार, समूदाय, गाँव आदि, समूह विभिन्न संगठित क्रियाएँ करते हैं, जोकि समाज के लिए महत्वपूर्ण हैं।

इकाई, वर्ग और समूह

हमें सामाजिक समूह को सगंठन एवं सामाजिक वर्ग से भिन्न करने की जरूरत हैं। व्यक्तियों का कोई भी इकट्ठ सामाजिक समूह बनाए, यें जरूरी नहीं हैं। यह इकट्ठ सामान्यतः व्यक्तियों का केवल सगंठन हैं, जो एक जगह पर एक ही समय में होते हैं, लेकिन वे एक दूसरे के साथ निश्चित संबंध साझें नहीं करते। उदाहरण के लिए, लोगों के इक्ट्ठ में हम उन्हें शामिल करते हैं, जो बस स्टैंड़ पर बस का इंतजार करते हैं, जब लोग इकट्ठे होते हैं लेकिन उनका न तो कोई निश्चित उद्देश्य होता हैं, और न ही एक–दूसरे के साथ अंतःक्रिया होती हैं। इसका अर्थ है कि सामाजिक समूह के लिए कुछ आवश्यक शर्तें आवश्यक स्थिति का होना जरूरी हैं। इस प्रकार, हम कह सकते हैं की सामाजिक समूह के लिए विशेष उद्देश्य एंव अंतक्रियाएँ महत्वपूर्ण तत्व हैं।

सामान्यतः सामाजिक वर्ग भी लोगों के द्वारा ही बनता हैं। उदाहरण के लिए, वह लोग जिसकी समान उम्र समूह, जाति, लिंग एवं व्यवसाय आदि होती हैं वो सामान्य वर्ग के सदस्य होते हैं। समान सामाजिक वर्गो के सदस्यों के लिए यह आवश्यक नहीं हैं कि वे आपस में अंतःक्रियाएँ करे और एक जगह पर इकट्ठे हो। यह तब होता है जब व्यक्तियों की संख्या पुनरावृत्ति अंतःक्रिया के कुछ संगठित प्रारूपों को सांझा करते हैं। इस प्रकार, उन्हें एक सामाजिक समूह का नाम दिया जा सकता है। परिवार, गाँव, स्कूल, कॉलेज एंव क्लब इत्यादि सामाजिक समूह के कुछ उदाहरण हैं। अतः समाज सामाजिक समूह का विस्तृत रूप हैं।

क्रियाकलापः 4.1

इकट्ठ, वर्ग एंव सामाजिक वर्ग को प्रदर्शित करते हुऐ एक परियोजना बनाओ।

सामाजिक समूह की विशेषताएँ

एक सामाजिक समूह की कई विशेषताएँ जिसके निम्न प्रकार हैं।

1. व्यक्तियों का समूहः यह व्यक्तियों का वह समूह हैं, जिनकी संख्या भिन्न–भिन्न होती हैं। सामाजिक समूह बनाने के लिए कम से कम दो व्यक्तियों का होना आवश्यक हैं। व्यक्तियों के बिना समूह नहीं बन सकता। जिस प्रकार विघाथियों तथा अध्यापकों के बिना स्कूल नहीं बन सकता, उसी प्रकार व्यक्तियों की उपस्थिति के बिना समूह नहीं बन सकता।

2. अन्तःक्रियाः समूह के सदस्यों का आपस में अंतक्रियाएँ करना समूह का तत्व है। सामाजिक समूह इस प्रकार परस्पर–वार्तालाप की व्यवस्था को दर्शाता हैं। अंतक्रियाएँ सुव्यवस्थित तौर पर हो जरूरी नहीं हैं। लेकिन समय के दौरान जरूर होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, ज्यादा सदस्यों वाले दूर के स्थानों पर रहने वाले लोगों का परिवार आपस में कभी–कभी मिलता हैं। लेकिन उन का आपस में विचारों का आदान–प्रदान होता रहता हैं। वे दूसरे परिवारों के साथ आपस में अपनेपन की भावना बनाये रखते हैं। जबकि समूह में परस्पर वार्तालाप शारीरिक (अपनत्व वाला) या प्रतीकात्मक हो सकता हैं। प्रतीकात्मक वार्तालाप में आमने–सामने के वार्तालाप शामिल नहीं होता। जैसे कि एक परिवार के सदस्यों में आपसी वार्तालाप होता हैं। आजकल ये लोग मोबाइल फोन, इनटरनेट या अन्य आधुनिक संचार के साधनों द्वारा परस्पर वार्तालाप से जुड़े हुए हैं।

3. सदस्यता के प्रति जागरूकताः किसी समूह से संबंधित लोगो के प्रति जागरूकता भी एक समूह का महत्वपूर्ण अंग है। एक समूह के सदस्य इस बात से भली भांति परिचित होते हैं कि उनके एक रेखा समुह के सभी सदस्यों और गैर सदस्यों में भिन्नता है तथा इसके प्रति वे जागरूक होते हैं। गिंड़िंस के अनुसार, "अलग पहचान की चेतना" के कारण ऐसा हो सकता है।

4. समूह के हितः समूह का सदस्य महसूस करता हैं कि वह किसी ऐसी संस्था का एक अंग है, जो उससे बड़ी हैं। समूह किसी समय स्वतंत्र रूप से किसी सदस्य के हितों की परवाह किये बिना कार्य करता हैं। दूसरे शब्दों में, समूह हित आवश्यक रूप से हमेशा, निजी हित से महत्वपूर्ण होते हैं। सदस्यों की निजी स्वंतत्रता के मुकाबले एक समूह में सामाजिक जीवन का महत्व ज्यादा होता हैं। समाजशास्त्री दुर्खीम ने दलील दी है कि समाज सदा एक व्यक्ति से कही ज्यादा महत्वपूर्ण होता हैं।

5. हम की भावनाः हम की भावना का अर्थ सदस्यों की ऐसी क्षमता से हैं, जो उन्हें समूह से सम्पूर्ण रूप से जुड़ें होने की पहचान दिलवाता हैं। यह समूह की भावना दर्शाता हैं। लोग एक दूसरे से मिलते तथा बातचीत करते हैं, लेकिन इसके बावजूद उन सब की एक ही पहचान नहीं होगी तो समूह का अस्तित्व नहीं रह सकता। उदाहरण के तौर पर, ग्राहक तथा दुकानदार एक ही स्टोर में मिलते हैं, आपस में बात करते हैं, लेकिन वे समूह नहीं बनाते, क्योंकि वे एक दूसरे की सांझी पहचान के बारे में नहीं जानते। दुसरी तरफ एक खास जाति के सदस्य अपने समूह की पहचान और सबंध की भावना जो उनके बीच 'हम भावना' पैदा करती हैं, के बारे में जागरूक होते हैं इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि हम की भावना सामाजिक समूह का एक आवश्यक लक्षण होता हैं।

6. पारस्परिकताः समूह में सदस्यों में पारस्परिकता (देन और लेन का संबंध) पाई जाती हैं। परिवार का उदाहरण लें, परिवार में सदस्य आपस में बातचीत करते हैं। पिता, बच्चों का संरक्षण प्रदान करता हैं, उसी प्रकार बच्चे अपने पिता की आज्ञा का पालन तथा उनकी इज्जत करते हैं। इसी प्रकार स्कूल में अध्यापक विद्यार्थियों को स्कूल के नियमों का पालन करना इनाम तथा सजा द्वारा करवाते हैं।

7. सदस्यों की निश्चित भूमिकाएः प्रत्येक समूह में सदस्यों को निश्चित भूमिकायें अदा करनी होती है। उसी प्रकार प्रत्येक सदस्य को समूह में एक प्रस्थिति प्रदान किया जाता है। प्रस्थिति का अर्थ दूसरे सदस्यों के साथ संबंधों की स्थिति होती है। प्रस्थिति सदा भूमिका से संबंधित होती है। प्रस्थिति कभी भी किसी कार्य के बिना नहीं होती तथा वह कार्य ही भूमिका कहलाती है। समूह का प्रत्येक सदस्य अपने स्तर एवं भूमिका के अनुसार ही कार्य करता है।

8. समूह के नियमः नियमों का एक संग्रह होता हैं, जिनका पालन करना प्रत्येक समूह के सदस्यों के लिए जरूरी माना जाता हैं। कानून या नियम ही संस्था की कार्य–प्रणाली के नियम होते हैं। नियम, लोक–संचार, परम्परायें, लोक–प्रथा, रीति–रिवाज तथा कानून के रूप में हो सकते हैं। ये लिखित या अलिखित हो सकते हैं। समूह का कोई सदस्य यदि

उन नियमों का उल्लंघन करता हैं तो वह सजा का हकदार भी होता है तथा सजा भी नियमों द्वारा ही तय की जाती हैं।

9. समूह नियन्त्रण: समूह सदा अपने सदस्यों की क्रियाओं पर नियन्त्रण रखता हैं। नियन्त्रण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रकार का होता हैं। लेकिन यह सदा वर्तमान रूप में होता हैं। कहने का अर्थ यह हैं कि यह नियन्त्रण समय, स्थान तथा स्थिति अनुसार होता हैं। व्यक्ति इसका पालन करता हैं तथा समूह के हितों की रक्षा के लिए अपने हितों की कुर्बानी दे देता हैं। व्यक्ति इन नियमों के दबाव के प्रति या तो सिर झुकाता हैं या फिर इनके विरूद्व विद्रोह करता हैं। विद्रोह में दो प्रकार के रूप धारण कर सकते हैं। विद्रोही व्यक्ति स्वंय को उस समूह की सदस्यता से वैराग्य धारण करके या स्वेच्छापूर्ण छोड़ सकता हैं या फिर अपनी इच्छा के अनुसार कार्य कर सकता हैं।

10. एकता तथा अखण्ड़ता: एक समूह के सदस्यों में एकता तथा अखण्ड़ता का बन्धन सा होता हैं। समूह की एकजुटता, सुदृढ़ता तथा इसके सदस्यों की अंतःक्रिया की जजबाती गुणवता पर आधारित होती हैं तथा उनको परस्पर निकट लाती हैं। एक परिवार, कुलीन समूह, पड़ोस तथा जाति का एक समूह एक उच्च एकीकृत तथा अखण्ड़ समूह के उदाहरण हैं।

11. गतिशीलता: सामाजिक समूह गतिशील होता हैं, न कि स्थायी या रूका हुआ। यह या तो आन्तरिक दबाव या बाह्य दबाव से बदल सकता हैं। अन्य शब्दों में, इनमें बदलाव होता रहता हैं अर्थात् ये गतिशील होते है। सामाजिक समूहों के रूप तथा गतिविधियाँ परिवर्तन हो सकते हैं। कभी–कभी परिवर्तन बहुत धीरे–धीरे होता हैं तथा कभी परिवर्तन बहुत तेजी से होता हैं।

क्रियाकलाप–4.2

अन्य प्राणी विज्ञान के बारे में जानों, जो मानवीय प्राणियों की तरह समूहों में रहते हैं।

समूहों के प्रकार

भिन्न–भिन्न समाजशास्त्रीयों ने सामाजिक समूहों को भिन्न–भिन्न किस्मों में वगीकृत किया हैं:–

सी.एच. कूले ने इस को प्राइमरी तथा सकैंडरी समुहों में बांटा है, डबलयु जी समनर ने इन को आतः समूह तथा बाहय समूह में वर्गीकृत किया है और रार्बट के मार्टन– ने संदर्भ समूह का नाम दिया है।

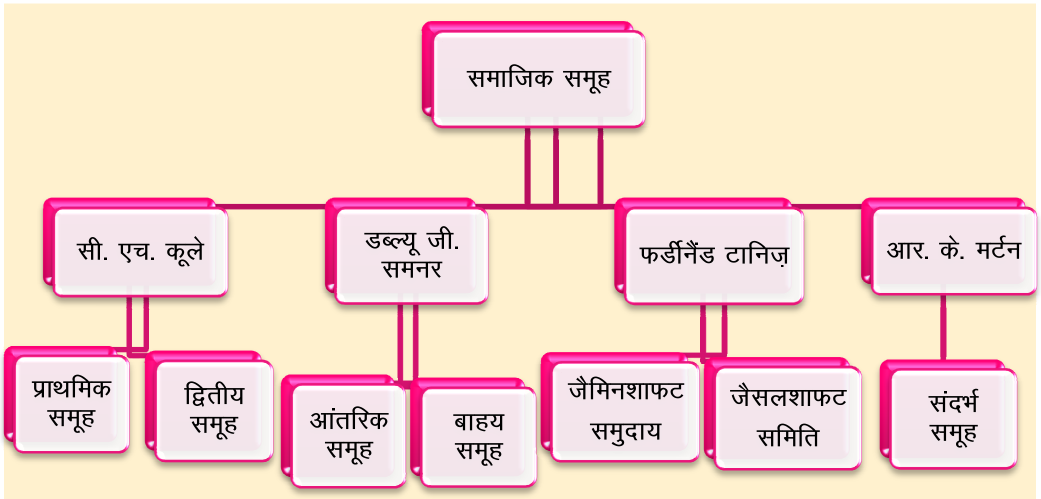

प्राथमिक समूह

प्राथमिक समूह की धारणा सी• एच• कुले द्वारा प्रस्तुत की गई हैं। सामाजिक समूह कई अर्थो में प्राथमिक होते हैं, मुख्यतः इस रूप में कि ये व्यक्ति के सामाजिक स्वभाव तथा आदर्शो को बनाने वाले होते हैं। इसके सम्पूर्ण अर्थ को व्यक्त करने वाला सब से आसान तरीका हैं कि इसमें 'हम' (हम–भावना) पाया जाता हैं। इसलिए प्राथमिक समूह आकार में छोटे होते हैं तथा इसमें आमने–सामने वाले अथवा सजीव संबंध, बहुत गहरा आंतरिक लगाव तथा सहयोग की विशेषता पाई जाती हैं। प्राथमिक समूहों को हम समूह भी कहा जाता हैं। ये विश्वभर में व्यक्ति के स्वभाव तथा मानव–आदर्शो का आधार होते हैं। ये मानवीय गुणों जैसेः–प्रेम, सहयोग, हमदर्दी, न्याय तथा आदर्श–कार्य की जन्म–भूमि होते हैं। मैकाइवर का मत है कि यह हमारी लोक प्रथा तथा वफादारी को जन्म देने वाला तथा पोषण करने वाला समूह हैं। परिवार, पड़ोस तथा खिलाड़ियों का समूह प्राथमिक समूह के उदाहरण हैं।

परिवार

क्रीडा समूह

प्राथमिक समूह की विशेषताएं

प्राथमिक समूह की विशेषताएं दो प्रकार की होती है किग्सले ड़ेविस के अनुसार ये आंतरिक या बाहरीय (बाहय) होती है। प्राथमिक समूह की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएं होती है।

बाहय विशेषताएं

1. छोटा आकार: प्राथमिक समूह का आकार बहुत छोटा होता हैं क्योकि एक बड़े समूह में सीधे तौर पर तथा व्यक्तिगत रूप में परस्पर सम्बन्ध रखना असंभव होता हैं। जब समूह में सदस्यों की संख्या बढ़ जाती हैं तो आपस में गहरे संबंध कम हो जाते हैं। दूसरे शब्दों में, जितना समूह का आकार छोटा होता हैं उतना ही गहरा संबंध ज्यादा होता हैं। उदाहरण के तौर पर, यदि दर्शक या भीड़ ज्यादा हैं तो हर व्यक्ति भाषणकर्ता को अच्छी तरह न तो सुन सकता है और न ही उसे अच्छी तरह देख सकता हैं। प्राथमिक समूह छोटे हैं जहा हम उन्हे सुन सकते हैं और अच्छी तरह देख सकते हैं। सभी प्राथमिक समूह छोटे होते हैं परन्तु छोटे समूह, प्राथमिक समूह नहीं होते। जैसे डॉक्टर तथा रोगी के संबंध को प्राथमिक समूह का नाम नहीं दिया जा सकता।

2. शारीरिक निकटता: शारीरिक निकटता या परस्पर गहरे संबंध का अर्थ हैं कि एक ही समय के दौरान प्राथमिक समूह बहुत ही नजदीक तथा गहरे संबंधों में रहते हैं अर्थात प्राथमिक समूह में परस्पर संबंध बहुत आत्मीयपूर्ण होते हैं। यदि समूह के सदस्य परस्पर गहरे संबंधों वाले न हो तो एक दूसरे के साथ विचारो का आदान–प्रदान करना तथा परस्पर मदद करना अंसभव होगी। नजदीकी सम्पर्क या संबंध परस्पर आमने–सामने की बातचीत के लिए बेहतर संभावना रखते हैं। एक दूसरे को प्रेम से मिलना तथा आपस में बातें करना, विचारों, दलीलों तथा जजबातों के आदान–प्रदान को उत्साहित करते हैं। आपस में प्रेम भरी छेड़–छाड़ (हँसी मजाक), खाना–पीना तथा इकट्ठे रहना, खेलना, यात्रा करना तथा इकट्ठे बैठकर पढना, बाह्य नजदीकी संबंधों के कुछ चिन्ह् हैं। सामाजिक चिन्तक डेविस का कथन हैं कि प्राथमिक समूह सीधे सम्पर्क के लिए सीमित नहीं हो सकता। बहुत ही गहरे तथा नजदीक संबंध ऐसे भी हो सकते है, जिनका सीधे रूप में सम्पर्क नहीं भी होता। कल्मी मित्र या फेस बुक मित्र, इसी तरह की श्रेणी से सम्बन्ध रखते हैं।

3. बहुत देर तक कायम रहने वाला: प्राथमिक समूह स्वभाव से स्थायित्व वाले अर्थात बहुत समय तक बने रहने वाले होते हैं तथा प्राथमिक समूह के सदस्य वे होते हैं, जो परस्पर बहुत देर तक खुल कर बातचीत कर सकते हैं। लोग जितनी ज्यादा आपस में

बातचीत करते हैं उतना ही वे आपस में नजदीक से जुड़े होते हैं तथा नजदीक संबंघे वाले होते हैं। उदाहरण स्वरूप, पति तथा पत्नी के आपस में विचारों में अन्तर हो सकते हैं। परन्तु वास्तव में, तथ्य यह हैं कि वे बहुत लम्बे समय से एक ही छत के नीचे रहते हैं, इसीलिए उनको एक दूसरे के बिना या अलग रहना कठिन प्रतीत होता हैं।

आंतरिक विशेषताएं

ये वे विशेषताएं हैं जो प्राथमिक सम्बन्धो के आन्तरिक भाग से संबंध रखते हैं । ये निम्नलिखित हैं :

1. लक्ष्य की पहचानः एक प्राथमिक सम्बन्ध में इच्छाएं तथा लक्ष्य समान होते हैं। समूह के सभी सदस्यों की एक जैसी इच्छाएं ,विचार तथा लक्ष्य होते हैं वे सारे संसार को एक ही ढ़ग से या एक ही विचार से देखते या समझते हैं खिलाड़ियों का समूह जो एक दूसरे से मुकाबलें या प्रतियोगिता में भाग लेता हैं का एक ही लक्ष्य या उद्देश्य होता हैं।

2. सम्बन्ध अपने आप में लक्ष्य हैः प्राथमिक सम्बन्ध, लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए साधन ही नहीं बल्कि यह स्वयं लक्ष्य भी हैं। इसके महत्वपूर्ण होने के कारण ही इस का इतना ज्यादा "मूल्य" हैं। यह प्रेम तथा अत्यन्त भावात्मक लगाव वाला संबंध हैं। इसका उदाहरण, माता तथा बच्चे वाला ममता भरपूर प्यार तथा प्रेमियों वाला प्यार तथा अत्यन्त प्रिय मित्रों वाले प्रेम से दिया जा सकता हैं।

3. संबंध निजी होता हैः प्राथमिक समूह के सदस्य निजी संबंध कायम करते हैं। यह सम्बन्ध दो विशेष व्यक्तियों के बीच होता हैं। प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे में दिलचस्पी रखता हैं। यह बदलने वाला नहीं होता तथा इसीलिए किसी एक भी व्यक्ति की गैर हाजरी किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा पूरी नहीं की जा सकती। अर्थात ऐसा सम्बन्ध दोनो विशेष व्यक्तियों में ही हो सकता हैं। एक विवाहित जोड़े में से एक की मृत्यु हो जाने के पश्चात जीवित व्यक्ति की शादी हो सकती हैं, लेकिन पहले साथी की याद कभी मिट नहीं सकती। अर्थात किसी विशेष मित्र या किसी पारिवारिक सदस्य का स्थान कोई अन्य नहीं ले सकता।

4. सम्बन्ध समावेशी होते हैः प्राथमिक समूह समावेशी होते हैं इस का भाव यह है कि यह सम्बन्धित सदस्यों के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं से जुड़ा होता हैं। सदस्य एक दूसरे को बहुत गहराई से जानते हैं। उनमें कोई भी भेद छुपा हुआ नहीं होता हैं। इसलिए वे परस्पर एक दूसरे के प्रति पूरी तरह खुले हुए या स्पष्ट होते हैं। उदाहरण स्वरूप, अच्छे मित्र एक दूसरे से सब कुछ निःसंकोच बात करते हैं तथा आपस में कुछ भी नहीं छुपाते।

5. सम्बन्ध स्व–इच्छित होते है: प्राथमिक समूह में सम्बन्ध एक–दूसरे के साथ स्वैच्छिक होते हैं। इसके सदस्यों में कोई मजबूरी या दबाब वाली बात नहीं होती। मित्र परस्पर मिलते हैं क्योंकि वे आपस में बात करना चाहते हैं अथवा वे फुटबाल खेलना या ताश खेलना चाहते है। संक्षेप में, यह कहा जा सकता हैं कि हर जगह वे एक दूसरे के पास रहना चाहते हैं ।

6. समान पृष्ठभुमि: समान पृष्ठभुमि होने के साथ, प्राथमिक समूह के सदस्यों के अनुभव भी समान होते हैं तथा मानसिक स्तर भी समान होते हैं ।

7. सहयोग: प्राथमिक समूह के सभी सदस्यो से प्रत्येक कार्य एक साथ मिल कर सहयोग द्ववारा काम करने की आशा की जाती हैं ।

प्राथमिक समूह का महत्व

व्यक्तियों के लिए महत्व

1 प्राथमिक समूह में सदस्य अपनी संस्कृति को सीखता हैं ।
2 प्राथमिक समूह व्यक्ति के व्यक्तित्व को आकार प्रदान करता हैं।
3 यह व्यक्तियों को आपस में जोड़ता हैं ।
4 यह व्यक्तियों को अपनी आकांशाओ और नाराजगी प्रर्दशित करने का मौका देती हैं ।
5 यह अपने सदस्यों को अपने उदेश्यों की प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित करता हैं ।
6 यह अपने सदस्यों की नैतिकता को बढ़ाता हैं ।
7 यह सदस्यों में हम की भावना पैदा करता हैं।

समाज के लिए महत्व

1 प्राथमिक समूह अपने सदस्यों पर सामाजिक नियन्त्रण बनाए रखता हैं ।
2 यह समाजीकरण की प्रकिया में मदद करता हैं ।
3 यह समाज के प्रतिमानों के अनुसार व्यक्तियो को कार्य करने के लिए मार्गदर्शित करता हैं ।
4 यह सामाजिक संस्थाओं की तरह सही (प्रत्यक्ष) व्यवहार को विकसित करता हैं ।
5 यह सामाजिक संरचना को एक साथ जोड़ने तथा विसंगठन को खत्म करनें में मदद करता हैं।

इस प्रकार, प्राथमिक समुहों को सत्ता, समझोते एव अखण्डता के बल पर सर्वसम्मति से महत्वपूर्ण माना गया है। प्राथमिक समूह, समय तथा महत्ता के कारण प्राथमिक हैं। ये समूह समय के अनुसार प्राथमिक इसलिए माने जाते हैं, क्योंकि ये पहले समूह हैं, जिनमें बच्चा अपनी प्राथमिक आयु या स्तर (बचपन) के दौरान प्रवेश करता हैं। ये महत्ता के पक्ष से इसलिए प्राथमिक हैं, क्योंकि ये समाजीकरण की प्रक्रिया के लिए अति महत्वपूर्ण हैं। ये बच्चे को अपना प्रथम तर्जुब्बा सामाजिक–वार्तालाप के लेन–देन के रूप में देते हैं तथा उन्हें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सहयोग करना सीखाते हैं। प्राथमिक समूह, व्यक्ति के लिए तथा समाज के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। ये एक सफल सामाजिक–जीवन को व्यतीत करने के लिए तैयार करते हैं। ये लोगों का समाजीकरण करते हैं तथा उनके व्यक्तित्व को निर्माण सही दिशा की ओर अग्रसर करते हैं। ऐरिक फोरमैन तथा लैविस जैसे विद्वान मानते हैं कि प्राथमिक–समूह का व्यक्ति ही समाज के स्वास्थ्य का आधार हैं। वर्तमान के बढ़ते हुए एकाकीपन वाले संसार में ये खुलेपन, विश्वास तथा प्रेम के स्त्रोत हैं। वे लोग, जो किसी भी प्राथमिक समूहों जैसैः–विवाह, दोस्ती तथा कार्य से संबंधित सम्बन्ध के सदस्य नहीं होते, उनको जीवन में सामंजस्य स्थापित करना कठिन महसूस होता हैं।

द्वितीय समूह

द्वितीय समूह लगभग प्राथमिक समूह के विपरीत होते हैं। कूले ने द्वितीय समूह के बारे में नहीं बताया, जब वह प्राथमिक समूह के सम्बन्ध में बता रहें थे। बाद में, विचारकों ने प्राथमिक समूह से द्वितीय समूह के विचार को समझा। द्धितीय समूह वे समूह हैं, जो आकार में बड़े होते हैं तथा थोड़े समय के लिए होते हैं। सदस्यों में विचारों का आदान–प्रदान औपचारिक, उपयोग–आधारित, विशेष तथा अस्थायी होता हैं। क्योंकि इसके सदस्य अपनी–अपनी भूमिकाओं तथा किये जाने वाले कार्यो के कारण ही आपस में जुड़े होते हैं। दुकान के मालिक एंव ग्राहक, क्रिकेट मैच में इकट्ठे हुए लोग तथा औद्योगिक सगंठन इसके उत्तम उदाहरण हैं। कारखाने के मजदूर, सेना, कॉलेज का विद्यार्थी–सगंठन–विश्व–विद्यालय के विद्यार्थी, एक राजनैतिक दल आदि भी द्वितीय समूह के अन्य उदाहरण हैं।

सक्षेंप में, हम यह कह सकते हैं कि द्वितीय समूह विशेष उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बनाये जाते हैं। द्वितीय समूह के सदस्य नियमित रूप से नहीं मिलते उनके मध्य गैरव्यक्तिगत संबंध पाए जाते हैं और उनकी आपस में घनिष्ठ संबंधता नही पाई जाती।

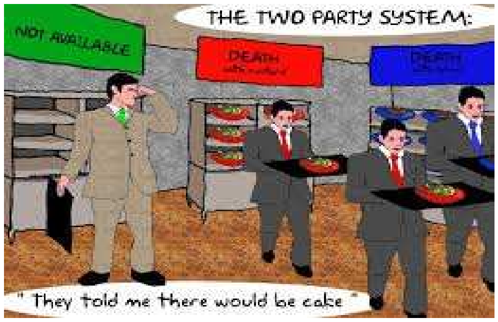

राजनीतिक दल

मजदूर संघ

द्वितीय समूह की विशेषताएं

द्वितीय समूह आकार में बड़े होते हैं। इनके सदस्य सारें देश या विश्व में फैले हुए होते हैं। उनकी निम्नलिखित विशेषताएं होती हैः–

1. शारीरिक समीपता या निकटता नहीं होतीः द्वितीय समूह के सदस्य एक ही समय पर एक ही स्थान पर नहीं रहते। बहुत सारे द्वितीय समूह किसी निश्चित क्षेत्र से सीमित नहीं होते। द्वितीय समूह के कुछ उदाहरण हैं जैसे रैडक्रोस सोसाइटी एवं रोटरी क्लब जो अपनी विशेषता में अंतराष्ट्रीय प्रकृति वाले होते हैं, जिनके सदस्य विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए हैं तथा कई बार तो इनके सदस्य एक दूसरे को जानते भी नहीं होते ।

2. अस्थायित्वः द्वितीय समूह में उनके सदस्य सीमित उद्देश्य के कारण शामिल होते हैं तथा ज्यों ही उनका उद्देश्य पूरा हो जाता हैं वे इसे छोड़कर चले जाते हैं। उदाहरण के तौर पर, विद्यार्थी, ज्यों ही अपने स्कूल की परीक्षा पास करते हैं वे अपने स्कूल को छोड़कर चले जाते हैं। ज्यादातर कार्यो में विद्यार्थी तथा अध्यापक का सम्बन्ध लुप्त हो जाता हैं। ज्यों ही वह स्कूल से दूर चला जाता हैं। इस से स्पष्ट होता हैं कि द्वितीय समूह स्थायी नहीं होते, ये बहुत देर तक कायम नहीं रहते।

3. लक्ष्य को प्राप्त करने का साधनः द्वितीय समूह में सम्बन्ध सदा ही लक्ष्य प्रधान होते हैं। यह समझा जाता है कि ये अपने आप में लक्ष्य ही नहीं होते, लेकिन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ये साधन भी होते हैं। द्वितीय समूहों में उनके सदस्य सांझे लक्ष्य के बारे में विचार विमर्श नहीं करते। वे एक दूसरे को ही लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साधन नहीं मानते। ऐसे सम्बन्ध का आधार उद्देश्यपूर्ण या निहित स्वार्थ की पूर्ति के लिए होता हैं। सम्बन्धों का मूल्य तभी जाना जाता हैं। जब ये उद्देश्यों की पूर्ति करते हो अर्थात् सम्बन्ध का आघार उद्देश्य की पूर्ति हैं।

4. सम्बन्ध औपचारिक होते हैः द्वितीय समूहों में, सम्बन्ध औपचारिक होते हैं। इसके सदस्य या व्यक्ति एक दूसरे से औपचारिक रूप में मिलते हैं। ये थोड़ी देर के लिए किसी काम के लिए परस्पर मिलते हैं। माध्यमिक समूह औपचारिक–नियमों के द्वारा संचालित होता हैं।

5. स्वेच्छिक सदस्यता : व्यक्तियों के लिए यह आवश्यक नहीं हैं कि वे द्वितीय समूह के सदस्य अवश्य बने। व्यक्तियों की प्रस्थिति अर्जित होता है तथा उनकी सदस्यता उनकी भूमिका व कार्य पर आघारित होती हैं न कि व्यक्तिगत गुणता पर।

द्वितीय समूह का महत्व

प्राथमिक समूहों से हटकर, द्वितीय समूह समय तथा विशेषता में माध्यमिक या द्वितीय स्थान पर होते हैं, क्योंकि द्वितीय समूह ये पहले ही मान चुके होते हैं कि व्यक्ति, अपनी जिन्दगी में एक दूसरे के साथ बहुत देर में जाकर बड़े होकर मिलते हैं। ये समूह भी समाज तथा व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। क्योंकि ये कुछ विशेष उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बनाये गये होते हैं। वर्तमान समाज द्वितीय समूह के फैलाव के प्रति सकारात्मक विचार वाला अथवा सहायक की भूमिका अदा करता हैं। बढ़ता हुआ औधोगीकरण, नगरीकरण, वैश्वीकरण तथा विस्तृत संचार व्यवस्था ने माघ्यमिक समूह को सजीव बना दिया है तथा इसे एक आवश्यकता बना दी हैं। सामाजिक जीवन की जटिलताओं के कारण प्राथमिक समूह लोगों की जरूरतों को पूरा करने में असफल रहें हैं। परिणामस्वरूप, वे अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए द्वितीय समूहों की ओर ताकते रहते हैं। उदाहरण के रूप में, पहले समय में परिवार अपने बच्चों का पालन पोषण किया करते थे तथा अपने माता पिता का बुढ़ापे में पूरा ध्यान रखते थे, लेकिन आजकल हम देखते है कि काम पर जाने वाली मातायें, बच्चों को बच्चा संभाल केन्द्र में छोडकर जाती है तथा बूढ़े माता–पिता को वृद्व आश्रम में छोड़ दिया जाता हैं। इस प्रकार, मानव अब अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए आधुनिक समाज की द्वितीय समूहों पर आधारित हैं। जो कि छोटे समुदायों से बड़े समुदायों में बदल रही हैं।

प्राथमिक तथा द्वितीय समूहों के मध्य अतंर

प्राथमिक समूह	द्वितीय समूह
• आमने सामने के सबंधं	• दूरी वाले सबंध
• सीमित सदस्य/आकार में छोंटे	• विस्तृत सदस्यता/आकार में बड़े।
• व्यक्तिगत एवं सीमित सबंधं	• अव्यक्तिगत तथा असीमित सबंधं
• प्यार की भावना, मित्रता एवं सहानुभूति इत्यादि।	• सगंठनो के प्रतिमानों के अनुसार मान्य व्यवहार
• समाजिक नियन्त्रण का अनौपचारिक साधन	• सामाजिक नियन्त्रण का औपचारिक साधन
• व्यक्ति स्थिर सबंधो से जुड़ा होता हैं।	• अस्थिर सबंधं/व्यक्ति कभी भी समूह छोड़ सकता हैं।
• अस्वैच्छित सदस्यता	• स्वैच्छित सदस्यता
• सहयोग पाया जाता हैं।	• अप्रत्यक्ष तौर पर सहयोग पाया जाता हैं।
• हम की भावना	• वे की भावना
• अनौपचारिक सबंधं	• औपचारिक सबंधं

डब्ल्यू जी. समनरः– अतः समूह और बाह्य समूह

आतंरिक समूह तथा बाह्य समूह की धारणा समनर, एक अमेरिकी समाजशास्त्री द्वारा दी गई हैं। उसने समूहों को दो वर्गों में बांटा हैं–आतंरिक समूह एवं बाह्य समूह। एक आंतरिक समूह को प्रायः 'हम–समूह' कहा जाता हैं तथा बाहय–समूह को 'वे समूह' कहा जाता हैं।

आंतरिक समूह

आंतरिक–समूह एक ऐसा सामाजिक समूह होता हैं, जिसके अंतर्गत सदस्यों के मध्य चेतना या जागरूकता होती हैं। वे महसूस करते हैं कि वे इस समूह से सम्बन्ध रखते है तथा इसके परिणामों को सांझे तौर पर

स्वीकार करते हैं तथा एक सांझी–विचारधारा का अनुसरण करते हैं। आंतरिक समूह, प्राथमिक–समूह होते हैं। हम उन लोगो के साथ अपनत्व महसूस कर सकते हैं, जिनको हम कभी मिले हुए भी नहीं होते, जैसे– किसी संस्था के पुराने विद्यार्थियों का समूह या कोई धार्मिक समूह। आप के स्कूल के विद्यार्थी ऐसी मित्रता वाली भावना को महसूस कर सकते हैं या प्रेम भरपूर इकठठ की भावना। इसी प्रकार, दूसरे स्कूल के विद्यार्थी अपने लिए 'आंतरिक समूह' हैं लेकिन यह आपके लिए एक 'बाहय–समूह' हैं। अन्य समूहों के सदस्य आप के लिए 'वे' हैं तथा इसी प्रकार आप उनके लिए 'वे' हैं। 'हम की भावना', 'आंतरिक–समूह' के सदस्यों में बहुत मजबूत होती हैं।

बाहय समूह

बाहय समूह वह समुह है जिसमें व्यक्ति कोई सबंध नहीं रखता और अपने समुह की सीमा से बाहर होते हुऐ भी शामिल रहता है। साथ हम कोई निकटता वाले भाव को भी महसूस नहीं करते हैं। बाहय–समूह के सदस्यों के साथ भेद–भाव वाला बर्ताव पाया जाता हैं। कभी–कभी हम उनके साथ अपना सा व्यवहार भी करते हैं। नाकारत्मक भाव और धृना भाव आदि भी बाहय समूह के सदस्यों के प्रति मन में पैदा होते हैं।

उदाहरण स्वरूप, जैसे अन्तः स्कूल मैचों में हम अपने स्कूल के लिए प्रोत्साहन स्वरूप तालियां बजाते हैं जबकि विरोधी टीम को हम बाहय समूह के रूप में समझते हैं।

कियाकलाप–4.3

भारत के अन्य भागो से संबध रखने वाले लोगो के साथ मिलकर होने उनके अनुभवों के बारे में जानो जो पंजाब में पढ़ने के लिए, काम के लिए या किसी अन्य कारण के लिए आये हैं।

- क्या आप सोचते हो कि उन्हें बाहर के लोग समझा जाता है अपने उत्तर के कारण बताओ।

राबर्ट के. मर्टनः सन्दर्भ–समूह

सन्दर्भ–समूह की धारणा अमेरिकी समाज–वैज्ञानिक राबर्ट के. मर्टन द्ववारा दी गई हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी समूह का सदस्य होता हैं। लोगों के किसी भी समुह के लिऐ हमेशा एक दुसरा समूह होता है जिससे वो अपने समूह को तुलना करते हैं। जिन समूहों से जीवन शैली अपनायी जाती या नकल की जाती हैं, उन्हें सन्दर्भ समूह कहा जाता हैं। हम उस समूह के साथ अपनी पहचान बनानी शुरू कर देते हैं। सन्दर्भ समूह –संस्कृति, जीवन–शैली, प्रेरणा तथा लक्ष्यों की प्राप्ति की सूचना के महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं। उदाहरण स्वरूप अमेरिका, कनेडा तथा अस्ट्रेलिया में बसे हुए पंजाबी सन्दर्भ समूह होते हैं। पंजाबियों को प्रवासी भारतीयो का उच्च स्तर आकर्षित करता हैं तथा वे बाहर जाना चाहते है तथा वहां स्थायी रूप में बस जाना चाहते हैं ।

कियाकलाप 4.4

- क्या आप अपने परिवार अथवा इलाके के किसी विशेष व्यक्ति से प्रभावित है ?
- आप को उनके कौन से गुणो ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया हैं।
- क्या आप ने कभी उस व्यक्ति के समान व्यवहार किया हैं ?

सारांश

सारांश– समाजिक समूह का अध्ययन समाजशास्त्रीयों का केंन्द्रीय विंदु रहा है। समाजिक समुह एक इकट्ठ से कही अथिक होता है इसमें समान विशेषताओ वाले दो या दो से अधिक व्यक्ति शामिल होते है जो आपस में अन्तक्रिया करते है तथा आपस में सबंध और एकता की भावना महसूस करते हैं। हम विभिन्न प्रकार के समुहों में उद्देश्य संस्कृति, मुल्यों के आधार पर अन्तर कर सकते हैं जिनमें मुख्यत प्राथमिक, द्वितीय समूह अतः व बाहय समूह तथा संदर्भ समूह आते हैं।

शब्दावली

- **प्राथमिक समूहः** यह एक छोटा समूह होता हैं जिसमें व्यक्ति एक दूसरे को जानते हैं तथा उनके मध्य घनिष्ठ, आत्मीय संबंध एंव हम की भावना पाई जाती हैं ।
- **द्वितीय समूहः** यह एक ऐसा समूह है जिसमें अवैयक्तिगत, औपचारिक, खण्डात्मक और उपयोगिता पाई जाती हैं ।
- **संदर्भ समूहः** अपने फैसलों और क्रियाओ के लिए किसी समूह को मार्गदर्शक या आदर्श मानना।
- **अंतः समूहः** ऐसा समूह जिसमें आपस में जुड़े होने की भावना पाई जाती हैं ।
- **बाहय समूहः** ऐसा समूह जिसमें आपस में जुड़े होने की भावना नहीं पाई जाती हैं ।
- **हम भावना** सदस्य अपने आपको समूह के सदस्यों के रूप में पहचानते हैं यह समूह एकता का प्रतीक है।

अभ्यास

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 1–15 शब्दों के बीच दीजिए:

1 किसने समूह की दो किस्मो, अन्तः समूह और बाह्य समूह का वर्णन किया है ?

2 अन्तः समूह के दो उदाहरणों के नाम बताओ।

3 बाह्य समूह के दो उदाहरणों के नाम बताओ।

4 सन्दर्भ समूह की अवधारणा किसने दी हैं ?

5 हम भावना क्या हैं?

6 सी• एच• कुले के द्वारा दिए गए प्राथमिक समूह के उदाहरणों के नाम बताओं ?

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 30–35 शब्दों में दीजिए:

1 सामाजिक समूहों को परिभाषित करो ?

2 प्राथमिक समूहों से आप क्या समझते हो उदाहरण सहित बताओं ?

3 द्वितीय समूह से आप क्या समझते हो उदाहरण सहित बताओ ?

4 अन्तः समूह तथा बाह्य के बीच मध्य दो अन्तर बताओ ?

5 द्वितीय समुह की विशेषताओ को बताओ ?

6 प्राथमिक समुह की विशेषताओ को बताओ ?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 75–85 शब्दों में दीजियेः

1 सामाजिक समूह का विशेषताएं बताओ।

2 सन्दर्भ समूह क्या हैं ?

3 प्राथमिक समूह तथा द्वितीय समुह के बीच अन्तर क्या है। ?

4 अन्तः समूह की विशेषताएं बताओ ?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 250–300 शब्दों में दीजिएः

1 सामाजिक समूह से तुम क्या समझते हो, विस्तृत रूप में लिखों ?

2 प्राथमिक तथा द्वितीय समूह का आप किस प्रकार वर्णन करोगें ?

3 समाज का सदस्य होने के नाते तुम अन्य समूहो के साथ अर्न्तक्रिया करते हो। आप किस प्रकार इसे समाजशास्त्रीय परिप्रक्षेय के रूप में देखोगे।

4 मानवीय जीवन सामाजिक जीवन होता है उदाहरण सहित व्याख्या करो।

इकाई : 3

संस्कृति एवं समाजीकरण

अध्याय 5

संस्कृति

मुख्य बिन्दुः

5.1 अर्थ एवं विशेषताएं

5.2 भौतिक संस्कृति

5.3 अभौतिक संस्कृति

परिचय

संस्कृति वह होती हैं जो व्यक्ति को पशुओ से अलग करती हैं। संस्कृति तथा समाज एक दूसरे से संबंधित होते हैं। यह सीखा हुआ, सांझा और प्रसारित व्यवहार होता हैं जिसे सिर्फ तब ही प्राप्त किया जा सकता हैं जब व्यक्ति समाज का सदस्य हो। इसलिए समाज के बिना कोई संस्कृति नहीं हो सकती और न ही बिना संस्कृति के समाज। समाज के सदस्यों के मध्य समाजिक अंतक्रियाओं के द्वारा ही संस्कृति विकास होता हैं। समाज के व्यवहार के उचित नियमों तथा प्रारूपों को सीखना संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। उदाहरण के लिएः हम विभिन्न प्रकार के व्यक्तियो का विभिन्न प्रकार से सत्कार करते हैं जैसेः मित्र, बुजुर्ग रिश्तेदार तथा अन्य समूहो के व्यक्ति आदि।

भारत में मौसमी त्योहारः— पंजाब में बैसाखी और बंगाल में दुर्गा पूजा

ज्यों ही हम अपने इर्द गिर्द नजर दौडाते हैं तो हम देखते हैं कि मनुष्य के रूप में हमारी अधिक जिदंगी दैनिक अंतःक्रियाओं में काफी सांस्कृतिक उत्पादकों जैसे—टी.वी., मोबाइल

फोन, कम्पयूटर और मशीनरी पदार्थो से प्रभावित होती हैं। संस्कृति तब हमारे जीवन का एक अटूट भाग बन जाती हैं। यह हमारे व्यवहारों को आकार देती हैं। जैसे हम भी अपनी संस्कृति को आकार देते हैं। इसी प्रकार, यह याद रखना महत्वपूर्ण हैं कि संस्कृति कभी भी संपूर्ण नहीं हो सकती हैं। यह बदलती रहती हैं और एक नए तत्व के रूप में क्रमिक रूप से जमा, घटती, बढ़ती तथा बदलती रहती हैं। यह संस्कति को एक गतिशील कार्यात्मक इकाई के रूप में बनाती हैं। अन्य शब्दों में संस्कृति (निरन्तर परिवर्तन के साथ) कभी खत्म न होने वाली प्रक्रिया हैं।

संस्कृति का अर्थ

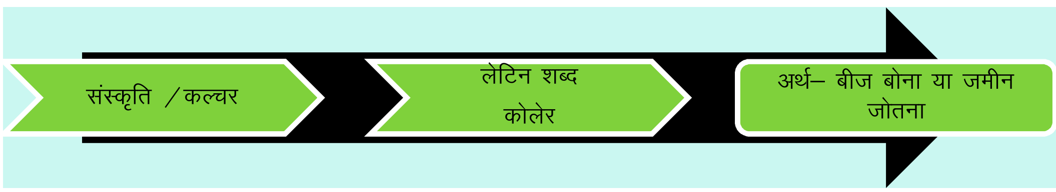

19 वी शताब्दी के अंत तक, मानव शास्त्रियों ने पहली बार संस्कृति की अवधारण का प्रयोग किया। शब्द 'कल्चर' लेटिन भाषा के शब्द 'कोलेर' से लिया गया हैं, जिस का अर्थ बीज बोना, या जमीन को जोतना होता है। मध्यकालीन यूरोप में, इस शब्द का संबंध खेती बाड़ी से था। सामाजिक मानवशास्त्र में शब्द संस्कृति का अर्थ 'ज्ञान' हैं। यह मानवीयता के उन पक्ष के ज्ञान से हैं जोकि प्राकृतिक नहीं हैं बल्कि प्राप्त की गई हैं।

संस्कृति की परिभाषाएं

टायलर के अनुसारः– संस्कृति वह जटिल संस्कृति प्रक्रिया हैं, जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिक, मूल्य, कानून, परम्परा तथा अन्य क्षमताये तथा आदतें शामिल होती हैं, जिसे व्यक्ति समाज के सदस्य के रूप में अर्जित करते हैं।

क्लाईड क्लक्कहीन ने संस्कृति को इस प्रकार परिभाषित किया हैंः

1. यह लोगो का सम्पूर्ण जीवन ढ़ंग हैं।
2. समाजिक विरासत जोकि व्यक्ति अपने समुह से प्राप्त करता हैं।
3. सोचने, महसूस करने तथा विश्वास करने का ढ़ग
4. व्यवहार से पृथक्कण (दूरी)
5. अर्जित सीख का ज्ञान भण्डार
6. सीखा व्यवहार
7. व्यवहार के आदर्शीय नियमता के लिए कार्यपद्धति
8. बाहय–वातावरण तथा अन्य लोगा के साथ सामंजस्य स्थापित करने की कार्य प्रणाली।
9. तकनीको का वह समूह जो बाहरी वातावरण तथा दुसरे समूहो के साथ लोगो को जोड़ता हैं।

संस्कृतियां एक समाज से दूसरे समाज तक भिन्नता रखती हैं तथा हर एक संस्कृति के अपने मूल्य तथा मापदण्ड होते हैं। सामाजिक मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त व्यवहारों के नियम हैं जबकि मूल्य से अभिप्राय, उस सामान्य पक्ष से हैं कि ''क्या ठीक हैं या अभिलाषित व्यवहार हैं'' तथा ''क्या नहीं होना चाहिए'' मान्य से संबंधित हैं। उदाहरण के लिए, किसी एक संस्कृति में सत्कार को उच्च सामाजिक मूल्य माना जाता हैं जबकि अन्य समाज में ऐसा नहीं होता। सामान्यतः कुछ समाजों में बहुपत्नी प्रथा को एक पारम्परिक रूप का विवाह माना जाता हैं जबकि अन्य समाजों में इसे एक उपयुक्त प्रथा नहीं माना जाता।

संस्कृति के कुछ मुख्य तत्व हैं जहां से एक मूर्त रूप की संस्कृति का उद्‌भव होता हैं यह सब तत्व संस्कृति की पहचान को आकार प्रदान करते हैं। इन्हें हम दो भागों में बांट सकते हैं।

पहला, संस्कृतिक वस्तुओं तथा भौतिक वस्तुओं से संबंधित हैं, जबकि दुसरा संस्कृति ज्ञान और विश्वासों से संबंधित हैं जिसे व्यक्ति अपनी पिछली पीढ़ी से प्राप्त करता हैं और जो व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करता हैं। इसके इलावा रीतिरिवाज, परम्पराएं, मापदण्ड और मूल्य व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहारों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। भौतिक तत्वों में हम वास्तविक सांस्कृतिक उत्पादो को शामिल कर सकते हैं।

कियाकलाप 5.1

1. अपनी संस्कृति के बारे मे जानकारी हासिल करे, विशेष तौर पर खाने की आदतें, पहरावे, संगीत, लोक संस्कृति आदि। जोकि हमारी दैनिक जीवन को प्रभावित करती हैं।
2. महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रथाओं की एक सूची बनाओ और अपनी कक्षा में इसकी चर्चा करो।

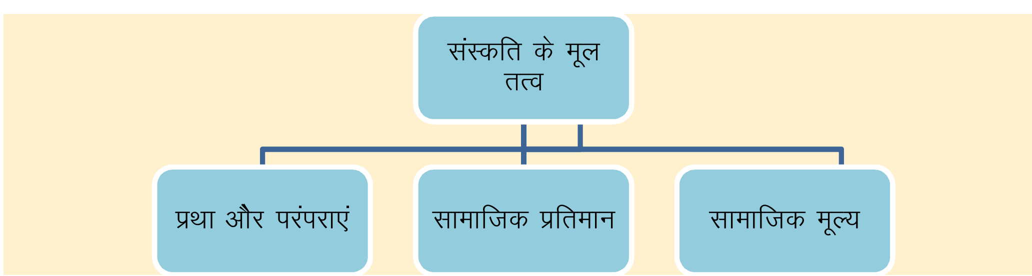

प्रथा और परम्पराएं

प्रथाएं सामाजिक व्यवहार का वह भाग हैं जोकि संगठित तथा दोहराई हुई होती हैं। ये व्यवहार के नियमित, निरन्तर और व्यवस्थित तरीके होते हैं। प्रत्येक समाज के अलग–अलग रीतिरिवाज (प्रथाएं) होते हैं। एक संस्कृति की दूसरी संस्कृति से भिन्नता होती हैं तथा एक ही स्थान पर एक ही स्थिति में अन्तर पाया जाता हैं जहां समाज एवं समूहों के दबाव में व्यक्ति रीतिरिवाजो के अनुसार व्यवहार करता हैं। उदाहरण के तौर पर, भारत में हाथों को जोड़ कर किसी के लिए सत्कार को दर्शाया जाता हैं। पश्चिमी समाज में व्यक्ति अपनी कुर्सी से उठकर हाथ मिलाकर इसे करता हैं। ये दोनो प्रकार की क्रियाएं सत्कार प्रकट करने से संबंध रखती हैं जोकि विभिन्न संस्कृतियो में विभिन्न प्रकार की होती हैं।

प्रथाएं विश्वास या व्यवहार हैं जो समाज परम्परा या समूह के अन्तगर्त एक विशेष महत्ता रखते हैं। जिसका उद्‌भव इतिहास से हुआ हैं। प्रत्येक समाज, कुछ विशिष्ट प्रस्थिति में व्यवहार की स्थिति को विकसित करता हैं। उदाहरणस्वरूप– हिन्दु और सिख दीपावली के अवसर पर दीये जलाते है तथा मिठाईयां तैयार करते हैं। सिक्ख इस प्रथा को गुरुपूर्व के साथ करते हैं। मुस्लमान मस्जिदों में नमाज करते हैं तथा ईद मनाते हैं। ईसाइ लोग, क्रिसमस के पावन अवसर पर एक दूसरे के घर जाते हैं तथा क्रिसमिस के उपहार एक दूसरे को भेंट करते हैं यह उत्सव अवसर को खुशियों से भरपूर बना देते हैं। इन सबको परम्पराएं कहा जाता हैं। परम्पराएं बहुत पुराने रीति रिवाज होते है जो समाज में बहुत पहले समय से ही चलती आ रही हैं। रीति रिवाज एक व्यक्ति के प्रतिदिन के व्यवहार से संबधित होते हैं जबकि परम्पराएं विशेष अवसरों से संबंध रखती हैं। जब किसी देश का प्रमुख दुसरे देश में रस्मी तौर पर जाता हैं तो यह परम्परा है कि उच्च पदवी वाला मेजबान देश के शहीदो को श्रृद्धाजली देता हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी देश का प्रमुख व्यक्ति भारत आता हैं तो वह महात्मा गांधी जी को श्रृद्धाजली अर्पित करने के लिए राजघाट पर जरूर जाता हैं। इसी प्रकार, समाज द्वारा परम्पराओ का अवलोकन किया जाता हैं। जो व्यक्ति इन परम्पराओ को नकारते है उनको सामाजिक आलोचनाओं का सामना करना पड़ता हैं।

सामाजिक प्रतिमान

संस्कृति का अन्य महत्त्वपूर्ण तत्त्व प्रतिमान भी है। प्रत्येक समाज की कुछ अपेक्षाएं होती हैं कि उनके सदस्यों को कैसे व्यवहार करना चाहिए या कैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए। प्रतिमान व्यवहार के अपेक्षित या मार्गदर्शक होते हैं। ये वे नियम होते हैं जिसे समूह मूल्यों, विश्वासों, मनोवृत्तियों तथा व्यवहारों को उपयुक्त या अनुपयुक्त दर्शाने के लिए प्रयोग करता है। प्रत्येक क्रिया जो व्यक्ति से जुड़ी है, यथा, उनके बैठने, खड़े होने,

चलने, बात करने, खाने तथा पहनने का तरीका सभी मूल्यों द्वारा ही निर्धारित होता है। प्रतिमान निरंतर बदलते रहते हैं तथा संस्कृति के अनुसार प्रत्येक समाज के प्रतिमान भिन्न–भिन्न होते हैं। किस मात्रा तक कुछ व्यवहार क्षमा योग्य होते हैं यह सामाजिक दबावों द्वारा व्यवहारों की मात्रा को समर्थन करने के लिए निर्धारित किए जाते हैं। समाज व्यक्तियों के प्रतिमानों के अवलोकन करने के लिए विभिन्न तरीकों को ढूंढता है। सबसे सामान्य तरीका मान्यताओं का प्रयोग होता है जो कि स्वीकार्य या अस्वीकार्य मान्यताओं को, जो सकारात्मक या नकारात्मक होती हैं, को दर्शाते है। सकारात्मक सहमति के द्वारा व्यक्ति को मान्य व्यवहारों के रूप में प्रशंसा या सम्मान मिलता है। सकारात्मक मान्यता किसी व्यक्ति को प्रतिमानों की पालना करने या विशेष प्रकार के व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कृत करते हैं। दूसरी तरफ, व्यक्ति के व्यवहार को नकारात्मक स्वीकृती द्वारा समाज में नियन्त्रित बनाए रखने के लिए दण्डित किया जाता है अगर वे प्रतिमानों को तोड़े है। नकारात्मक मान्यता संचार का वह तरीका होता है जिसे समाज द्वारा विशेष व्यवहार न करने के लिए दिया जाता है।

सामाजिक मूल्य

सामाजिक मूल्य व्यवहार के आवश्यक रूप होते हैं तथा प्रत्येक संस्कृति के कुछ मुख्य मूल्य भी होते हैं जिनका सद्स्यों के द्वारा प्रयोग किया जाता हैं। ये मूल्य कुछ केन्द्रित विचारों तथा विश्वासों से होते है कि 'क्या सही है या गलत हैं' और 'क्या स्वीकार्य या अस्वीकार्य हैं।' उदाहरण के लिए, परम्परागत भारतीय समाज का केन्द्रित मूल्य लगाव हैं। अन्य विश्वासानुसार, अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष पुरूषार्थ मुख्य रूप से आपस में जुड़े हुए होते हैं। आधुनिक भारत का केन्द्रिय मूल्य लोकतंत्रिक व्यवस्था, न्याय, समानता और धर्मनिपेक्षता होती हैं। भिन्न–भिन्न समाजों के भिन्न भिन्न मूल्य होते हैं। छोटे समूदाय विशेष मूल्यो पर जोर देते हैं जबकि बड़े समाज सार्वभैामिक मूल्यो पर जोर देते हैं।

संस्कृति की विशषताएं

समाज शास्त्रियों तथा समाज– मानव वैज्ञानिकों ने कई प्रकार की संस्कृति के संबंध में अपने विचार प्रगट किए हैं। लेकिन यहां निम्नलिखित प्रकार की विशेषताएं संस्कृति को समझाने के लिए काफी हैं।

1. **संस्कृति सीखा हुआ व्यवहार हैं:** संस्कृति सीखा हुआ व्यवहार हैं यह व्यवहार मनुष्य उस समाज से प्राप्त करते हैं जिन मे उनका पालन पोषण होता हैं यह एक पीढ़ी द्वारा सीखा ज्ञान दूसरी पीढ़ी को हस्तारित होता हैं, जिसे समाजीकरण करते है समाज का सदस्य बनने के लिए उस समाज की संस्कृति को सीखना पडता हैं। यह सिर्फ

शारीरिक गतिविधियों जैसे खाना जो हम खाते हैं, या कपड़े जो पहने जाते है तक ही सीमित नहीं होती हैं, यह उस भाषा तक भी सीमित होती हैं जो भाषा हम बोलते हैं इसके अंतर्गत मूल्यों, मापदण्ड़ों, विचारों, नैतिकता तथा अन्य कई चीजें आदि आती हैं। इसमें मानसिक तथा शारीरिक पक्ष दोनो को शामिल होते हैं संस्कृति पर एक ही व्यक्ति का अधिकार नहीं होता हैं। यह एक अर्जित गुण या सीखा व्यवहार का तरीका होता हैं। यह तजुर्बे, नकल, विचारों का आदान–प्रदान (संचार), विचारधारा तथा समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा सीखा जाता हैं।

2. **संस्कृति एक जीवन पद्धति हैं:** संस्कृति जीवन–पद्धति का निर्माण करती हैं जिसके बिना जीवित रहना या जीवन–यापन करना कठिन होता हैं। उदाहरण के रूप में, जब हम किसी दूसरे देश की यात्रा करते हैं तो हम असहज महसूस करते हैं तथा हम इस स्थिति मे अपनी कोई और जीवन पद्धति को अपना लेते हैं। अलग प्रकार की संस्कृति पृष्ठभूमि से आकर एक और नई सस्कृति को अपनाना अत्यन्त कठिन महसूस होता हैं। ऐसा इसलिए होता हैं क्योकि सभी संस्कृतियां समान नहीं होती। प्रत्येक समाज की अपनी अलग संस्कृति होती है तथा ऐसे भी कहा जा सकता हैं कि हर समाज की अपनी अलग संस्कृति होती हैं।

3. **संस्कृति में ज्ञानात्मक अंश होता हैं**: प्रत्येक संस्कृति में कम अथवा ज्यादा मात्रा में ज्ञानात्मक या बौदिक अंश विद्यमान होते हैं। यह जानने की मानसिक प्रकिया है और इसमें जागरूकता, अतः प्रज्ञा दृब्टिकोण, तर्क तथा निर्णयशक्ति शामिल होते हैं। ज्ञानात्मक अंश पौरणिक–कथाओं, साहित्य कलाओ, धर्म तथा वैज्ञानिक सिद्धातों का प्रतिनिघित्व करते हैं। साहित्य में भी विचारो को प्रस्तुत किया जाता हैं तथा इस ढ़ग मे इन बौद्धिक विरासत की संस्कृति को किताबों में भविष्य पीढ़ी के लिए संभाल कर रखा जाता हैं। ऐसे विचार तथा विद्या (शिक्षा, कलात्मक निपूर्णतायें) से एक संस्कृति से संबंधित लोगो में संसार कें दृष्टिकोण का निर्माण करते हैं।

शिक्षित समाजों में, विचार, पुस्तकों एवं दस्तावेजों में लिखे जाते हैं तथा पुस्तकालयों एवम् पुरालेखागार में भी इन्हे संभाल कर रखा जाता हैं अशिक्षित समाजों में, गौरवगाथा या शिक्षा को याद कर लिया जाता हैं तथा मौखिक (जुबानी या बोल कर) रूप से उन्हे प्रसारित किया जाता हैं या सुनाया जाता हैं। उदाहरण के रूप में, भारत में स्मृति तथा श्रुति परम्पराएं मौखिक प्रसारण या मुहं जुबानी बोल कर सुनाने पर आधारित होती हैं।

4. **संस्कृति सांझी होती हैं:** संस्कृति के तत्व सामान्यतः सांझे होते हैं इन्हें हम समुह के अन्य सदस्यो के साथ सांझा करते हैं इस प्रकार, हम पर्याप्त तरीके से व्यवहार करने के योग्य हो जाते हैं और भविष्यवाणी कर सकते है कि अन्य कैसे व्यवहार करेंगे। यह

एकस्वरूप या एक समान नहीं होती। प्रसार के कारण कुछ समाजों में मिश्रित संस्कृति पाई जाती हैं।

5. **संस्कृति प्रतिकों पर आधारित होती हैं:** प्रत्येक संस्कृति के अपने कुछ प्रतीक होते हैं जो विभिन्न अनुभवो तथा प्रत्यक्ष बोधो के साथ जुड़े होते हैं। संस्कृतियों के प्रतीक अलग होते है और यह अर्थपूर्ण तभी होते हैं। जब समुह या संस्कृति में लोग इसका उपयोग करते हैं। जब हम प्रतीकों को देखते है तब कुछ विशेष विचार हमारे मस्तिष्क में आते हैं। उदाहरण के लिए, जब हम त्रिशुल या कृपाण को देखते है तब इससे जुड़ी हम हिन्दू और सिख की आस्था के बारे में सोचते हैं।

6. **संस्कृति अखण्ड होती है:** संस्कृति के अनेको अंग सम्पूर्ण रूप से अन्तःसंबंधित होते हैं, जो इसे पूर्ण तथा अर्थपूर्ण बनाते हैं। संस्कृति के सभी पक्ष एक दूसरे से जुड़े होते हैं। इसलिए संस्कृति को पूरी तरह से समझने के लिए व्यक्ति को इसके सभी भागों को सीखना होता न कि कुछ भागों को।

7. **संस्कृति गतिशील होती है:** इसका साधारण अर्थ हैं कि संस्कृति विचारों का आदान–प्रदान करती है तथा लगातार बदलती रहती हैं। हम सब जानते है कि ज्यादातर संस्कृतियां दूसरी संस्कृतियों से संबंधित होती हैं और एक दूसरे के सम्पर्क में आकर वे विचारों तथा प्रतिको का आदान प्रदान करती हैं। संस्कृति न बदले तो वातावरण के साथ समांजस्य स्थापित करना कठिन हो जाएगा। संस्कृति के सभी अंग आपस मे जुड़े होते हैं अगर एक अंग मे परिवर्तन आता हैं तो यह संभव है कि समस्त व्यवस्था मे इसके अनुसार परिवर्तन होगा।

8. **संस्कृति मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करती है:** संस्कृति मानव की जैविकीय और सामाजिक जरूरतों को पूरा करती हैं। यद्यपि, संस्कृति की निरन्तरता मानवीय जरूरतों को पूरा करने की क्षमता पर निर्भर होती हैं। यही कारण है कि संस्कृति के कई भाग जोकि बदलती जरूरतों को पूरा नहीं कर पाते वे अप्रचलित बन जाते हैं। उदाहरणार्थ, बैलगाड़ी का स्थान यातायात के तीव्र साधनो ने ले लिया हैं। इसी प्रकार प्रथाएं तथा परम्पराएं भी बदलते मूल्यों के अनुसार ही बदलती जाती हैं।

9. **संस्कृति सम्पूर्ण जीवन ढ़ंग हैं:** संस्कृति लोगो के जीवन जीने का एक सम्पूर्ण ढ़ग हैं। जो व्यक्ति एक ही सांस्कृतिक समूह के होते हैं व उनकी भाषा जो, रीतिरिवाज निभाते हैं, भगवान जिन पर वे विश्वास करते हैं, मूल्य तथा मापदण्ड, पहनावे का तरीका, कला और साहित्य इत्यादि एक जैसे समान होते हैं। जो व्यक्ति संस्कृति के साथ बड़े होते हैं वे आर्थिक क्रियाओं, धार्मिक समारोहो, परम्पराओं, विश्वासों, सामाजिक

भूमिकाओं साथ ही साथ कुशलता, तकनीकों तथा सामाजिक विश्व का ज्ञान सीखते हैं। इस प्रकार, संस्कृति मे व्यक्ति के जीवन के सभी पक्ष शामिल होते हैं।

संस्कृति का वर्गीकरण

संस्कृति को दो किस्मों मे वर्गीकृत किया गया हैं: भौतिक और अभौतिक संस्कृति।

भौतिक और अभौतिक संस्कृति

ये दोनो पक्ष मानवीय संस्कृति से अंतःसंबंधित है संस्कृति की भौतिक वस्तु और विचारधारा जो वस्तु के साथ जुड़ी हैं।

भौतिक संस्कुतिः यह संस्कृति मूर्त और भौतिक प्रकार की होती हैं। इस संस्कृति का रूप या सरोकार मानव निर्मित उद्देश्यों वाला एवं भौतिकवादी होता हैं। भौतिक संस्कृति औजारों, तकनीकों, मशीनों, उत्पाद तथा संचार के यन्त्रों, इमारतों तथा आवाजाई के साधनों (उदाहरणस्वरूप–कारें, बसें, रेल–गाड़ियां, हवाई जहाज) से संबंध रखती हैं। ये औजार तथा यन्त्र, नित्य प्रति जीवन मे उपयोग किये जाते हैं ताकि इनसे अन्य वस्तुओं को तैयार करके उपयोग में लाया जा सके हैं। भौतिक संस्कृति, किसी समाज मे वैज्ञानिक ज्ञान एवं उत्पादन तकनीक विज्ञान के ज्ञान तथा उन्नत उत्पादन तकनीकों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

भौतिक संस्कृति तकनिकी ज्ञान को संस्कृति में सम्मिलित करती हैं। भौतिक भाग के अन्तर्गत वो सब चीजें जो मानव निर्मित होती वह शामिल होती हैं। फैशन या समाज में मानव द्वारा निर्मित जैसे स्पर्शनिय चीजें ईमारतीय साधन, औजार, तकनीकें, संगीतीय औजार इत्यादि शामिल हैं। ये संस्कृति के शारीरिक पक्षो एवं मानवीय व्यवहार के अर्थ को समझने मे मदद करते हैं। उदाहरण के लिए, वो लोग जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है अलग–अलग क्षेत्र में कृषि के समान उपकरणों का प्रयोग नहीं करते। पहाड़ी क्षेत्रों में हल की जगह कुदाली का प्रयोग किया जाता हैं। सामान्यतः विकसित समाजो में युवाओं को कम्पयूटर सीखने की जरुरत नहीं पडती जब कि जनजातिय समुदाय शिकार के औजार को प्रयोग करना अपने आप ही सीख जाते हैं।

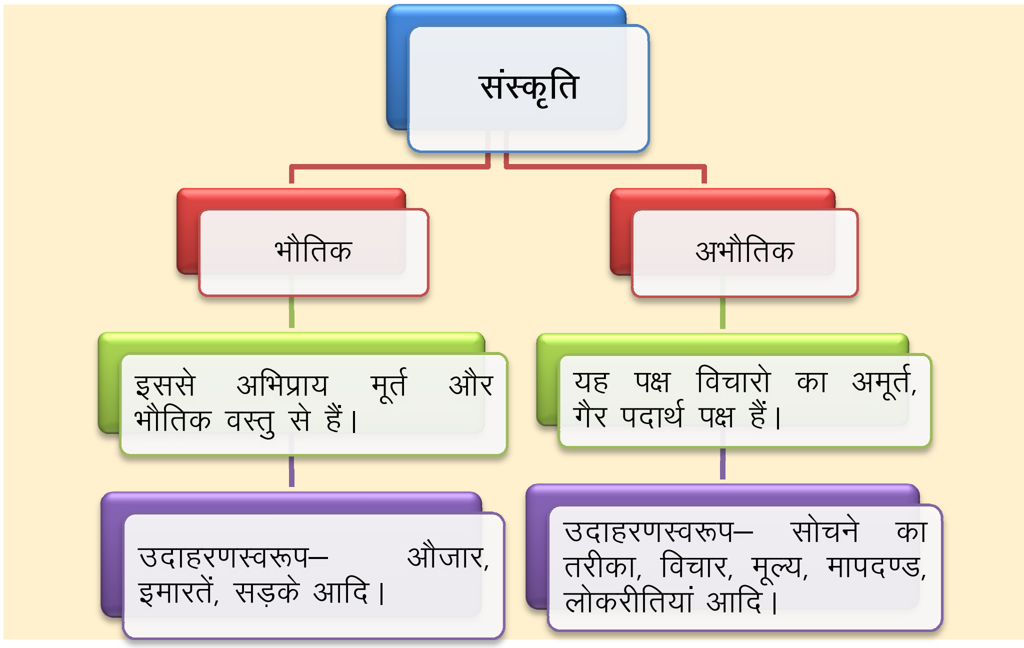

अभौतिक संस्कृति: संस्कृति का यह पक्ष अमूर्त, गैर पदार्थ तथा गैर–भौतिक होता हैं। इसे संस्कृति के ज्ञानात्मक तथा आदर्शवादी पक्ष के रूप में जाना जाता हैं। इस प्रकार की संस्कृति का उदाहरण हैं– विचार, ज्ञान, विश्वास, कला आदि हैं। इस प्रकार की संस्कृति, नियम बनाने और व्यवहार के मानवीकरण से संबंधित होती हैं सामाजिक भूमिकाएं, नियम, नीतिशास्त्र और विश्वास इसके अन्य कुछ उदाहरण हैं। संस्कृति के ये पक्ष किसी समाज को बनाए रखने तथा भविष्यवाणी में सहायक सिद्ध होते हैं तथा ये प्रत्यक्ष लोकरीति, लोकधारा, रीति रिवाज तथा नियमों के रूप मे मिलते हैं। ये संस्कृति के रूप में सदस्यों के लिए मार्गदर्शन की तरह काम करते हैं तथा यह जानने का प्रयास करते हैं कि समाज में कैसे व्यवहार करना चाहिए।

संस्कृति के अभौतिक पक्षो में वे चिन्ह और विचार शामिल होते हैं जो प्राणीयों के जीवन को आकार प्रदान करती हैं। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण शिष्टाचार, विचार, मूल्य तथा मापदण्ड़ होते हैं। उदाहरण के लिए, विचार, प्रत्येक संस्कृति के कर्मकाण्ड़ को प्रभावित करते हैं। मुसलमान एक महीने के लिए व्रत करते है इसे रमजान का महीना कहा जाता

हैं। सामान्यतः हिन्दूओं में भी नवरात्रों के समय खाने पर कुछ मनाही लगाई जाती हैं। रोजा रखना और नवरात्री के समय में व्रत रखना अभौतिक संस्कृति की उदाहरणे हैं।

संस्कृति विलम्बन या पिछडापन

संस्कृति पिछड़ापन वह अवधारणा हैं जिसका प्रयोग उस स्थिति को दर्शाने के लिए किया जाता हैं जिसमें समाज की संस्कृति के नियमों तथा मापदण्डों में परिर्वतन तकनीकी प्रगति की तुलना में बड़ी तीव्रता से आता हैं। जब समाज का आकार छोटा होता हैं तथा परिर्वतन की दर धीमी होती हैं तो उस समाज में एकता ज्यादा पायी जाती हैं। परन्तु जब इस समाज में परिर्वतन तीव्रता से हो तो इस हालत में सांस्कृतिक पिछड़ापन पैदा हो जाता हैं। विलियम एफ. आगर्बन ने सांस्कृति पिछड़ापन का विचार प्रस्तुत किया तथा कहा कि संस्कृति समय के साथ–साथ सदा बदलती रहती हैं संस्कृति के भौतिक पक्ष, गैर भौतिक संस्कृति के मुकाबले में आसानी से और जल्दी बदल जाते हैं।

मोबाइल फोन का प्रयोग करते संयासी

कम्पयूटर का प्रयोग करते हुए पारंपरिक किसान

संस्कृति के एक पक्ष में होने वाले परिर्वतन तनाव पैदा करते हैं तथा संस्कृति के अन्य पक्षों में भी दबाव पैदा करते हैं, जो आमतौर पर धीमी तौर पर परिर्वतन होते हैं। इसलिए समाज के पूर्ण विकास के लिए संस्कृति के दोनो पक्षों भौतिक तथा अभौतिक को एक साथ काम करना चाहिए। अगर अभौतिक पक्ष भौतिक पक्ष की गति के साथ विकसित नहीं हुए तो संस्कृति पिछड़ापन पैदा हो जाएगा। उदाहरण के लिए, 19वीं शताबदी में कई भारतीयों ने अग्रेजी शिक्षा, पहनावे का तरीका और घर बनाने की आधुनिक तकनिको को अपनाया था। लेकिन उनमें से कई छूआछूत और विभेदीकरण के पुराने रीतिरिवाजों मे फंस गए थे जिसका परिणाम व्यक्तियों के लिए उनकी नैतिकता का धर्मसंकट था।

कियाकलाप 5.2

क्या तुम अपने मुहल्ले, इलाके की किसी उपसंस्कृति के समूह से जागरूक हो ? तुम उन्हें किसी प्रकार पहचान लोगे ?

सांस्कृतिक परिर्वतन

संस्कृति में परिवर्तन, प्राकृतिक वातावरण में परिवर्तन एवं अन्य सांस्कृतियों के साथ तुलना या अनुकुलता की प्रक्रिया से हो सकता हैं। प्राकृतिक वातावरण या पर्यावरण मे परिवर्तन व्यक्ति के रहन सहन के तरीके को बदल देता हैं। उदाहरण के लिए, उत्तरपूर्वी भारत के जनजातिय समुदायों की संस्कृति पर साथ ही साथ मध्य भारत पर जंगलो के संसाद्यनों के नुकसान द्वारा बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। सांस्कृतियों के बीच सम्पर्क भी सांस्कृतिक परिर्वतन ला सकता हैं। संस्कृतियों के बीच आपसी अंतःक्रियाएं पर–संस्कृतिग्रहण को बढावा देती हैं। या अधीनस्थो द्वारा प्रभुत्वो की सांस्कृति के व्यवहार के तरिके और उनके संस्कृतिक विशेषता को अपना लेना होता हैं।

निष्कर्ष

1. संस्कृति समाज के सदस्यों द्वारा सांझा किया जाने वाला रहन–सहन का तरिका हैं। मूल्य, विचार, व्यवहार तथा भैतिक वस्तुएं व्यक्ति के जीवन को बनाती हैं।
2. संस्कृति में व्यक्ति की आदतें, क्षमतायें, भाषा, औजार या यन्त्र, ज्ञान, विचार, कला, नैतिकता तथा कानून शामिल होते हैं।
3. संस्कृति भैतिक तथा अभैतिक दो प्रकार की होती हैं।
4. जैविकीय, सामाजिक लक्ष्ण और व्यक्ति की पर्यावरणीय विज्ञान, मानवीय संस्कृति के विकास में सहयोग देती हैं।
5. जब समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया तीव्र होती हैं तो भैतिक सांस्कृति में परिवर्तन तीव्र होता हैं और अभैतिक संस्कृति पिछे रह जाती हैं जिससे ऐसी स्थिति उत्पन्न होती हैं जिसे सांस्कृतिक पिछड़ापन कहते हैं। प्रत्येक संस्कृति की उप–संस्कृतियां होती हैं।
6. रीतिरिवाज सामाजिक व्यवहार और उनके पुनः प्रसारित का संगठित स्वरूप हैं।
7. रीतिरिवाज व्यक्ति के रोजाना व्यवहार के साथ संबंधित हैं जबकि परम्पराएं विशेष अवसरों से संबंधित हैं।
8. सामाजिक नियम समाज द्वारा विकसित किए गए वे मापदण्ड हैं जो समुह के समुह के सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं।
9. सामाजिक मूल्य समाज के उद्देश्यो की स्वीकारता और उसके विशेष महत्व को प्राथमिकता देता हैं।

शब्दावली

- **सांस्कृतिक परिवर्तनः** यह वह तरिका है जिसमें समाज अपने संस्कृति के प्रारूपों मे परिवर्तन करते हैं।
- **सांस्कृतिक पिछड़ापनः** यह समाज की वह दूरी हैं जिसमे भैातिक संस्कृति में परिवर्तन अभौतिक संस्कृति की तुलना में शीध्रता से आता हैं।
- **संस्कृतिः** यह रहन–सहन का सम्पूर्ण जोड़ हैं जिसे मानवीय प्राणी के समूह द्वारा बनाया जाता हैं। इसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किया जाता हैं और इसमे विशेष सामाजिक, नीतिशास्त्र या आयू समूह के व्यवहारों एवं विश्वासों की विशेषताओं को भी शामिल किया जाता हैं।
- **प्रथाः** यह समूह की नियमित क्रियाओ का प्रारूपण हैं जो विशेषतौर पर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित की जाती हैं।
- **भौतिक सस्कृतिः** यह भौतिक वस्तुओं या विरूपण साक्ष्य का संकलन होता हैं जिसे समाज के लिए प्रयोग किया जाता हैं।
- **अभौतिक संस्कृतिः** यह समाज के मूल्य, प्रतिमान आदि का इकट्ठ होता हैं।
- **मानदंडः** यह सामाजिक समूह के सदस्यों द्वारा सांझा किया जाने वाला सामान्य व्यवहार हैं जिसकी समाज के प्रत्येक सदस्य द्वारा स्वीकृत किए जाने की आशा की जाती हैं।
- **परम्पराः** यह सोचने या क्रिया करने की दीर्घ सामान्य या विरासत हैं।
- **मुल्य** सिद्धांत या व्यवहार के स्वीकार्य विश्वास हैं।

अभ्यास

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 1–15 शब्दों के बीच दीजिएः

1. संस्कृति के मूल तत्वों को बताओ ?
2. संस्कृति लोगों का रहने का सम्पूर्ण तरीका है, किसका कथन है ?
3. किस तरीके से अनपढ़ समाज में संस्कृति को हस्तांतरित किया जाता है।

4. संस्कृति के वर्गीकरण को विस्तृत रूप में लिखिए ?
5. अभौतिक संस्कृति के कुछ उदाहरणों के नाम लिखों ?
6. 'संस्कृतिक पिछड़ापन' का सिद्वांत किसने दिया है।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 30–35 शब्दों में दीजिए:

1. संस्कृति क्या है ?
2. संस्कृतिक पिछड़ापन क्या है ?
3. सामाजिक मापदडं क्या है ?
4. आधुनिक भारत के केन्द्रित मूल्य क्या है ?
5. पारम्परिक भारतीय समाज के सन्तुष्ट मूल्यों को बताइए ?
6. संस्कृति के ज्ञानात्मक घटकों को कैसे दर्शाया गया है ?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 75–85 शब्दों में दीजिये:

1. किस प्रकार संस्कृति लोगो का संपूर्ण जीवन है ?
2. भौतिक तथा अभैतिक संस्कृति को विस्तृत रूप में लिखों ?
3. संस्कृति के मूल तत्वों पर विचार विमर्श कीजिए ?
4. संस्कृति एक सीख व्यवहार है, इस कथन का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 250–300 शब्दों में दीजिए:

1. किस प्रकार सामाजिक विश्लेषण में संस्कृति रोजमर्रा में प्रयोग किए जा रहे शब्द सस्कृति से भिन्न है ?
2. संस्कृति से आप क्या समझते हो ? संस्कृति की विशेषताओं को बताइए?
3. संस्कृति के दो प्रकारों की विस्तृत रूप में चर्चा कीजिए ?
4. सांस्कृतिक विलम्बना या पिछड़पन को विस्तृत रूप में लिखों ?

अध्याय 6

समाजीकरण

मुख्य बिन्दुः

6.1 अर्थ

6.2 स्तर

6.3 समाजीकरण के अभिकरण

6.3.1 औपचारिक

6.3.2 अनौपचारिक अभिकरण

परिचय

समाजशास्त्र, समाजिक मानवविज्ञान तथा समाजिक मनोविज्ञान की दृष्टि से व्यक्ति एवं समाज, व्यक्ति एवं समूह, संस्कृति एवं निजी–अस्तित्व के विकास की प्रक्रिया का कई दृष्टियों से अध्ययन किया गया हैं। जन्म के समय बच्चा न तो बोल सकता हैं, न चल सकता हैं तथा न ही किसी व्यक्ति या वस्तु को पहचान सकता हैं। बच्चा तो सिर्फ अपनी जरूरतों को व्यक्त करने के लिए रो और चिल्ला ही सकता हैं। ज्यों ही वह बड़ा होने लगता हैं वह अपनी माता तथा परिवार के अन्य सदस्यों को पहचानने के योग्य हो जाता हैं। अपने परिवार के सदस्यों की सहायता से वह धीरे–धीरे हिलना–डुलना, चलना–फिरना तथा बात करना सीखते हैं। इस प्रकार, समूह में सीखने की प्रक्रिया को समाजीकरण कहते हैं। सीखने के अतिरिक्त, यह ग्रहण करने तथा आन्तरिक अनुभव की भी एक प्रक्रिया हैं।

समाजीकरण का अर्थ

समाजीकरण एक पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया हैं तथा यह बचपन से ही शुरू हो जाती हैं। इस प्रक्रिया से एक जैविकीय प्राणी, एक समाजिक प्राणी बन जाता हैं। समाजीकरण की प्रक्रिया के बिना एक व्यक्ति मनुष्य मात्र की तरह कभी व्यवहार नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए, अगर हम कुछ विशेष समय के लिए एक बच्चे को अन्य व्यक्तियों से दूर रखे तो हम देखेंगे कि बच्चे में शारीरिक विशेषताओं के अलावा मानवीय लक्षणो का विकास नहीं होगा। यहां तक कि एक व्यक्ति में चलने, फिरने, बोलने, तथा खाने–पीने के

ढ़ंग का भी सांस्कृतिक रूप से निर्धारित होता हैं। मानवीय शिशु के व्यक्तित्व को आकार प्रदान करने के साथ ही साथ सांचे में ढालने की प्रक्रिया को समाजीकरण कहते हैं।

बॉक्स 1

समाज में अलगाव का सर्वोत्तम उदाहरण 'बाद्य– बच्चा' रामू, जो कि बाद्य की गुफा से मिला था हैं। वह जानवरो की तरह चारो पैरो पर चलता था (हाथ और घूटने दोनो जमीन पर)। वह कच्चा मांस खाना पसंद करता था, बाद्यो की तरह हवांकता था, उस में बातचीत करने की क्षमता की कमी थी उस में किसी भी इन्सानी बच्चो वाले लक्षण नहीं थे। बाद में उसे मनुष्य वाले समाज में रखा गया लेकिन वह ज्यादा समय जीवित न रह सका। कुछ समय पश्चात ही वह मर गया।

इस प्रकार की एक अन्य घटना अमेरिका में भी पाई गई। वह अमेरिका की एक अवैध बच्ची थी। उसे एक अलग कमरे में छः वर्ष की उम्र से लेकर पॉच वर्ष तक अकेले रखा गया। जब उसे इस कमरे से निकाला गया तो वह न तो बोल सकती थी तथा न ही चल सकती थी। वह अपने आस–पास के लोगो से बिलकुल भिन्न थी। उसे पूरे ध्यान से प्रशिक्षण दिया गया तो उसमें धीरे–धीरे मानवीय गुणों का विकास होने लगा। वह 3–4 वर्ष के बाद मर गई। यह उदाहरण आगे इस सिद्धान्त को बल प्रदान करता है कि व्यक्ति का स्वभाव सिर्फ तभी विकसित होता है जब वह अन्य व्यक्तियों की संगति में रहता है और तब ही वह सामान्य जीवन को सांझा करना या सामान्य जीवन जीना सीखता हैं।

जन्म के समय पर मानवीय शिशु समाज और सामाजिक व्यवहार के बारे में कोई ज्ञान नहीं होता ? वह सिर्फ परिवार में अन्य सदस्यों के द्वारा प्रदान की गई शारीरिक जरूरतों को ही पूरा कर पाता हैं। एक नवजात शिशु परिवार के सदस्यों तथा माता के बीच भिन्नता नहीं कर सकता। जैसे एक बच्चा बड़ा होता हैं, वह परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अन्तकिया द्वारा धीरे–धीरे व्यवहारिक प्रारूपों को सीखता जाता हैं। सबसे पहले बच्चा परिवार के मापदण्डों एवं मूल्यों को सीखता हैं और समय के साथ–साथ, समाज के मान्य व्यवहारिक प्रतिमानों प्रारूपों को सीखता हैं। अन्य शब्द में, समाजीकरण, समाज एवं संस्कृति के विचारों, समाजिक मूल्यों, प्रारूपों और समाजिक भूमिकाओं को सीखने की प्रक्रिया हैं।

समाजीकरण एक प्रकिया के रूप में

समाजीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक व्यवस्था में सहयोग देने के लिए तैयार होता है। इसके अन्तर्गत प्रतिको की समझ, विचार, व्यवस्था, भाषा और सामाजिक व्यवस्था को बनाने वाले संबंध शामिल है। हमारा समाजीकरण सिर्फ व्यवस्था को समझना ही नहीं है बल्कि कैसे वे विशिष्ट तौर पर कार्य करते है को समझना तथा उनका मूल्यांकन करना एवं उनके परिणामों को देखना भी है।

समाजीकरण एक जीवन पर्यन्त प्रक्रिया है जोकि बच्चे के बढने तथा उसके स्वतंत्र होने तक निरन्तर चलती रहती है। यह आवश्यक विकास है जो माता–पिता को अपने बच्चो के संबंध मे अपनी भूमिका को आकार देने में मदद करती है। अपने जीवन के विभिन्न स्तरों पर व्यक्ति (मनुष्य) नई भूमिकाओं को सीखते है और पुरानी भूमिकाओ के खत्म होने के अनुसार उनमे सामंजस्य करते है। उदाहरण के लिए, जब व्यक्ति विवाहित होता है वह समाजीकरण के समय से दुबारा गुजरता है। जब वे एक बच्चे के माता–पिता बनते है ये प्रक्रिया फिर दुबारा शुरू करते है। वृद्धावस्था मे, वास्तविक तौर पर भूमिका में दुबारा परिवर्तन आता है। यह स्थिति तब पाई जाती है जब माता पिता असमर्थ हो जाते है तथा वे अपने बच्चो पर देखभाल एवं प्रेम के लिए आश्रित हो जाते है।

समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत हम दूसरो के साथ अन्तकियाओं द्वारा जुड़ाव महसूस करते है एवं सामाजिक व्यवस्था के साथ भी अपना जुड़ाव उत्पन्न करते है। सामाजिक व्यवस्था की निरन्तरता तथा पर्याप्त तौर पर कार्यात्मकता के लिए समाजीकरण आवश्यक है। यद्यपि प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था उन लोगो पर निर्भर है जिन्हें अपनी विभिन्न भूमिकाओं को जो उन्हे प्राप्त है को संचालन करने के लिए प्रेरित करती है।

समाजीकरण उन सभी प्रक्रियाओं को शामिल करता है जिसमें कुशलता की सीख, भूमिका, प्रारूप, मूल्य और व्यक्तिवादी लक्षण होते है जो जन्म से वृद्धावस्था तक या जन्म से मृत्यु तक चलते है। समाजशास्त्री सिर्फ व्यक्तिगत समाजीकरण में शारीरिक पक्षों को ही शामिल नहीं करते बल्कि सामाजिक पक्षों को भी शामिल करते है। सामाजिक तथा शारीरिक दोनो पक्ष ही सीखने की प्रकिया में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। व्यक्ति के पास ऑख और कान होते है जिसके द्वारा वह देख सकता है, सुन सकता तथा संदेशों को ले सकता है। ये सब जैविकीय पक्षों के भाग है जो किसी को समाजीकरण की प्रक्रिया मे मदद करते है। लेकिन सीखने की प्रक्रिया के सर्दभ में इस पक्ष की कुछ कमियां भी होती है। उदाहरण के लिए, अगर एक नवजात शिशु को मानवीय समाज से अलग कर दिया जाए, वह भाषा, मापदण्डो, मूल्यों तथा चलना फिरना सीखने में योग्य नहीं होगा।

जन्म के समय, मानवीय शिशु एक जैविकीय प्राणी होता है और मानवीय प्राणीयों के साथ अंतकियाओं के द्वारा ही सामाजिक मनुष्य के रूप मे परिवर्तित होता है जिनकी अपनी भाषा, संस्कृति, संबंध, मूल्य तथा पूर्वधारणाएं इत्यादि होते है। मानवीय शिशु का जैविक प्राणी के रूप में परिवर्तन ही समाजीकरण कहलाता है। बच्चा एक चिकनी मिट्ट्ी के समान है और माता–पिता, अन्य परिवारिक सदस्य तथा समाज, उसे समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा समाज के मापदण्डों के अनुसार एक मान्य आदतें सिखाते है और उसके व्यवहार को बदलते है। महत्वपूर्ण तौर पर, यह प्रक्रिया एक व्यक्ति के समाज मे निरन्तर सीखने प्रथाओं, परम्पराओं तथा विचारों को निभाने से खत्म नहीं होती।

समाजीकरण के स्तर

समाजीकरण सीखने की निरन्तर प्रक्रिया है। नवजात शिशु को सामाजिक जीवन के बारे मे सभी चीज़े एक साथ नहीं सिखाई जा सकती। जीवन के प्रारम्भिक स्तर पर जैसे कि शिशु अवस्था और बाल अवस्था में, समाजीकरण सीमित सामाजिक जगत के साथ शुरू होता है धीरे– धीरे यह सामाजिक जगत विशाल होता जाता है और बच्चा बहुत सारी वस्तुओं को सीखता जाता है तथा उनमे सामंजस्य स्थापित करता जाता है। यद्यपि, समाजीकरण की प्रक्रिया के शुरू तथा अन्त का कोई निश्चित समय नहीं होता है, इसलिए, समाजशास्त्रीयों ने समाजीकरण के कुछ स्तरो को दर्शाया है। हालांकि, कई विचारकों ने इन स्तरों से अधिकतम जुडे विभिन्न प्रकार के मॉडल दिए है, परन्तु निम्नलिखित स्तरो का अधिकतम वर्णन किया जाता है।

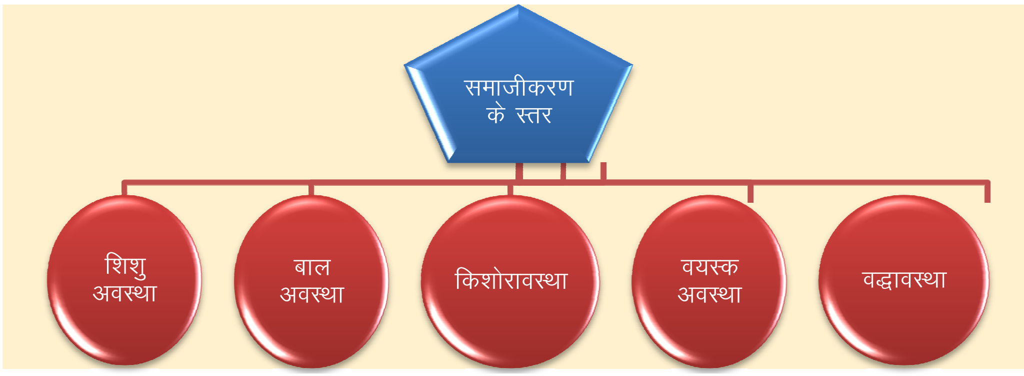

शिशु अवस्था

यह व्यवस्था नवजात बच्चे के जन्म से शुरू होती है और उसके एक साल पूरा होने तक चलती है। सबसे पहले बच्चा अपनी माता पिता और परिवार के अन्य सदस्यों के सम्पर्क में आता है। इस स्तर पर समाजीकरण का मुख्य स्त्रोत परिवार होता है। परिवार में ही बच्चा बोलना, चलना, खाना सीखता है और भाईयों, बहनों, माता– पिता और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ संबंधों को समझता है। इस अवस्था में ही बच्चा सक्षेप में अपने दैनिक शरीर की सफाई से जुड़ी गतिविधियों को सीखता है। इस प्रकार, हम कह सकते है कि इस अवस्था में बच्चा मुख्य व्यवहारिक प्रारूपों को सीखता है।

शिशु अवस्था

बाल अवस्था

खेलते हुऐ बच्चे — नर्सरी स्कूल में बच्चे

परिवार के वाद, बच्चा बाहय जगत के सर्पक में आता हैं। धीरे–धीरे वह दोस्त बनाता है, पड़ोस मे, अन्य बच्चों के साथ अंतर्क्रिया करता तथा खेलता है। तीन या चार साल की उम्र मे माता–पिता उनका स्कूल में दाखिला करवा देते है। तब स्कूल में, स्कूल सहपाठियों और अध्यापकों से अन्तर्क्रियाए समाजीकरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण होती है। नौ से दस साल की उम्र तक बच्चे का व्यवहार परिवार के कई सदस्यों, अध्यापकों, सहपाठियों तथा पड़ोस के हम उम्र के बच्चो, जो उनके मित्र समूह का हिस्सा है के द्वारा प्रभावित होता हैं उन्हे देखा जा सकता है और समाजीकरण की प्रक्रिया में ये महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है उदाहरण के लिए, जनजातिय क्षेत्रों में बच्चों का समाजीकरण परिवार में शारीरिक गतिविधियों की प्रक्रिया द्वारा शुरू किया जाता है। इन समाजों मे मानवीय जीवन प्रकृति के काफी नजदीक होता है, इसीलिए बच्चा मौसम, शिकार, मछली पकड़ना, फसलों, कृषि इत्यादि के बारे में बहुत कुछ सीख जाता है वह इसके साथ ही अपने जन परम्पराओं, गीतों और नाच को अपने जनजातिय समुदाय से सीखता है। काफी मात्रा में, यह ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों पर भी लागू होता है दूसरी तरफ, अनुसंद्यान दर्शाते है कि ग्रामीण तथा जनजातिय बच्चों की तुलना मे नगरीय बच्चो को अपनी पुरानी परम्पराओं के बारे में ज्ञान कम होता है लेकिन अधिक अवसारों की वजह से उनकी शब्दावली काफी विकसित होती है। इस प्रकार, समाजीकरण की प्रक्रिया जनजातीय, ग्रामीण, एवंम नगरीय समाजों में भिन्न–भिन्न होती है।

किशोरावस्था

किशोरावस्था के समय व्यक्ति की आवश्यकताऐं व सवंध भी उनकी सामाजिक तथा सास्ंकृतिक विभिन्नताओं के अनुसार बदल जाते हैं। जैसे कि वे इस अवस्था में काफ़ी लोगों के सम्पर्क में आते है, जो समाजीकरण की प्रकिया में उनके व्यवहारों को प्रभावित

करते हैं। वास्तव में किशेराावस्था एक व्यक्ति के लिए एक महत्वपूर्ण समय होता है, क्योंकि इस स्तर पर वह न तो बच्चा होता है और न ही युवा होता है। इस स्तर पर किशोरो में विभिन्न जैविकीय, शारीरिक और हारमोन में बदलाव आते है, जो कि कई मनोवैज्ञानिक समस्याओं का कारण बन सकते हैं।

क्रियाकलाप–6

- क्या आप सोचते हो कि किशोरावस्था एक अस्त–व्यस्त स्तर है?
- आपको क्या लगता है कि यह अवस्था आपके दिमाग में मानसिक संघर्ष पैदा करती है?
- क्या आपको घर तथा स्कूल में अभी भी बच्चा तथा किशोर दोनो ही समझा जाता है?
- ऐसी स्थितियो कें बारे में अपने अध्यापक/अध्यापिका से विचार विर्मश करें।

वयस्क अवस्था

इस अवस्था के दौरान युवा का मित्र समूह किशोरावस्था की तुलना में काफी बढ़ जाता है। व्यक्ति किसी व्यापार तथा व्यवसाय से भी जुड़ जाता है। यह भी संभव है कि वह किसी सामाजिक समूह, क्लब, राजनीतिक पार्टी, मजदूर पार्टी इत्यादि का सदस्य भी हो सकता है। इस अवस्था में व्यक्ति विवाहित हो जाता है और अपने परिवार, पड़ोस और मित्रों से अलग अपने पति या पत्नी के साथ तथा उसके परिवार से भी जुड़ जाता है। युवा किसी और पर ज्यादा निर्भर नहीं होता, बल्कि एक जिम्मेवार व्यक्ति बन जाता है और अनेक भूमिकाएं जैसेः पति/पत्नी, माता/पिता, परिवार का मुखिया, देश का नागरिक इत्यादि निभाता है। इसलिए नई भूमिकाएं और कई प्रकार के व्यवहार की उपे**क्षा** समाजीकरण का ही परिणाम है, जैसे बदलती परिस्थितियों के साथ–साथ व्यक्ति अपने आप को परिस्थितियों के अनुकूल ढाल लेता है।

कार्यक्षेत्र पर किशोर

परिवार के साथ बच्चे

वृद्वावस्था

बुजुर्ग व्यक्ति का जीवन प्राकृतिक वातावरण, व्यवसाय, मित्रों तथा विभिन्न समुहों के सदस्यों द्वारा प्रभावित होता है। इस अवस्था में सामाजिक मूल्यों को आत्मसात किया जाता है और व्यक्ति सामंजस्य की कला को सीखता जाता है। इस समय में व्यक्ति विपरीत स्थिति के अनुसार सामंजस्य स्थापित करना सीखता है। क्योंकि अब वह उतना ताकतवर नहीं होता जितना वह युवावस्था में था। व्यक्ति कई नई भूमिकाओं को जैसेः सास/ससूर, दादा–दादी, रिटायर व्यक्ति, बुजुर्ग नागरिक इत्यादि के तौर पर मूल्यों, व्यवहारों तथा सांस्कृतिक मापदण्ड़ों में बदलाव के बिना प्राप्त करता है। व्यक्ति नई सामाजिक स्थितियों के साथ सामंजस्य करना सीखता है। यह समाजीकरण की अंतिम अवस्था है। यघपि, समाजीकरण की प्रक्रिया यही खत्म नहीं होती। यह व्यक्ति की मृत्यु तक लगातार चलती रहती है। इस प्रकार, समाजीकरण सीखने की वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जीवन में काफी पहले शुरू हो जाती है और मृत्यु तक लगातार चलती रहती हैं।

समाजीकरण की सस्थाएं (अभिकरण)

जीवन के विभिन्न स्तरों के दौंरान व्यक्ति भिन्न–भिन्न, संस्थाओं, समूदायों तथा व्यक्तियों के संपर्क में आता है। अपने सपूर्ण जीवन के दौरान वे बहुत कुछ सीखता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में विभिन्न अभिकरणं तथा संगठन महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं तथा संस्कृति के विभिन्न तत्वों का संस्थापन करते हैं। प्रत्येक समाज के समाजीकरण के अभिकरण होते है जैसे व्यक्ति, समूह, संगठन तथा सस्थाऐं जोकि जीवन क्रम के समाजीकरण के लिए पर्याप्त मात्रा प्रदान करते है। अभिकरण वह क्रिया विधि है जिसके द्वारा स्वं विचारों, विश्वासों एवं संस्कृति के व्यवहारिक प्रारूपों को सीखता हैं। अभिकरण नए सदस्यों को समाजीकरण की सहायता से अनके स्थानों को ढूढ़ने में सहायता करते हैं उसी प्रकार जैसे वे समाज के वृद्वावस्था को नई जिम्मेदारियों के लिए तैयार करते हैं।

बॉक्स 2

समाजीकरण की दो अवस्थाएं होती है :– प्राथमिक और द्वितीय। इन दीनों अवस्थाओं में औपचारिक तथा अनौपचारिक अभिकरण समाजीकरण की अवस्था के लिए उत्तरदायी होते हैं। ये वें अभिकरण या व्यक्ति होते है जो व्यक्ति में विशष्ट समाज के लिए मूल्य तथा प्रतिमान का समाजीकरण करते है।

वे व्यक्ति और समूह जो कि हमारे स्व–अवधरणा, संवेगों, मनोभावों और व्यवहारों को प्रभावित करते हैं उन्हे समाजीकरण के अभिकरण कहा जाता है। समाजीकरण के अभिकरण वे स्त्रोत होते है। जो समाज तथा स्वयम को समझने के मुख्य स्त्रोत के रूप में होते हैं। व्यक्ति के समाजीकरण में सहायक परिवारिक सदस्य, मित्र, पडोस, पुलिस, व्यवसायी, अध्यापक, राजनीतिज्ञ, सम्पादक, क्रीड़ा तारक, तथा मनोरंजन करने वाले कलाकार जैसे फ़िल्मी कलाकार इत्यादि शामिल हैं।

समाजीकरण की सस्थाएं (अभिकरण)

समाजीकरण की सस्थाओं को दो भागों में बाटां जा सकता है–अनौपचारिक या सामाजिक समुह अभिकरण और औपचारिक या संस्थागत अभिकरणं।

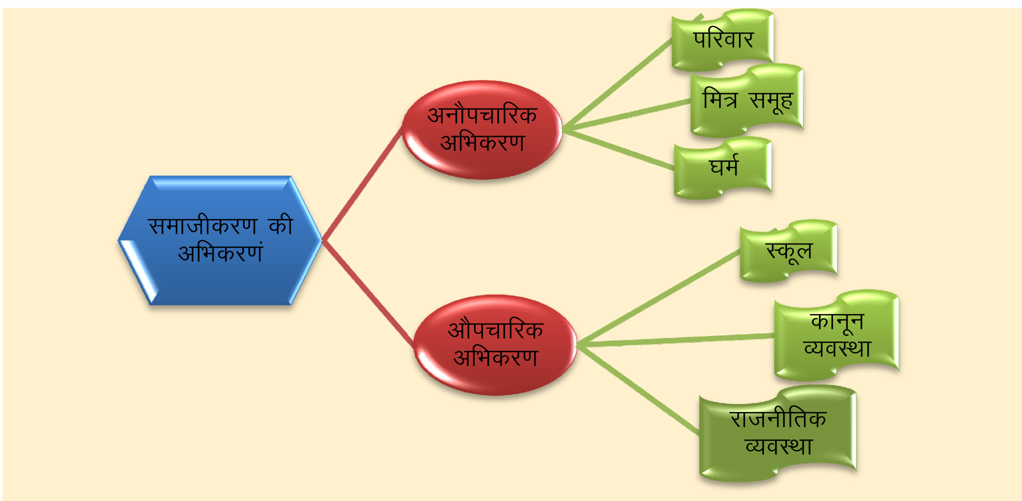

अनौपचारिक (सामाजिक समुह) संस्था

इसके अंतर्गत व्यक्ति और सामाजिक अभिकरण आते है जो व्यक्ति का अनौपचारिक तौर पर समाजीकरण करती हैं। जैसे परिवार, सहयोगी समुह, पडोस तथा घर्म।

परिवार

परिवार समाजीकरण की सबसे पहला तथा महत्वपूर्ण अभिकरण होता है, इसके बाद मित्र समुह और पड़ोस आते हैं। परिवार समाज की एक छोटी इकाई होती है तथा इसके सभी रूपों को दर्शाती हैं। समाज में परिवार अनेक कार्यों को निभाता है। बच्चे की अनेक जरूरतें, उदाहरण के लिए, मनोवैज्ञानिक, मनोरंजक, बचाव, शैक्षिक, तथा आर्थिक परिवार द्वारा ही पूरी होती हैं। कुछ लोग एकाकी परिवार में रहते है, जबकि कई परिवार संयुक्त परिवार में रहते हैं। संयुक्त परिवार में दादा–दादी/नाना–नानी समाजीकरण के

मुख्य स्त्रोत होते है, जबकि एकल परिवार में यह भूमिका माता–पिता द्वारा निभाई जाती है। सभी प्रकार के परिवारों में माता समाजीकरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सी• एच• कुले• के अनुसार, परिवार के अंतर्गत समाज के सभी मापदण्ड, मूल्य, व्यवहारिक प्रारूप, प्रस्थिति और भूमिका आते हैं। व्यक्ति को समाज का महत्वपूर्ण भाग बनाने में परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण हैं। बच्चा परिवार में सदस्यों की भूमिकाओं का अवलोकन करता है जैसेः माता, पिता, बहन, भाई, पति, पत्नी इत्यादि । परिवार के सभी सदस्य अपने प्रस्थितियो के अनुसार अपनी भूमिका निभाते है। बच्चा इन प्रस्थितियों और भूमिकाओं के अनुसार अपने आप को पहचानता है। समय के साथ बच्चा परिवार से बाहर निकलकर समाज की सामाजिक क्रियाओं में हिस्सा लेता है, वह परिवार से काफी मान्य सामाजिक व्यवहारों को सीखता है। परिवार में बच्चा अपनी संस्कृति के ज्ञान, विश्वास, मनोभाव, भावुकता को अपनाता तथा सीखता हैं।

विवाह में परिवार

परिवार मंदिर में पूजा करता हुआ

क्रियाकलाप–6.2

प्रत्येक परिवार कुछ विशेष नियमों का पालन करता है जो परिवार के सदस्यों के व्यवहार को निर्धारित करते है।

1. उनमें कौन से नियम आपके परिवार के लिए विशेष है तथा कुछ परिवारों के लिए लागू न किये जा सकने वाले भी हो सकते है।
2. आप कैसे सोचते हैं कि परिवार के बड़े–बूढ़े (दादा–दादी आदि) बच्चों के समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

सहयोगी (मित्र) समूह तथा पड़ोस

सहयोगी समूह लोगों का, समान उम्र, पृष्ठभूमि, रूचियों तथा समान सामाजिक प्रस्थितियों के लोगों के समुह होते हैं जिसके साथ एक व्यक्ति संबधित होता है और जो उसके

विचारों तथा व्यवहारों को प्रभावित करते हैं। और जो व्यक्ति के विचारों तथा व्यवहारों को भी प्रभावित करते है। क्योंकि बच्चे ज्यादातर समय अपने सहयोगी मित्रों के साथ बिताते है, सहयोगी समूह अनौपचारिक रूप से समाजीकरण प्रदान करता है। इस समूह में बच्चे अपने युवाओं के प्रत्यक्ष निरीक्षण से दूर हो सकते है और मित्र समूह परिवार की तुलना में उनका व्यवहार खुला तथा लोकतांत्रिक होता है। सहयोग समूह में बच्चे अपने आप संबंधो को बनाना सीखते हैं। इस समूह के सदस्य समान रहन–सहन, फैंशन के तरीके, गुप्त कल्पना को सांझा करते है जिन्हें वे अपने परिवार के सदस्यों के साथ सांझा नहीं कर सकते।

सहयोग समूह में बच्चा अलग तरीके की अंतःकियाओं की खोज करता है, जिसके अन्तर्गत व्यवहार के नियमों का निरीक्षण या परिक्षण किया जा सकता है। यह समूह सामाजिक वातावरण को प्रदान कराता है, जिसमें युवा भूमिकाओं को निभाने की कोशिश की जाती है। उदाहरण के लिए, मित्र समूह में बच्चें आमतौर पर खुले में कई प्रकार की भूमिकाएं निभाते हैं और कई प्रकार बार अचेतनता में लड़के पिता की तरह और लड़कियां माता की तरह व्यवहार करती है। यह एक प्रकार का प्रत्याशी समाजीकरण होता है, इस प्रक्रिया में वे अपने आपको भविष्य जीवन के लिए तैयार करते है। सहयोग समूह का प्रभाव उम्र के साथ बढ़ता जाता है और यह निरन्तर किशोरावस्था तक बढ़ता जाता है।

चिकित्सा/मैडीकल स्टाफ जैसी पोशाक में बच्चे

घर घर खेलते बच्चे

क्रियाकलाप–6.3

1 सहयोगी समूह आप को किशोरावस्था में अधिक प्रभावित करता हैं। क्या आप कुछ सकारात्मक तथा नकारात्मक दबावों के बारे में सोच सकते है? उनकी सूची बनाओं।

2 आप कैसे और क्यों सोचते है निम्नलिखित नीचे दी गई वस्तुओं की कमी आप को प्रभावित करती है?

अ. टी॰ वी सेट/संगीत वाघ–यन्त्र...........

ब. आप का अपना कमरा............

स. मोबाइल फोन...........

द. कम्पयूटर.........

इसी प्रकार, पड़ोस भी बच्चे के समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला अभिकर्ता है। विशेषतौर पर, बच्चों में दोस्ती अपने उम्र के हिसाब के पड़ोस में रहने वाले बच्चों के साथ ही होती है। जब बच्चा पड़ोसियों के सम्पर्क में आता है वह धीरे–धीरे अपने पड़ोस के बच्चों को अपना दोस्त बना लेता है। वह पड़ोस के अन्य बच्चों के सम्पर्क से ही नहीं बल्कि उनके माता–पिता से भी प्रभावित होता है और अपने माता–पिता से भी वैसे ही व्यवहार की आशा करता है। पड़ोसी समूह में बच्चा पड़ोसी के व्यवहार को देखता है और उसी के अनुसार ढ़लने की कोशिश करता है। यहां तक कि जब बच्चे पड़ोसियों से अंतःक्रिया करते है तो वे उनकी सास्ंकृतिक क्रियाओं जैसे– गाना, नाटक, खाने की आदतें, संगीत, खेल इत्यादि भी सीखने की कोशिश करते हैं। एक विभिन्नता वाले देश भारत में लोग अपने पड़ोसियों के साथ विभिन्न प्रकार के त्योहारों को मनाते है जैसे– होली, दीपावली, ईद, क्रिसमस, गुरूपूर्व इत्यादि और इस अंतःक्रियाओं द्वारा बच्चा विभिन्न धार्मिक पक्षों के साथ सास्ंकृतिक पक्षों के ज्ञान को समझता तथा सीखता है।

धर्म

यघपि धर्म की महत्ता लोगों में अब कम हो गई हैं जबकि कुछ पीढ़ीयां पहलें, यह हमारे विचारों मूल्यों और व्यवहारों को भी काफी प्रभावित करती थी। भारत जैसे देश में धर्म हमारे जीवन के हर पक्ष को नियंत्रित करता है और यह समाजीकरण का एक शक्तिशाली अभिकर्ता (ऐंजट) होता है।

कई प्रकार के धार्मिक संस्कार एवं कर्मकाण्ड, विश्वास एवं श्रद्वा, मूल्य एवं मापदण्ड धर्म के अनुसार ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होते है। धार्मिक त्योहार आमतौर पर सामुहिक रूप से निभाये जाते है जोकि समाजीकरण की प्रक्रिया में सहायता करते है। धर्म के सहारे ही एक बच्चा एक अलौकिक शक्ति (भगवान) के बारे में सीखता है कि यह हमें बुरी आत्माओं तथा बुराई से बचाती है यह देखा जाता है कि अगर एक व्यक्ति के माता–पिता धार्मिक होते है तो जब एक बच्चा बड़ा होगा वो भी धार्मिक बनता जाएगा।

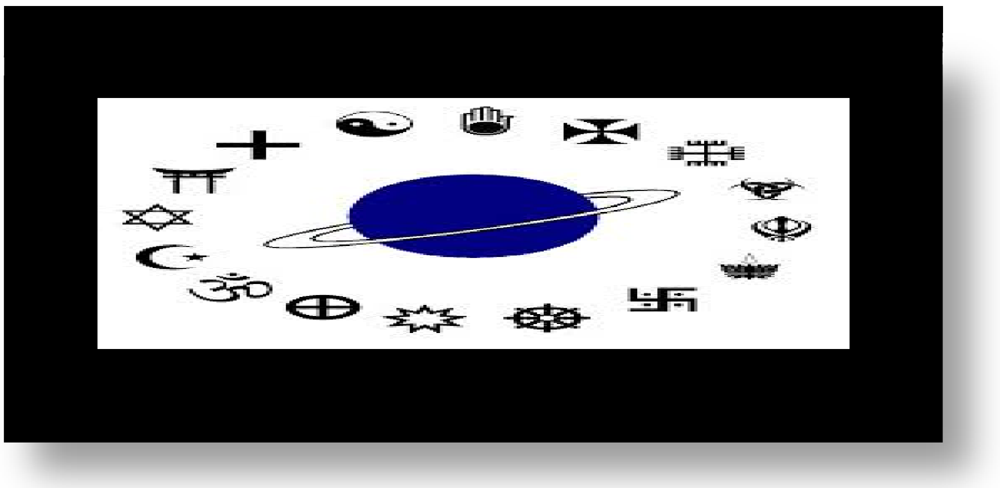

कियाकलाप 6.4

1 अपने स्कूल में आप किस प्रकार सामाजिक और धार्मिक त्यौहारों को मनाते हों ? स्वतंत्रता दिवस, गुरूपर्व, दीपावली इत्यादी त्याहारों की तस्वीरों का एक कोल्लाज बनाओ।

2 उन सभी कियाओ की सूची बनाओ जो तुम्हारे स्कूल के कलैंडर का अभिन्न अंग है।

औपचारिक (अभिकरण)

ये संस्कृति की समाजीक अभिकरण है जो औपचारिक समाजीकरण प्रदान करता है ये स्कूल, कानून और राजनीतिक व्यवस्था को शामिल करती है।

स्कूल (विद्यालय)

स्कूल समाजीकरण का औपचारिक एवं परिणामकारी एजेंट होता है। स्कूल में बच्चे के समाजीकरण की प्रक्रिया के लिए सहपाठियों के साथ अंतःक्रिया और साथ ही साथ अध्यापिका, अध्यापक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। स्कूल में व्यक्ति औपचारिक नियम तथा शिष्टाचार को सीखता है। यहां बच्चे के सहपाठी, मित्र, मनोरंजन के साधन, खेल और किताबें बहुत महत्व रखते है। औपचारिक पाठ्यक्रम के साथ कुछ समाजशास्त्रियों ने इन्हें स्कूल को बच्चो के अनौपचारिक तरिके से पाठो को सीखने तथा दुसरों तक पहुचाने वाला अनौपचारिक पाठयक्रम भी कहा है। स्कूल में बच्चा पहली बार सही तरिके से दैनिक तौर पर अपना काम करना सीखता है और स्कूल ही व्यक्ति के जीवन को अनुशासित बनाता है। स्कूल बच्चों को विशाल रूप से अपने भविष्य जीवन के लिए ज्ञान तथा कुशलता सीखाता है।

स्कूल की ईमारत

स्कूल में पुरस्कार वितरण कार्यक्रम

भिन्न–भिन्न क्रियाओं के द्वारा स्कूल देशभक्ति की भावना, लोकतंत्र, न्याय, ईमानदारी और प्रतियोगिता को सीखाने में मदद करता है। इन प्रयासो का प्रयोग बच्चो में अकादमी समाजीकरण के रूप में आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक व्यवस्था को सिखाने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, समय समय पर स्कूल अधिकारी विभिन्न प्रकार की क्रियाओं जैसे परिचर्चा, निबंध लेख, नाच प्रतियोगिता आदि की व्यवस्था करते है। जिससे बच्चों को उनके समाजीकरण में सहायता मिलती है। राजनीतिक समाजीकरण भी औपचारिक शिक्षा का उत्पादन होता है। अवास्तविक संसद द्वारा बच्चे राजनीतिक व्यवस्था की मूल शिक्षा प्राप्त कर सकते है।

कानूनी तथा वैद्यानिक व्यवस्था

समाजीकरण की एक औपचारिक संस्था कानून होता है। जोकि व्यक्ति को नियम सीखाती है जिसके द्वारा वे सजा या पुरस्कार प्राप्त करते है। कानून, समाजिक नियंत्रण के रूप में एक मशीनरी की तरह क्रिया करता है तथा संस्थागत एवं असंस्थागत अभ्यास

को भी सीखने में मदद करता है। प्रत्येक देश के अपने कानून के नियम तथा व्यवस्था होते है जोकि अन्य देशो से भिन्न होते है। उदाहरण के लिए, भारत का कानून अमेरिका के कानून से भिन्न है। राज्य की शक्ति द्वारा ही कानून का संचालन होता है। बाल अवस्था से ही बच्चा कानून तथा वैद्यानिक व्यवस्था को सीखाना शुरू करता है। जैसे माता–पिता और मित्र राज्य के कानूनी मापदण्ड को मानते है या उनकी पालना करते है वैसे ही बच्चा भी कानून तथा वैद्यानिक व्यवस्था की पालना करना सीखाता है।

न्याय कक्ष

महिला पुलिस अधिकारी

राजनीतिक व्यवस्था

राजनीतिक व्यवस्था बच्चे के विकासशील प्रक्रिया को सीखने में मदद करता है जिसके द्वारा व्यक्ति समाज में प्रस्थिति प्राप्त करता है। हम मान्य मापदण्ड के व्यवहार के बारे में सीखते है जोकि राजनीतिक व्यवस्था को सही ढंग से चलाने के लिए आवश्यक है। राजनीतिक विश्वास छोटी ही उम्र में बनने शुरू हो जाते है जोकि व्यक्ति में विचारधारा पैदा करने में सहायक होते है। राजनीतिक दल प्रत्यक्ष तौर पर नौजवानों के दिमागों को प्रभावित करती है और कई बार बच्चा उच्च कोटि के राजनीतिक नेताओं के अच्छे और साकारत्मक विचारों से भी सीखता है।

राजनीतिक व्यवस्था

भारत में मतदान

लोक माध्यम

लोक माध्यम भी समाजीकरण का एक ओर अभिर्कता है। लोकमाध्यम से अभिप्राय लोगो का टी. वी., अखबारों, रेडियो तथा इटरनेंट द्वारा प्राप्त सूचनाओं पर विश्वास से होता है। चूंकि एक सामान्य बच्चा अपना रोज का समय मीडिया के कई रूपों में बिताता है। यह उसके समाजिक मापदण्डों, विश्वासों और व्यवहारों को विशाल तौर पर प्रभावित कर सकते है। व्यक्ति मीडिया द्वारा भौतिक संस्कृति की वस्तुओं के बारे में सीखता है। टी. वी. कार्यक्रम, फिल्में, मैगजीन, वेब साइट और लोक माध्यम के अन्य पक्ष हमारे राजनीतिक नजरीये, औरतों की तरफ हमारा नजरीया, विलक्ष्ण सक्षमता तथा विभिन्न रंग व नस्ल के व्यक्ति और अन्य विश्वास एवं प्रथाओं को भी प्रभावित करता है। लोक माध्यम द्वारा युवाओ में हिंसा, नस्लवादिता, लिंग रूढ़िता और संस्कृति उपभोग को बढ़ाने के लिए इसकी आलोचना भी की जाती है।

कम्पयूटर का प्रयोग करते ग्रामीन

परिवार टी. वी. देखते हुए

निष्कर्ष

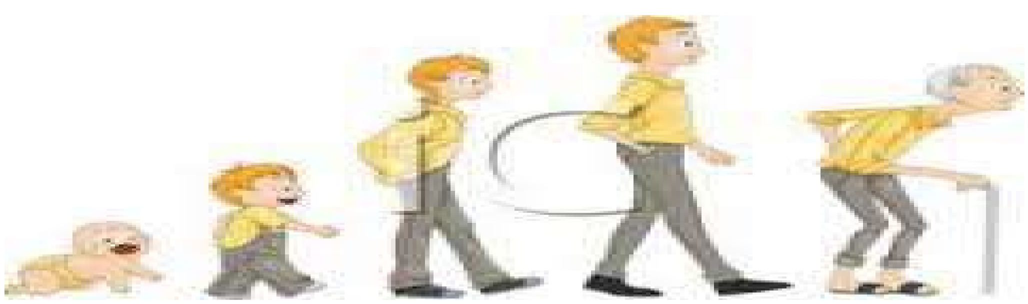

जीवन चक्र

यह पाठ समाजीकरण द्वारा ज्ञान को सीखने की प्रक्रिया के ज्ञान से संबंधित होता है। बच्चा जन्म के समय केवल जैविक प्राणी होता है। धीरे धीरे वह सामाजिक प्राणी बनता है। दूसरे के साथ अंतःक्रिया के द्वारा सीखने की प्रक्रिया को समाजीकरण कहते है। समूह के द्वारा व्यक्ति आदतों, पहननें के सलीके, शिष्टाचार, सामाजिक मापदण्ड़ और मूल्यों के प्रयोग को सीखाता है। व्यक्ति अन्य समुहो और व्यक्तियों के साथ शिशु अवस्था, बाल अवस्था, किशोरवस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था के दौरान सम्पर्क में आता है। व्यक्ति के समाजीकरण के मुख्य एजेंट परिवार (शिशु अवस्था के दौरान), स्कूल एवं मित्र (बाल अवस्था के दौरान), धर्म, कानून आदि (युवा अवस्था मे) होते है। समाजीकरण की प्रक्रिया के दो पक्ष होते है। पहली श्रेणी में, व्यक्ति सामाजिक तथा संस्कृति प्रारूपों के प्रभाव के अन्तगर्त सामाजिक मूल्यों को सीखता या अपनाता है। दूसरा पक्ष, उनके व्यक्तित्व को विकसित करने में मदद करता है। समाजीकरण द्वारा सामाजिक जिम्मेवारियों तथा व्यक्ति स्वायतता को अर्जित करना उद्देश्य बन जाता है। व्यक्ति का "स्व" समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा विकास होता है।

इन दिनो आमतौर पर यह कहा जा सकता है कि बच्चों पर माता पिता तथा अध्यापको का नियन्त्रण कम हो गया है। इसका अर्थ बच्चे बड़ो की सता को मान्यता नहीं देते। सता का अर्थ दबाव का प्रयोग करना नहीं होता हैं। सजा का डर बच्चे को आज्ञा का पालन करने के लिए दबाव डालता है लेकिन यह उनमें समाज के नियमों और मापदण्डो मानने की स्वैच्छा पैदा नहीं कर सकता। अगर माता–पिता सामाजिक नियमों की पालना करेंगे तब माता–पिता, अध्यापकों, एवं दूसरो का व्यवहार बच्चों की तरफ स्नेह भरा होगा तब बच्चा भी ऐसा व्यवहार करना सीखेंगा। इसके विपरित, अगर माता पिता का व्यवहार बच्चो के प्रति उल्ट होगा तो यह बच्चों मे अवज्ञा या आज्ञा न मानने की भावना को पैदा करेगा। माता–पिता, अध्यापक और दोस्तों का बच्चों के प्रति स्नेहपूर्ण व्यवहार बच्चों और अन्य व्यक्तियों के मध्य घनिष्ठ संबंध को विकसित करता है। बच्चे की स्वतंत्रता से उसकी आन्तरिक वचनबद्धता बढ़ती है। बच्चे को स्वयं अपने कार्य और सहज अभिरूचि को विकसित करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। समाजीकरण की प्रक्रिया में सख्त सजा, उच्च ईनाम या बच्चों को आजादी देकर हमेशा स्नेह देना नहीं होता। यह केवल समाजीकरण की सही प्रक्रिया ही है जो बच्चें के विकास में अत्यधिक महत्व रखती है।

शब्दावली

- **किशोरवस्था:** यह मानवीय विकास में यौवनारंभ और व्यवस्कवस्था के मध्य पारम्परिक समय है जोकि किशोरावस्था की और बढ़ता है।
- **समाजीकरण की औपचारिक संस्था:** इसे संस्थागत संस्था भी कहा जाता है। ये संस्कृति में सामाजीकरण की सामाजिक संस्थाएँ है जोकि औपचारिक समाजीकरण को शामिल करती है। इसके अन्तगर्त स्कूल, कानून और राजनीतिक व्यवस्था शामिल होती है।
- **शिशु अवस्था:** शिशु प्राणी का समय या पूर्व बाल अवस्था विशेषतः जिसमें समय से पहले चल फिर नहीं पाते।
- **समाजीकरण की अनौपचारिक संस्था:** इन्हे सामाजिक समूह की संस्था कहा जाता है। इसके अन्तर्गत व्यक्ति और वे सामाजिक संस्थाएँ आती है जोकि व्यक्ति का अनौपचारिक तौर पर समाजीकरण करती है।
- **क्रीड़ा समूह:** यह व्यक्तियों का समूह है जोकि सामान्यः समान आयु, पृष्ठ भूमि एंव सामाजिक प्रस्थिति के होते है जिसमें वे एक दूसरे से जुड़े हुए होते है और जो व्यक्ति के विश्वास एंव व्यवहारों को प्रभावित करते है।
- **स्व:** व्यक्ति या चीज़ की निश्चित पहचान
- **समाजीकरण:** यह एक निरन्तर प्रक्रिया है जहाँ से व्यक्ति अपनी पहचान प्राप्त करता है और मानदंड, मूल्यो, व्यवहारों एंव सामाजिक कुशलता को सीखता है जो उसकी सामाजिक स्थिति के अनुकूल होती है

अभ्यास

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 1–15 शब्दों के बीच दीजिए:

1. समाजीकरण से आप क्या समझते हो ?
2. समाजीकरण के स्तरों के नाम लिखो ?
3. किशोरवस्था क्या है ?
4. शिशु अवस्था क्या है ?
5. समाजीकरण की प्राथमिक अभिकरण (संस्थाएं) कौन सी है ?
6. सामाजीकरण की औपचारिक संस्था के दो उदाहरण लिखो ?
7. सामाजीकरण की अनौपचारिक संस्था के दो उदाहरण लिखो ?

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 30–35 शब्दों में दीजिए:

1. समाजीकरण को परिभाषित कीजिए ?
2. समाजीकरण के स्तरों को लिखिए ?
3. समाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार की भूमिका पर विचार विमर्श करो ?
4. समाजीकरण की तीन औपचारिक संस्थाएं लिखो ?
5. प्राथमिक समाजीकरण को संक्षिप्त रूप में लिखों ?
6. मास मिडिया समाजीकरण की संस्था है चर्चा करो।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 75–85 शब्दों में दीजिये:

1. समाजीकरण की विशेषताओं पर विचार विमर्श कीजिए ?
2. समाजीकरण में क्रिड़ा समुह की महत्ता क्या है ?
3. युवा तथा वृद्धावस्था में समाजीकरण की प्रक्रिया को दर्शाइए ?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 250–300 शब्दों में दीजिए:

1. समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति के विकास पर विचार विमर्श कीजिए ?
2. समाजीकरण के विभिन्न स्तरों के बारे में लिखिए ?
3. समाजीकरण की संस्थाओं को विस्तृत रूप में लिखो ?
4. व्यक्तिगत विकास के विभिन्न स्तरो तथा समाजीकरण की संस्थाओं के मध्य संबंघो पर चर्चा कीजिए?

इकाई : 4

सामाजिक संस्थाएं

अध्याय 7

विवाह, परिवार तथा नातेदारी

मुख्य बिन्दुः

7.1 संस्था का अर्थ एवं विशेषताएं
7.2 विवाहः स्वरूप, जीवन साथी चुनने के नियम, परिवर्तन
7.3 परिवारः विशेषताएं, कार्य, रूप, परिवर्तन
7.4 नातेदारीः प्रकार

परिचय

मनुष्य की मूलभूत मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सभी समाजों में कुछ संस्थाओं की स्थापना की गई हैं। एक संस्था किसी सामाजिक व्यवस्था एंव सहयोग की कोई संरचना या कोई तंत्र हैं जो एक समुदाय के भीतर व्यक्तियों के व्यवहार को नियन्त्रित करती है। संस्थाएं विशिष्ट आवश्यकताओं का पूरा करने के साधन है जो एक समाज के अस्तित्व की निरन्तरता के लिए महत्वूपर्ण हैं।

संस्था का अर्थ एवं परिभाषाएं

संस्था शब्द अक्सर एक सामान्य व्यक्ति के द्वारा एक विशिष्ट स्थापित औपचारिक संगठन को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त किया जाता हैं, जैसे एक विद्यालय, एक अस्पताल एवं एक जेल। हांलाकि, समाजशास्त्र में संस्था का अभिप्राय व्यवहार या सम्बन्धों के सुस्थापित तथा संरचित प्रारूप से लिया जाता हैं जिसे एक संस्कृति के मूलभूत अंग के रूप में स्वीकृति प्राप्त हैं, जैसे विवाह। इस शब्द का प्रयोग प्रथा, प्रक्रिया या कानून की विवेचना करने के लिए भी किया जा सकता हैं जिसे अनेक लोगो द्वारा स्वीकृत एवं प्रयुक्त किया जाता हैं। मैकाईवर एवं पेज की परिभाषा के अनुसार, संस्था समूह गतिविधि की विशेषताएं, प्रक्रिया की शर्ते या स्थापित स्वरूप हैं। संस्थाएं लोगो के समूह नहीं हैं। समाजशास्त्री संस्था शब्द को आदर्शवादी प्रणाली की विवेचना करने के लिए प्रयुक्त करते हैं जो कि मानव जीवन के मूलभूत क्षेत्रों में संचालित होती हैं। इस प्रकार, सामाजिक सस्थाएं सामाजिक प्रतिमानों, विश्वासों, मूल्यों तथा भूमिका संम्बन्धों का एक जटिल

समुच्चय है जो समाज की आवश्यकताओं के प्रत्युत्तर में उत्पन्न होती हैं। ये संस्थाएं मनुष्यों की सामाजिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं को पूरा करती हैं।

सामाजिक संस्थाएं राज्य की तरह 'वृहद' अथवा परिवार की तरह 'सूक्ष्म' दोनों हो सकती हैं। सामाजिक संस्थाएं हमारे मानव अस्तित्व को एक विशिष्ट पहचान देती हैं तथा हमारे सामाजिक जीवन को जीवन्त बनाती हैं। महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थाओं में परिवार, विवाह, नातेदारी, राजनीतिक दलो, बैंको, कारखानों, धर्म इत्यादि को सम्मिलित किया जाता हैं।

संस्थाओं की विशेषताएं

संस्थाओं की महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

1. **विशिष्ट आवश्यकताओं की संतुष्टि:** प्रत्येक संस्था व्यक्ति की कुछ विशिष्ट आवश्यकताओं को संतुष्ट करती हैं। उदाहरण के लिये, परिवार बच्चों का जन्म, पालन तथा उनका समाजीकरण करता है और अपने सदस्यों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता हैं, जबकि सरकार एक समाज के भीतर कानून व्यवस्था बनाये रखने की आवश्यकता को पूरा करती हैं।

2. **नियमों का निर्धारण:** प्रत्येक संस्था कुछ नियमों और अधिनियमों को निर्धारित करती है जिनका पालन किया जाना हैं। उदाहरण के लिये विवाह एक संस्था के रूप में पति एवं पत्नी के मध्य के सम्बन्धों को, जीवन साथी चुनने के नियमों को नियन्त्रित करता हैं इत्यादि। इसी तरह शैक्षणिक संस्थाओं के रूप में विद्यालयों या महाविद्यालयों के अपने नियम और कार्य प्रणाली होती हैं।

3. **अमूर्तता:** संस्थाएं स्वभाव से अमूर्त होती हैं। ना ही उन्हे देखा जा सकता है ना ही अनुभव किया जा सकता हैं, उदाहरण के लिये विवाह, परिवार या धर्म की संस्थाओं को ना ही देखा जा सकता है ना ही मापा जा सकता हैं।

4. **सांस्कृतिक प्रतीक:** संस्थाओं के अपने सांस्कृतिक प्रतीक होते हैं जो स्वभाव से भौतिक या अभौतिक हो सकते हैं। उदाहरण के लिये, एक देश का ध्वज और राष्ट्रीय गीत उसके प्रतीक हैं, एक विद्यालय का अपना आदर्श वाक्य और यूनीफार्म (वर्दी) होती है इत्यादि।

5. **सार्वभौमिकता:** सामाजिक संस्थाएं स्वभाव से सार्वभौमिक हैं। वे प्रत्येक समाज में तथा सामाजिक विकास के प्रत्येक चरण में पायी जाती हैं।

6. **सामाजिक स्वभावः** लोगो की सामूहिक गतिविधियों से संस्थाओं का निर्माण होता हैं। वे स्वभाव से अनिवार्य रूप से सामाजिक होती हैं।

7. **मौखिक एवं लिखितः** संस्थाएं मौखिक/लिखित परम्पराओं के रूप में हो सकती हैं। आदिम समाज जटिल आधुनिक समाजों की तुलना में अत्यधिक मौखिक थे।

8. **स्थायित्व एंव कठोरताः** संस्थाएं दीर्घकालिक तथा स्वभाव से कठोर होती हैं। यद्यपि संस्थाएं विभिन्न समाजो और संस्कृतियों के भीतर और बाहर भिन्न तथा परिवर्तित हो सकती हैं, इनमें संशोधन की गति बहुत धीमी होती है और अचानक नहीं होती।

9. **नियन्त्रण करने का साधनः** संस्थाएं समाज को नियंत्रित करने के साधन के रूप में काम करती हैं, उदाहरण के लिये, धर्म, कानून, नैतिकता, विधान इत्यादि जो व्यक्तियों के व्यवहार को नियन्त्रित करते हैं तथा समाज में सामाजिक व्यवस्था और स्थिरता को बनाये रखने में मदद करते हैं।

10. **संस्थाएं अन्तःसम्बन्धित हैंः** यद्यपि प्रत्येक संस्था स्वभाव से भिन्न होती हैं परन्तु वे अन्तःसम्बन्धित हैं एक संस्था में होने वाला परिवर्तन दूसरी संस्था में भी परिवर्तन ले आता हैं।

इस अध्याय में हम सामाजिक संस्थाओं के महत्वपूर्ण अवयवों के रूप में विवाह, परिवार तथा नातेदारी की चर्चा करेगें तथा निम्नलिखित अध्याय में सरकार, धर्म, अर्थव्यवस्था तथा शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित किया जायेगा।

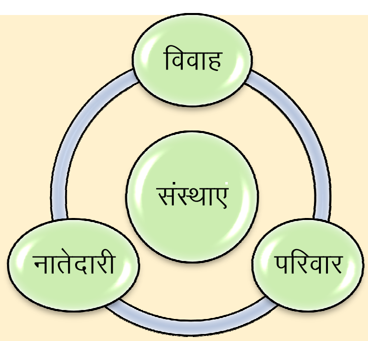

विवाह

विवाह एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था हैं तथा विश्व में प्रत्येक जगह विद्यमान हैं। विवाह मानव समाज की मूलभूत संस्था हैं। विवाह के माध्यम से दो विपरीत लिंगीय व्यक्तियों

को पति एवं पत्नी के रूप में एक साथ रहने के लिये सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती हैं। विवाह सामाजिक संरचना का केन्द्र बन जाता हैं जिसमें व्यक्ति नातेदारी के माध्यम से एक दूसरे से सम्बन्धित हो जाते हैं।

विवाह महिलाओं एवं पुरूषों की शारीरिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए निर्मित एक संस्था हैं। यह पुरूष एवं महिला को परिवार निर्मित करने हेतु एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करने की अनुमति देता हैं। विवाह का प्राथमिक उद्देश्य स्थायी सम्बन्धों के द्वारा यौनिक क्रियाओं को नियन्त्रित करना हैं। सरल शब्दों में, विवाह को एक ऐसी संस्था के रूप में परिभाषित किया जा सकता हैं जो पुरूषों एवं महिलाओं को परिवारिक जीवन में प्रवेश करने, बच्चों को जन्म देने तथा पति, पत्नी तथा बच्चों से सम्बन्धित विभिन्न अधिकारों और दायित्वों का निर्वाह करने की अनुमति प्रदान करता हैं। समाज एक पुरूष एवं महिला के मध्य वैवाहिक सम्बन्धों को एक धार्मिक संस्कार के रूप में अपनी अनुमति प्रदान करता हैं। विवाहित दंपती एक दूसरे के प्रति तथा सामान्य तौर पर समाज के प्रति अनेक दायित्वों का निर्वाह करते हैं। विवाह एक महत्वपूर्ण आर्थिक उद्देश्य को भी पूरा करता हैं यह उत्तराधिकार से सम्बद्ध सम्पत्ति अधिकार को परिभाषित करता है। इस प्रकार, हम समझ सकते हैं कि विवाह एक पुरूष और महिला के बीच बहु–आयामी सम्बन्धों को व्यक्त करता हैं।

विवाह संस्था की उत्पत्ति के कारण

विवाह संस्था के प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं:

अ. जैवकीय आवश्यकता: विवाह एक मूलभूत संस्था मानी जाती हैं जो कि विषम लिंगीय सम्बन्धों को वैद्यता प्रदान करती हैं। यह दो विपरीत लैंगिक प्रस्थिति वाले व्यक्तियों के मध्य एक सामाजिक समझौता हैं जिसके आधार पर वे अपनी शारीरिक एवं जैविकीय आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

ब. मनौवैज्ञानिक आवश्यकता: विवाह केवल जैवकीय आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता बल्कि बच्चों का होना मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को भी पूरा करता हैं। बच्चों

को जन्म देना और उनका पालन पोषण करना विवाह का एक महत्वपूर्ण अवयव हैं जिसके लिए सापेक्षिक रूप से एक स्थाई सम्बन्ध तथा विवाह की आवश्यकता होती हैं।

स. प्रजनन कार्य: बच्चों को जन्म देना विवाह का एक और अभिन्न पक्ष हैं।

द. पालन पोषण की आवश्यकता: बच्चों को जन्म देने के साथ विवाह बच्चों के पालन पोषण और उनके सामाजीकरण में भी संलग्न होता हैं।

गतिविधि– 7.1

1. आप अपने परिवार/नातेदार/पडोसियों के विवाह समारोह में सम्मिलित हुये होंगे। विवाह से जुड़े हुये संस्कारों और प्रथाओं की एक सूची बनाईये।
2. कक्षा में इनमे से कुछ संस्कारों पर चर्चा कीजिए।

विवाह के स्वरूप

विश्व के विभिन्न भागों में विवाह के दो स्वरूप प्रचलित हैं: एकविवाह एवं बहुविवाह

विवाह के स्वरूप

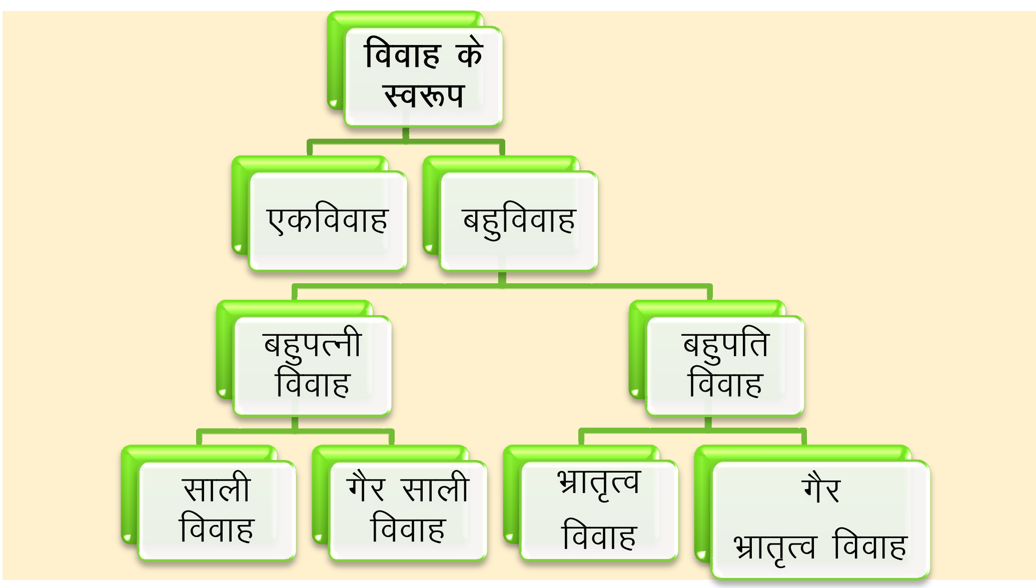

एकविवाह से अभिप्राय एक पति एवं पत्नी के मध्य सम्बन्धों से हैं। विश्व के अधिकांश विवाह एकविवाह हैं। ऐसे समाज में जहां एकविवाह प्रचलित हैं वहां कोई पुरूष या स्त्री

अपने साथी की मृत्यु के पश्चात् अथवा विवाह के समाप्त होने या विवाह विच्छेद होने के बाद ही पुनः विवाह कर सकते हैं। विश्व के अधिकांश समाज स्वभाव से एक विवाही होते हैं।

बहुविवाह से अभिप्राय ऐसे विवाह से है जहां एक स्त्री के एक समय में एक से अधिक पति होते हैं अथवा एक पुरूष की एक से अधिक पत्नियां होती हैं। बहुविवाह दो प्रकार का होता हैं अर्थात् बहुपत्नी विवाह और बहुपति विवाह।

अ. बहुपत्नी विवाह : विवाह का वह ऐसा स्वरूप हैं जिसमें एक समय में एक पुरूष एक से अधिक स्त्रियों से विवाह करता हैं। मुस्लिम समुदाय एक ऐसा समूह हैं जिनके धर्म के अन्तर्गत बहुपत्नी विवाह को स्वीकृति प्राप्त हैं। हांलाकि, बहुपत्नी विवाह दो प्रकार का होता हैं अर्थात साली विवाह एवं गैर–साली विवाह। साली बहुपत्नी विवाह के अन्तर्गत एक पुरूष एक से अधिक स्त्रियों से विवाह करता है जो बहनों के रूप में सम्बंधित होती हैं जबकि गैर–साली बहुपत्नी विवाह में विभिन्न पत्नियां आपस में सम्बन्धित नहीं होती।

ब. बहुपति विवाह :

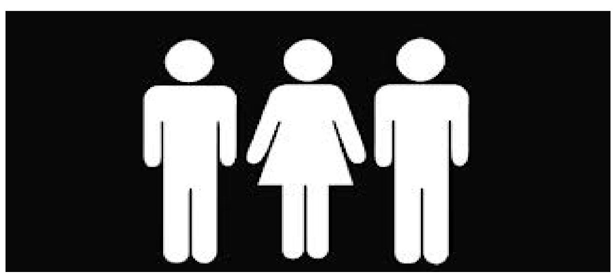

बहुपति विवाह में एक स्त्री एक से अधिक पुरूषों से विवाह करती हैं। बहुपति विवाह के भी दो स्वरूप हैं, पहला भ्रातृत्व बहुपति विवाह व दूसरा गैर–भ्रातृत्व बहुपति विवाह। भ्रातृत्व बहुपति विवाह में स्त्री सभी भाईयों की पत्नी मानी जाती हैं जबकि गैर–भ्रातृत्व बहुपति विवाह में पत्नी के सभी पति आपस में भाई नहीं होते। अक्सर, कुछ कृषक समाजों में कृषि भूमि के विभाजन से बचने के लिए भ्रातृत्व बहुपति विवाह का प्रचलन

देखा जाता था। दूसरी तरफ, जनजातीय समाजों में अत्यधिक उच्च वधु मूल्य या कन्या मूल्य के कारण गैर–भ्रातृत्व बहुपति विवाह देखा जाता हैं।

जीवन साथी चुनने के नियम

समाज अपने सदस्यों के वैवाहिक सम्बन्धों को नियन्त्रित करने के लिये कुछ निश्चित नियम तैयार करता हैं जिन्हें जीवन साथी चुनने के नियम कहते हैं। प्रत्येक समाज जीवन साथी चुनने के अपने पृथक नियम तैयार करता हैं। उदाहरण के लिये एक समय था जब भारत में विवाह के लिये कोई निश्चित आयु सीमा नहीं थी। वास्तव में, युवा अवस्था से पहले ही लडकी के विवाह करने का नियम प्रचलित था। परन्तु अब विवाह के लिये लडकी की आयु 18 वर्ष और लडके की आयु 21 वर्ष निर्धारित है। इसके साथ ही एक समाज के सदस्यों को विवाह की स्वीकृति नहीं दी जाती जिस आयु पर वे चाहते हैं। समाज में विवाह के कुछ निषेधात्मक और निर्धारित नियम हैं जिनके आधार पर जीवन साथी चुनने का प्रावधान हैं।

निषेधात्मक नियम

निषेधात्मक नियम वे हैं जो जीवन साथी चुनने के तरीको पर प्रतिबन्ध रखते हैं। ये नियम महिला और पुरूष के विवाह सम्बन्धों में प्रवेश करने के लिए कुछ निश्चित श्रेणियों में से साथी चुनने को बाध्य करते हैं जो उनके धार्मिक नियमों या स्थानीय प्रथाओं के अनुरूप होते हैं।

अ. निकटाभिगमन निषेधः दो व्यक्तियों के मध्य जैवीकीय या वैवाहिक सम्बन्धों पर लागू होता है जो एक दूसरे से रक्त सम्बन्धों से अथवा एक ही परिवार से सम्बन्धित होते हैं। यह सभी मानव समाजों में प्रतिबन्धित हैं, यद्यपि विभिन्न संस्कृतियों में इस संदर्भ में भिन्न नियम हो सकते हैं, कहीं रक्त सम्बंधियों में यौन–सम्बंध बनाने की स्वतन्त्रता हो सकती है और कहीं नहीं हो सकती। प्रत्येक समाज में पिता और पुत्री, माता और पुत्र, भाई और बहिन के मध्य वैवाहिक सम्बन्ध प्रतिबन्धित होते हैं। इन प्रतिबन्धों को निकटाभिगमन निषेध की संज्ञा देते हैं निकटाभिगमन निषेध के नियम सार्वभौमिक सिद्धान्तों पर आधारित हैं। हांलाकि कुछ समाजों में निकट सम्बन्धियों में विवाह को स्वीकृति प्राप्त होती हैं। उदाहरण के लिए, अनेक संस्कृतियों में कुछ सहोदरों के मध्य विवाह को ना केवल स्वीकृति प्राप्त है अपितु प्राथमिकता दी जाती हैं।

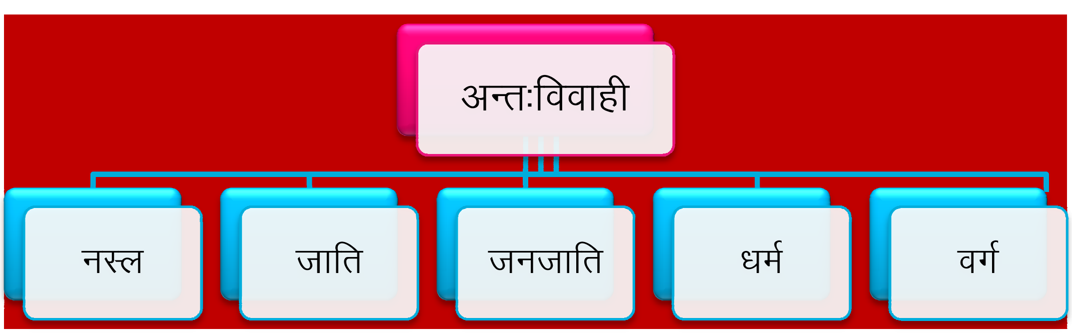

ब. अन्तःविवाह एक प्रथा है जो अपने ही सामाजिक समूह के भीतर विवाह को स्वीकार करती हैं। सामाजिक समूह अपनी ही जनजाति, जाति या धार्मिक समूह का हो सकता हैं। एक धर्म के व्यक्ति का दूसरे धर्म के व्यक्ति से विवाह करना स्वीकृत नहीं हैं। जनजातियां भी अन्तःविवाही सामाजिक इकाईया हैं क्योंकि अपनी जनजाति से बाहर विवाह करने की अनुमति नहीं होती। हिन्दुओं में जाति भी अन्तः विवाही हैं। मुस्लिम समुदाय में दो अन्तःविवाही समूह हैं अर्थात 'शिया' एवं 'सुन्नी'। ईसाईयों में 'रोमन कैथोलिक' तथा 'प्रोटेस्टेन्ट' जैसे अन्तःविवाही समूह हैं।

स. बहिर्विवाह एक प्रथा हैं जिसमें एक व्यक्ति एक विशिष्ट समूह जिसका वह सदस्य हैं, से बाहर विवाह करता हैं, जैसे एक नातेदार समूह, एक परिवार, एक गोत्र, एक गॉव समूह, या कोई सामाजिक इकाई जिससे वह सम्बन्धित होता हैं।

हिन्दू विवाह में गोत्र तथा सपिण्ड बहिर्विवाही समूह हैं। गोत्र से अभिप्राय परिवारों के ऐसे समूह से हैं जो अपनी उत्पत्ति एक सामान्य काल्पनिक पूर्वज से मानते हैं। सपिण्ड से अभिप्राय पिता की तरफ की सात पीढ़ी तथा माता की तरफ की पांच पीढ़ी से सम्बन्धित लोगो से हैं। एक व्यक्ति को अपने ही गोत्र में विवाह करने की अनुमति प्राप्त नही हैं। इसी तरह जो लोग समान पिण्ड या सपिण्ड (समान पितृत्व) से सम्बन्धित होते हैं अन्तःविवाह नहीं कर सकते। भारत के कुछ राज्यों में विशेष रूप से पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा तथा राजस्थान में गोत्र के नियम (विस्तृत नातेदारी समूह) तथा गांव बहिर्विवाह के नियम प्रचलित होते हैं।

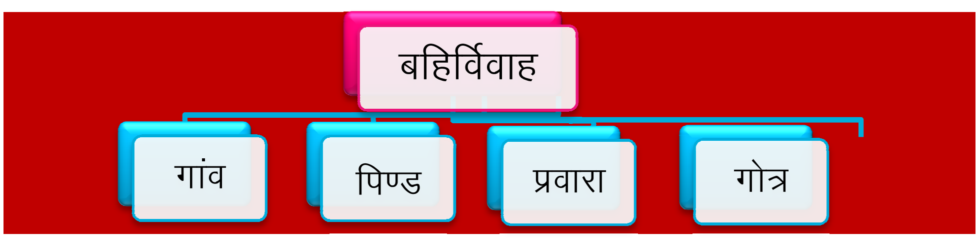

व्यक्ति द्वारा गोत्र तथा गांव बहिर्विवाह के नियमों का उल्लघंन करने पर जाति पंचायत के क्रोध का सामना करना पडता हैं अर्थात् जाति पंचायत उन्हें दण्डित करती हैं। गांव पंचायतो का समुच्चय अर्थात अनेक गांव की पंचायते जिन्हें खाप पंचायत की संज्ञा देते हैं, समान गांव या समान गोत्र में विवाह करने का विरोध करते हैं (उनका विरोध गांवों में रहने वाले किसी एक गोत्र समूह से हो सकता है)। इस तरह के प्रतिबन्ध का प्रमुख कारण समान गांव के सदस्यों में विवाह की उपेक्षा करना था चूंकि उन्हे भाई–बहिन या फिर एक सामान्य पूर्वज की सन्तान माना जाता हैं।

बॉक्स नं – 1

अनुलोम एक सामाजिक प्रथा हैं जिसमें एक उच्च जाति का लडका एक निम्न जाति की लडकी से विवाह कर सकता हैं।

प्रतिलोम एक ऐसा विवाह है जिसमें निम्न जाति का लडका उच्च जाति की लडकी से विवाह करता हैं। ऐसे विवाह परम्परागत भारतीय समाज में स्वीकृत नहीं थे।

निर्धारित तथा अधिमान्य नियम

विवाह से सम्बन्धित कुछ ऐसे नियम हैं जो कुछ सम्बन्धों को अन्यों की तुलना में प्राथमिकता देते हैं।

अ. **सलिंग सहोदर विवाह** एक ऐसा विवाह जो दो बहिनों या दो भाईयों (चचेरे–मौसेरे भाई–बहिनों के मध्य) की सन्तानों के मध्य होता हैं। इस प्रकार के विवाह मुस्लिम समुदाय में अधिक प्रचलित होते हैं।

ब. **विलिंग सहोदर विवाह** एक ऐसा विवाह जिसमें मामा की बेटी (मॉ के भाई की बेटी) अथवा बुआ की बेटी (पिता की बहन की बेटी) से विवाह किया जाता हैं। यह विवाह भारत के अनेक भागों सहित मध्य प्रदेश की गोंड जनजाति तथा झारखंण्ड की औरांन तथा खरिया जनजाति में प्रचलित था। विशेष रूप से मामा की बेटी से विवाह करना दक्षिण भारतीयों हिन्दूओं में अधिक प्रचलित हैं।

स. **लेवीरेट/देवर विवाह** एक ऐसी प्रथा हैं जिसमें एक विधवा अपने मृत पति के भाई से विवाह करती हैं। आम तौर पर, पति का छोटे भाई विधवा से विवाह करता हैं। यह विवाह पंजाब के कुछ हिस्सों में तथा नीलगिरी पहाड़ियों की टोडा जनजातियों में प्रचलित हैं।

द. **सोरोरेट/साली विवाह** एक ऐसी प्रथा हैं जिसमें एक विधुर अपनी मृत पत्नी की छोटी बहन से विवाह करता हैं। यह विवाह भारत में गोंड जनजाति तथा पाकिस्तान की पखतुन जनजाति में प्रचलित हैं।

हिन्दू समाज में विवाह को एक महत्वपूर्ण धार्मिक कर्तव्य माना जाता हैं। प्रत्येक हिन्दू को धार्मिक कर्तव्य जैसे विवाह करने के धर्म का निर्वाह करना चाहिए। दूसरी तरफ मुस्लिम समुदाय में विवाह एक समझौता होता हैं। इसे निकाह कहते हैं। मुस्लिम विवाह के समझौते को पति की इच्छा पर कभी भी समाप्त किया जा सकता हैं।

गतिविधि– 7.2

1. क्या आपने कभी वैवाहिक विज्ञापन देखे हैं? उनमें किन बातों का उल्लेख किया जाता हैं ?
2. क्या आप सोचते हैं कि जीवन साथी चुनने के नियम आज के समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ? अपने निष्कर्षो पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

विवाह संस्था में परिवर्तन

औद्योगिकीकरण, नगरीयकरण, तथा सूचना तकनीक के नये युग ने विवाह की परम्परागत संस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किये हैं। मैरिज ब्यूरों (विवाह केन्द्र), वैवाहिक विज्ञापन तथा अनेक वेबसाईट सेवा प्रदाता के रूप में विभिन्न एजेंसी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। विवाह समारोह तथा कार्यक्रम इवेन्ट मैनेजर (कार्यक्रम प्रबंधक) को सौप दिये गये हैं। यहां तक कि विवाह कार्यक्रमों पर खर्च किया जाने वाला धन भी दुर्भाग्य से सामाजिक प्रतिष्ठा का विषय बन गया हैं। इसलिए पूर्व समय के विवाह संस्कार व्यावसायिक गतिविधियों के परिणामस्वरूप जटिल हो गये हैं।

विवाह के स्वरूपों में भी परिवर्तन आया हैं अर्थात बहुविवाह की अपेक्षा एकविवाह का प्रचलन बढा हैं। आधुनिक युग में एकविवाह, विवाह का सबसे प्रचलित स्वरूप हैं। अन्तरजातीय विवाह अब सामान्य प्रघटना बनते जा रहे हैं तथा परिवार और समाज द्वारा स्वीकृति प्राप्त कर रहे हैं। विवाह प्रेम तथा पारस्परिक आकर्षण पर आधारित हैं। लडकियों को आज अपना जीवन साथी चुनने की स्वतन्त्रता प्राप्त है क्योंकि नये विचारों ने उन्हे चुनने की स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान किया हैं। कार्यशील महिलाओं ने विवाह के संदर्भ में अपने चुनने के अधिकार का प्रयोग करना शुरू कर दिया हैं। वैधानिक प्रतिबन्धों (बाल विवाह निरोधक अधिनियम 1929) के अन्तर्गत लडकी की विवाह की उम्र 18 वर्ष से कम तथा लडके की 21 वर्ष से कम को अवैध माना गया हैं। जीवन साथी के चुनाव में माता–पिता की भूमिका, विशेष रूप से, नगरीय क्षेत्रों में कम होती जा रही हैं। जाति, धर्म तथा क्षेत्रीय सीमाओं के बाहर भी अब जीवन साथी चुनने का प्रचलन बढा हैं।

पश्चिमी देशों, आधुनिक शिक्षा तथा औद्योगिकीकरण के प्रभाव ने भारत में व्यक्तिवादी विचारधारा को उत्पन्न किया हैं। महिला सशक्तीकरण तथा महिला की घर से बाहर काम करने की भूमिका ने विवाह संस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किये हैं। हांलाकि विवाह–विच्छेद की दर, वैवाहिक सम्बन्धों में असफलता तथा अस्थिरता में भी वृद्धि हुई हैं। इसके बावजूद विवाह संस्था की प्रासंगिकता या महत्व में कमी नहीं आई हैं।

परिवार

एक सार्वभौमिक संस्था के रूप में परिवार मानव समाज में एक प्रमुख आधारभूत समूह माना जाता हैं। विवाह संस्था परिवार के निर्माण का आधार हैं। परिवार एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है तथा इस विश्व में प्रत्येक व्यक्ति एक परिवार या दूसरे का हिस्सा हैं। हम में से अधिकांश एक परिवार में जन्म लेते हैं तथा बड़े होते हैं। परिवार वैवाहिक सम्बन्धों या रक्त सम्बन्धों के माध्यम से सम्बंधित व्यक्तियों से बना हैं। एक छोटा परिवार पति–पत्नी और उनके बच्चों या बच्चों के बिना निर्मित होता हैं। व्यापक अर्थ में इसका अभिप्राय अनेक पीढियों के सभी सम्बन्धियों से हैं जो एक दूसरे से रक्त, विवाह या गोद लेने के आधार पर जुड़े होते हैं। परिवार के सदस्य प्रत्येक क्षेत्र में एक दूसरे को सहयोग और समर्थन प्रदान करते हैं।

परिवार का महत्व

परिवार का अध्ययन इसलिये महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह पुरूषों और स्त्रियों तथा बच्चों को एक स्थाई सम्बन्धों में बांधकर मानव समाज के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संस्कृति का हस्तान्तरण परिवारों के भीतर होता है। सामाजिक प्रतिमानों, प्रथाओं तथा मूल्यों के विषय में सांस्कृतिक समझ तथा ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होते हैं। एक परिवार जिसमें बच्चा जन्म लेता है उसे 'जन्म का परिवार' कहते हैं। दूसरे शब्दों में, ऐसे परिवार को समरक्त परिवार कहते हैं जिसके सदस्य रक्त सम्बन्धों के आधार पर एक दूसरे से जुडे होते हैं जैसे भाई एवं बहिन तथा पिता और पुत्र इत्यादि। वह परिवार जो विवाह के बाद निर्मित होता है उसे 'प्रजनन का परिवार' या दापंत्यमूलक परिवार कहते हैं जो ऐसे व्यस्क सदस्यों से निर्मित होता हैं जिनके बीच यौनिक सम्बन्ध होते हैं।

परिवार की विशेषताएं

1. **सार्वभौमिकताः** परिवार एक सार्वभौमिक सामाजिक इकाई हैं। ऐसा कोई समाज नहीं है जहां परिवार की संस्था का कोई एक स्वरूप या कोई दूसरा ना पाया जाये। यह ऐसे अनेक कार्यों का निर्वाह करता हैं जो व्यक्ति और समाज के लिए आवश्यक हैं। परिवार जैविकीय, आर्थिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक कार्यों को प्रभावी ढंग से तथा एक साथ पूरा करता हैं।

2. **भावनात्मक आधारः** पारिवारिक सम्बन्ध मानव भावनाओं तथा भावुकता पर आधारित हैं जैसे प्रेम, लगाव, सहानुभूति, सहयोग इत्यादि। परिवार के सदस्य एक दूसरे को भावनात्मक रूप से सहयोग करते हैं। वे परिवार के दूसरे सदस्यों को प्रेम, देखभाल तथा संरक्षण प्रदान करते हैं तथा उनेक कल्याण के लिये त्याग करने को तैयार रहते हैं।

3. **लघु आकारः** परिवार का आकार सामान्यतः छोटा होता हैं क्योंकि यह एक जैविकीय इकाई हैं जिसमें उन व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता हैं जो इसमें जन्म लेते हैं तथा रक्त सम्बन्धों या दत्तक सम्बन्धों द्वारा एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुडे होते हैं। इस प्रकार एक परिवार में पिता, माता और उनकी अविवाहित सन्ताने सम्मिलित होती हैं। यहां एकल अभिभावक परिवार भी पाये जाते है। सरल शब्दो में, परिवार के भीतर या तो विवाह सम्बन्ध या रक्त सम्बन्ध के आधार पर सदस्यता प्राप्त होती हैं।

4. **केन्द्रीय स्थितिः** परिवार सभी सामाजिक समूहों का केन्द्र होता हैं। समाज की सम्पूर्ण संरचना परिवार के चारों तरफ निर्मित होती हैं। यह समाज में व्यक्तियों के लिये सभी प्राथमिक कार्यों को पूरा करता हैं।

5. **सामाजिक अधिनियमः** परिवार के सदस्यों को सामाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से सामाजिक प्रतिमानों तथा प्रथाओं का पालन करने के लिये प्रशिक्षित किया जाता हैं। परिवार को व्यक्ति तथा समाज के मध्य सम्बन्ध जोड़ने वाला माना जाता हैं। परिवार अपने सदस्यों को सामाजिक प्रतिमान तथा मूल्य सीखा कर उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाता हैं।
6. **स्थाई तथा अस्थाई दोनोः** एक सार्वभौमिक सामाजिक संस्था के रूप में परिवार स्वभाव से स्थाई होती हैं जब तक पति और पत्नी एक साथ रहते हैं परन्तु यह एक अस्थाई समूह भी हैं। उनकी मृत्यु या तलाक के बाद परिवार के पुत्र और